SHRI GHULAM NABI AZAD: Sir, I would request that all meetings scheduled for today should be cancelled.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I can only request. I would request the Chairmen of all Committees, at least for today, to cancel meetings since this debate being a very, very serious and important issue. Let us take up the discussion seriously and let the Members participate in the discussion. This is my request to the Chairmen.

SHRI DIGVIJAYA SINGH (Madhya Pradesh): Sir, you kindly talk to the hon. Chairman.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I have already done it.

SHRI DIGVIJAYA SINGH: Sir, ordinarily, all these meetings should be held when Parliament is not in session. But, if there is a great urgency, then the Standing Committee or Select Committee can meet after the Parliament hours.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Let me tell you. Yesterday, the matter was raised here. I had already conveyed to the hon. Chairman the feelings of the House, but the hitch is, as I said yesterday, there is an earlier direction that meeting can be held.

SHRI DIGVIJAYA SINGH: That can be changed.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I have already requested the hon. Chairman to change it also. Yesterday I made a request that meetings, as far as possible, should not be held. Now, I am requesting all the Chairmen not to have meetings today. Let us have this very important discussion and let all Members participate in this. I congratulate all the hon. Members for speaking very seriously, rising above the party politics.

Now, Mr. Laway.

DISCUSSION ON THE PREVAILING SITUATION IN KASHMIR VALLEY - *Contd.*

श्री नज़ीर अहमद लवाय (जम्मू और कश्मीर)ः मोहतरम डिप्टी चेयरमैन साहब, मैं आपका बहुत शुक्रगुज़ार हूं कि आपने इस विषय पर मुझे बोलने का समय दिया। जम्मू और कश्मीर का मसला ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please listen to him. He is from Kashmir. Everybody should listen to him.

श्री नज़ीर अहमद लवायः कश्मीर के हालात खराब हुए हैं। जम्मू और कश्मीर तीन रीजन्स पर मुश्तमिल है। एक जम्मू है, दूसरा लद्दाख है और तीसरा कश्मीर है। कश्मीर के रीजन्स में जो हालात खराब हुए, उन हालात के पीछे कौन जिम्मेदार है, यह सब लोग जानते हैं। इस पर कहने की जरूरत नहीं है, लेकिन इस मसले का समाधान क्या है? पिछले 25 सालों से जो कश्मीर के लोग हैं, जो कश्मीर की बहनें हैं, कश्मीर के बुजुर्ग हैं और जो हमारे नौजवान हैं उनमें हमारी लाखों बहनें विधवा हुई हैं, हमारे लाखों बच्चे यतीम हुए हैं, जो हमारे नौजवान लड़के लाखों में हैं और जिनके घर उजड़ गए हैं, इनका जिम्मेदार कौन है? यहां इस सदन में जो हमारे अज़ीम रहनुमा हमारी स्टेट से हैं और जिनकी मैं बहुत इज्जत करता हूं, आज मुझे उनके सामने बोलने का मौका मिला है। डा. कर्ण सिंह जी हमारी स्टेट के राजा रहे हैं। उनके दौर के बाद, 1947 के बाद जब कश्मीर इस देश के साथ मिला, तो सन् 1987 तक वहां पर कोई प्रॉब्लम क्यों नहीं आई? 1987 तक कश्मीर के लोग, कश्मीर का बच्चा, कश्मीर का नौजवान इस देश का हिस्सा था, आज वह इस देश का हिस्सा क्यों नहीं है? उसको क्यों दूर फेंका जा रहा है? अब वहां लोग क्यों मर रहे हैं? वहां की बहनें क्यों विधवा हो रही हैं? इस चीज़ की तरफ ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है।

डिप्टी चेयरमैन साहब, हमें कश्मीर का मसला उस वक्त क्यों याद आता है, जब कश्मीर जल रहा होता है? उससे पहले या उसके बाद हम क्यों भूल जाते हैं? बंदूक से मसले हल नहीं होंगे, किसी भी कौम में, किसी भी मुल्क में। बंदूक से आदमी को मारा जा सकता है, बंदूक से इंसानियत को दफन किया जाता है, लेकिन किसी की भूख नहीं मिट जाती है। कश्मीर का जो मसला हम पिछले 25 सालों से झेल रहे हैं, मैं विक्टिम हूं, मैं आज इस सदन में खड़ा हूं और मैं जानता हूं कि इस बंदूक का कहर क्या है? लेकिन यह देश हमारे मुट्ठी भर लोगों के पीछे है। इस देश के लोगों को देखना चाहिए कि जम्मू और कश्मीर का क्या मसला है, जो मुट्ठी भर लोग बंदूक लेकर उठ आए हैं। आप कह रहे हैं कि किसी लड़के ने बंदूक उठाई, वह मर गया या कुछ हो गया, लेकिन उसने 98 per cent नम्बर लिए थे। वह डॉक्टर बनना चाहता था, वह इंजीनियर बनना चाहता था, उसको उस पर क्यों नहीं काम करने दिया गया? हम इस मसले को जितनी जल्दी हल नहीं करेंगे, उतना ही हमारे लिए मुश्किल होगा।

कश्मीर में पिछले एक महीने से, 33 days से लोग तशद्दुद के शिकार हैं, जिसमें 55 से ज्यादा लोग मर गए हैं, ये वे लोग जानते हैं, जिनके बच्चे मारे गए हैं, यह वे लोग जानते हैं, जिनकी बहनों की आंखें चली गई हैं। हमारी एक दस साल की बेटी इन्शा आज AIIMS में जिंदगी और मौत के बीच झूल रही है। हमारी एक बेटी है और एक पांच साल का बेटा है, हम लोग जानते हैं। काश, इस सदन में यह बात होती कि एक डेलीगेशन AIIMS में जाकर उस बच्ची को देखेगा, जो इस देश की बच्ची है। एक दस साल की बच्ची जिंदगी और मौत के बीच झूल रही है। मुझे लगता है कि शायद किसी में यह हिम्मत नहीं है। कोई कश्मीरी आदमी बंदूक नहीं उठाना चाहता। कश्मीरी लोग बंदूक के साथ नहीं हैं, कश्मीरी लोग इस देश के साथ हैं। हमारे ऑनरेबल मेम्बर ऑफ पार्लियामेंट, हमारे लीडर जम्मू और कश्मीर के witness हैं। जब देश ने इसके साथ इल्हाक़ किया, हमारे इस मुल्क के साथ, शायद उन लोगों को यही आशा थी कि हम देश के साथ इल्हाक़ करेंगे, तो हमारी गुरबत खत्म हो जाएगी। हमारी स्टेट गरीब है।

[श्री नज़ीर अहमद लवाय]

3.00 P.M.

हमारा कोई लेना-देना नहीं है, लेकिन पता नहीं कौन सी नजर लग गई, इसमें कहां तक जाना है? हम कहते हैं कि हुर्रियत से बात मत कीजिए। हम कहते हैं कि उन अलगाववादियों से बात मत कीजिए। वह अलगाववाद और हुर्रियत किसने बनाया? इसके लिए कौन जिम्मेदार है? आज पाकिस्तान में जो सलाउद्दीन बैठा है, जो अलग से कश्मीर में लड़ रहा था।

गिलानी जो Assembly का election लड़ रहा था, ऐसे ही जैसे हम स्टेट को represent करते हैं, ऐसा ही वहां था, वह आज क्यों हुर्रियत में है? वह आज क्यों अलगाव में है? वह हमारी ही तरह है, हम लोग पीछे जा रहे हैं। मुझे दुख होता है, यहां ऑनरेबल एम.पी. साहब ने महजूर की बात कही। महजूर एक अज़ीम इंसान है, जिसने कश्मीर को कश्मीर कहा। उसके शेर को, जब श्री अटल बिहारी वाजपेयी जम्मू कश्मीर के लाल चौक पर आए, हजारों लोग उनके सामने थे, श्री अटल बिहारी वाजपेयी, देश के प्रधान मंत्री, उन्होंने महजूर का शेर कश्मीरी में कहा, "वलोहो बाग़वानो बहारख शान पैदा कर, फलन गुल गतकरन बुलबुल तिथी समान पैदा कर।" जो बात ऑनरेबल एम.पी. साहब ने कही, उससे एक उम्मीद बढ़ी कि आप लोग चाहें तो कश्मीर को सोना बना दें, तो आप सोना बना सकते हैं। जब तक आप नहीं चाहेंगे, तब तक उग्रवाद खड़ा है। यह आपके हाथ में है। हमारी आवाज कमजोर है। हम जम्मू, कश्मीर, लद्दाख के तीन लोग हैं। आप हमारी आवाज को ताकत दीजिए, हम कश्मीरी लोगों तो ताकत दीजिए, फिर आप देख लीजिए कि कश्मीरी में कितनी हिम्मत है? कश्मीरी intellectual लोग हैं, कश्मीरी पढ़े-लिखे लोग हैं, कश्मीरी पढ़ना चाहते हैं। हमारी बेटी इंशा AIIMS में है, वह किताब लेकर पढ़ रही थी, उसे पेलेट गन का फायर लगा।

साथियों, आपको कश्मीर के दिल के दर्द को समझना चाहिए। मैं उसका victims हूं। मेरी बहन के छोटे-छोटे बच्चे हैं। मेरा बहनोई मारा गया, मेरी बहन पागल हो गयी और तड़प-तड़प कर मर गयी। हम जानते हैं बंदूक का दर्द क्या है। यह उसी को पता चलता है, जब उसके बेटे की लाश कश्मीर से बाहर आती है, कश्मीर से जब लाश उसकी बाहों में आती है, उसकी लाश हमारे सामने आती है। उसको पता चलता है कि कश्मीर में क्या हो रहा है। लिहाज़ा मेरे मेरी आप तमाम साथियों से अपील है, तमाम पार्लियामेंटेरियंस से अपील है कि यह एक मामूली मामला है। यह बहुत बड़ा मामला नहीं है। देश के दुश्मन के साथ लड़ना आपका काम है। हम जम्मू-कश्मीर के बिल्कुल कमजोर लोग हैं। जैसा कि हमारे लीडर ऑफ द अपोजिशन ने कहा, जम्मू कश्मीर सरकार का मामला नहीं है, लॉ एंड ऑर्डर का मामला नहीं है। आप सब बखूबी जानते हैं। अगर हम blame game करेंगे तो उससे कुछ फायदा नहीं होगा। हमें देखना है कि कश्मीरी लोगों के लिए हम क्या कर सकते हैं? जम्मू कश्मीर में आज बी.जे.पी. और पी.डी.पी. की सरकार है मुफ्ती साहब कश्मीर के मसले को लेकर बड़े गंभीर थे। उन्होंने बहुत संजीदगी से काम किया, ताकि जम्मू-कश्मीर के मसले को हल किया जा सके। आज वक्त ऐसा है कि हम पीछे की गलतियों को नहीं दोहराएं। हमें उससे कोई फायदा नहीं है। हम जम्मू-कश्मीर का पूरा हल

ढूंढना चाहते हैं। जनाब डिप्टी चेयरमैन साहब, हमने अफजल गुरु की फेमिली को गलत समझा है। हम ने कोशिश की, मैं यहां पर बताना चाहता हूं कि हमारी पार्टी इस चीज में भरोसा रखती है कि, Justice should not only be done, but it should also seem to have been done. मैं यहां पर यह जरूर कहना चाहता हूं कि जिस होम मिनिस्टर ने अफ़ज़ल गुरु को prosecute किया, आज अचानक उनके मन में यह राय आई है कि अफ़ज़ल गुरु के साथ इंसाफ नहीं हुआ है। हमारे एक ऑनरेबल मेंबर जो उस समय इलैक्शन में वोट मांग रहे थे, वह भी यह कह गए कि अफ़ज़ल गुरु के साथ इंसाफ नहीं हुआ है। वह तो उस वक्त कैबिनेट मिनिस्टर थे, लेकिन हमें anti-national करार दिया जाता है। हमने जम्मू-कश्मीर के साथ हमेशा दोहरा रुख अपनाया है, चाहे वह सियासी मैदान में हो या टी.वी. चैनल की डिबेट्स या सोशल मीडिया में हो। जम्मू-कश्मीर के लोगों को मुल्क का दुश्मन करार दिया जाता है। अगर हम इतिहास की तरफ देखें तो पाएंगे कि जम्मू कश्मीर एक ऐसा स्टेट है, जिस ने two-nation theory को रद्द कर दिया था और अज़ीम मुल्क के साथ अपना नाता जोड़ा। हमें जम्मू-कश्मीर के अवाम को भरोसा दिलाना चाहिए जिन्होंने 1947 में इस देश के साथ इल्हाक़ किया। डिप्टी चेयरमैन साहब हमारे वजीर-ए-आज़म ने कहा कि जम्मू-कश्मीर का एक-एक बच्चा, कश्मीर का एक-एक बच्चा मेरा बच्चा है। हम उस statement को वेलकम करते हैं, हम वेलकम करते हैं, होम मिनिस्टर के स्टेप को। क्योंकि प्रधान मंत्री ने कहा है, मैं चाहता हूं कि जम्मू-कश्मीर के एक-एक बच्चे के हाथ में laptop होना चाहिए, बुक होनी चाहिए, कलम होनी चाहिए, लेकिन जब ऐसे वाक़ये होते हैं तो हमारे बच्चों को देश की अलग-अलग रियासतों में तशद्दुद का शिकार बनाया जाता है। हमारे लड़के और लड़कियाँ एक डीसेन्ट तालीम हासिल करना चाहते हैं ...(**समय की घंटी**)... लिहाजा मेरी तमाम साथियों से गुज़ारिश है कि किसी भेदभाव के बग़ैर, तमाम साथियों को मिलाकर एक डेलिगेशन बनना चाहिए। वह वैसा डेलिगेशन नहीं बने, जैसा डेलिगेशन हम यहाँ कागज़ों पर रखते हैं। वे चाहते हैं कि Jammu & Kashmir confidence building measures, economic development हो, लेकिन कश्मीर के लोग कागज़ों वाला delegation नहीं चाहते हैं, क्योंकि उनको distrust हो गया है, वे भरोसा नहीं करते हैं कि यहां से कोई बोलने वाला होगा, यहां से कोई बात की जाती है। मैं यहां दिल से यह बात कहता हूं कि कश्मीरियों को हम सब लोगों पर भरोसा नहीं है। वे बोलते हैं, डेलिगेशन आता है, डेलिगेशन जाता है, लेकिन हमारे लिए कुछ काम नहीं करता है। मेरी उनसे गुज़ारिश है कि जो डेलिगेशन जाए, वह पूरे confidence के साथ, पूरे confidence building measures के साथ जाए, economic development के साथ जाए, फिर आप देखिएगा कि कश्मीरियों के दिल में क्या है? देश की तरक्की करने में आपको कश्मीरी नंबर वन दिखाई देंगे। बहुत-बहुत शुक्रिया।

†**جناب نذیر احمد لوانے (جموں و کشمیر)** : محترم ڈپٹی چیئرمین صاحب، میں آپ کا بہت ہی شکرگزار ہوں کہ آپ نے اس مدّعے پر مجھے بولنے کا وقت دیا۔ جموں اور کشمیر کا مسئلہ ...(مداخلت)...

---

†Transliteration in Urdu script.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please listen to him. He is from Kashmir. Everybody should listen to him.

†**جناب نذیر احمد لوائے** : کشمیر کے حالات خراب ہوئے ہیں۔ جموں اور کشمیر تین ریجنس پر مشتمل ہے۔ ایک جموں ہے، دوسرا لدّاخ ہے، اور تیسرا کشمیر ہے۔ کشمیر کے ریجنس میں جو حالات خراب ہوئے ہیں، ان حالات کے پیچھے کون ذمہ دار ہے، یہ سب لوگ جانتے ہیں۔ اس پر کہنے کی ضرورت نہیں ہے۔ لیکن اس مسئلے کا سمادھان کیا ہے؟ پچھلے پچیس سالوں سے جو کشمیر کے لوگ ہیں، جو کشمیر کی بہنیں ہیں، کشمیر کے بزرگ ہیں اور جو ہمارے نوجوان ہیں ان میں ہماری لاکھوں بہنیں ودھوا ہوئی ہیں، ہمارے لاکھوں بچے یتیم ہوئے ہیں، جو ہمارے نوجوان لڑکے لاکھوں میں ہیں اور جن کے گھر اجڑ گئے ہیں، ان کا ذمہ دار کون ہے؟ یہاں اس سدن میں جو ہمارے عظیم رہنما ہماری اسٹیٹ سے ہیں اور جن کی میں بہت عزت کرتا ہوں، آج مجھے ان کے سامنے بولنے کا موقع ملا ہے۔ ڈاکٹر کرن سنگھ جی ہماری اسٹیٹ کے راجہ رہے ہیں۔ ان کے دور کے بعد، 1947 کے بعد جب کشمیر اس دیش کے ساتھ ملا، تو سن 1987 تک وہاں پر کوئی پرابلم کیوں نہیں آئی؟ 1987 تک کشمیر کے لوگ، کشمیر کا بچہ، کشمیر کا نوجوان اس دیش کا حصہ تھا، آج وہ اس دیش کا حصہ کیوں نہیں ہے؟ اس کو کیوں دور پھینکا جا رہا ہے؟ اب وہاں لوگ کیوں مر رہے ہیں؟ وہاں کی بہنیں کیوں ودھوا ہو رہی ہیں؟ اس چیز کی طرف زیادہ دھیان دینے کی ضرورت ہے۔

ڈپٹی چیئرمین صاحب، ہمیں کشمیر کا مسئلہ اس وقت کیوں یاد آتا ہے، جب کشمیر جل رہا ہوتا ہے؟ اس سے پہلے یا اس کے بعد ہم کیوں بھول جاتے ہیں؟ بندوق سے مسئلے حل نہیں ہوں گے، کسی بھی قوم میں، کسی بھی ملک

†Transliteration in Urdu script.

میں۔ بندوق سے آدمی کو مارا جا سکتا ہے، بندوق سے انسانیت کو دفن کیا جاتا ہے، لیکن کسی کی بھوک نہیں مٹ جاتی ہے۔ کشمیر کا جو مسئلہ ہم پچھلے پچیس سالوں سے جھیل رہے ہیں، میں وکٹم ہوں، میں آج اس سدن میں کھڑا ہوں اور میں جانتا ہوں کہ اس بندوق کا کیا قہر ہے؟ لیکن یہ دیش ہمارے مٹھی بھر لوگوں کے پیچھے ہے۔ اس دیش کے لوگوں کو دیکھنا چاہئے کہ جموں اور کشمیر کا کیا مسئلہ ہے، جو مٹھی بھر لوگ بندوق لے کر اٹھ آئے ہیں۔ آپ کہہ رہے ہیں کہ کسی لڑکے نے بندوق اٹھائی، وہ مر گیا یا کچھ ہو گیا، لیکن اس نے 98 فیصد نمبر لئے تھے۔ وہ ڈاکٹر بننا چاہتا تھا، وہ انجینئر بننا چاہتا تھا، اس کو اس پر کیوں نہیں کام کرنے دیا گیا؟ ہم اس مسئلے کو جتنی جلدی حل نہیں کریں گے، اتنا ہی ہمارے لئے مشکل ہوگا۔

کشمیر میں پچھلے ایک مہینے سے، 33 دنوں سے لوگ تشدّد کے شکار ہیں، جس میں 55 سے زیادہ لوگ مر گئے ہیں۔ یہ وہ لوگ جانتے ہیں، جن کے بچے مارے گئے ہیں، یہ وہ لوگ جانتے ہیں، جن کی بہنوں کی آنکھیں چلی گئی ہیں۔ ہماری ایک دس سال کی بیٹی انشا آج ایمس میں زندگی اور موت کے بیچ جھول رہی ہے۔ ہماری ایک بیٹی ہے اور پانچ سال کا بیٹا ہے، ہم لوگ جانتے ہیں۔ کاش، اس سدن میں یہ بات ہوتی کہ ایک ڈیلی گیشن ایمس میں جاکر اس بچی کو دیکھے گا، جو اس دیش کی بچی ہے۔ ایک دس سال کی بچی زندگی اور موت کے بیچ جھول رہی ہے۔ مجھے لگتا ہے کہ شاید کسی میں یہ ہمّت نہیں ہے۔ کوئی کشمیری آدمی بندوق نہیں اٹھانا چاہتا۔ کشمیری لوگ بندوق کے ساتھ نہیں ہے، کشمیری لوگ اس دیش کے ساتھ ہیں۔

[Mr. Deputy Chairman]

جب دیش نے اس کے ساتھہ الحاق کیا، ہمارے اس ملک کے ساتھہ، شاید ان لوگوں کو یہی آشا تھی کہ ہم دیش کے ساتھہ الحاق کریں گے، تو ہماری غربت ختم ہو جائے گی۔ ہماری اسٹیٹ غریب ہے۔ ہمارا کوئی لین دین نہیں ہے، لیکن پتہ نہیں کون سی نظر لگ گئی، اس میں کہاں تک جانا ہے؟ ہم کہتے ہیں کہ حریت سے بات مت کیجئے۔ ہم کہتے ہیں کہ ان الگاؤ وادیوں سے بات مت کیجئے۔ وہ الگاؤ واد اور حریت کس نے بنایا؟ اس کے لئے کون ذمہ دار ہے؟ آج پاکستان میں جو صلاح الدین بیٹھا ہے، جو الگ سے کشمیر میں لڑ رہا تھا۔ گیلانی جو اسمبلی کا الیکشن لڑ رہا تھا، ایسے ہی جیسے ہم اسٹیٹ کو ری۔ پریزینٹ کرتے ہیں، ایسے ہی وہاں تھا، وہ آج کیوں حریت میں ہے؟ وہ آج کیوں الگاؤ میں ہے؟ وہ ہماری ہی طرح ہے، ہم لوگ پیچھے جا رہے ہیں۔ مجھے دکھہ ہوتا ہے، یہاں آنریبل ایم‌پی۔ صاحب نے مہجور کی بات کہی۔ مہجور ایک عظیم انسان ہے، جس نے کشمیر کو کشمیر کہا۔ اس کے شعر کو، جب شری اٹل بہاری واجپئی جموں و کشمیر کے لال چوک پر آئے، ہزاروں لوگ ان کے سامنے تھے، شری اٹل بہاری واجپئی، دیش کے پردھان منتری، انہوں نے مہجور کا شعر کشمیری میں کہا،

'ولوہو باغوانوں بہارک شان پیدا کر

*فلن گل گتھہ کرن بلبل **تتھی سامان** پیدا کر'*

جو بات آنریبل ایم۔ پی۔ صاحب نے کہی، اس سے یہ امید بڑھی کہ آپ لوگ چاہیں تو کشمیر کو سونا بنا دیں، تو آپ سونا بنا سکتے ہیں۔ جب تک آپ نہیں چاہیں گے، تب تک اگرواد کھڑا ہے۔ یہ آپ کے ہاتھہ میں ہے۔ ہماری آواز

کمزور ہے۔ ہم جمو۔ کشمیر، لداخ، کے تین لوگ ہیں۔ آپ ہماری آواز **کو** طاقت دیجئے، ہم کشمیری لوگوں کو طاقت دیجئے، پھر آپ دیکھ لیجئے کہ کشمیری میں کتنی ہمت ہے؟ کشمیری intellectual لوگ ہیں، کشمیری پڑھے لکھے لوگ ہیں، کشمیری پڑھنا چاہتے ہیں۔ ہماری بیٹی انشا ایمس میں ہے، وہ کتاب لے کر پڑھ رہی تھی، اسے پیلیٹ گن کا فائر لگا۔

ساتھیوں، آپ کو کشمیر کے دل کے درد کو سمجھنا چاہئے۔ میں اس کا وکٹم ہوں۔ میری بہن کے چھوٹے چھوٹے بچے ہیں۔ میرا **بھنوئی** مارا گیا، میری بہن پاگل ہو گئی اور تڑپ تڑپ کر مر گئی۔ ہم جانتے ہیں بندوق کا درد کیا ہے۔ وہ اسی کو پتہ چلتا ہے، جب اس کے بیٹے کی لاش کشمیر کے باہر آتی ہے، کشمیر سے جب لاش اس کی بانہوں میں آتی ہے، اس کی لاش ہمارے سامنے آتی ہے۔ اس کو پتہ چلتا ہے کہ کشمیر میں کیا ہو رہا ہے۔

لہذا میری آپ تمام ساتھیوں سے اپیل ہے، تمام پارلیمنٹرینس سے اپیل ہے کہ یہ معمولی معاملہ ہے۔ یہ بہت بڑا معاملہ نہیں ہے۔ دیش کے دشمن کے ساتھ لڑنا آپ کا کام ہے۔ ہم جموں کشمیر کے بالکل کمزور لوگ ہیں۔ جیسا کہ ہمارے لیڈر آف دی اپوزیشن نے کہا، جموں کشمیر سرکار کا معاملہ نہیں ہے، لاء اینڈ آرڈر کا معاملہ نہیں ہے؟ آپ سب بخوبی جانتے ہیں۔ اگر ہم گیم-بلیم کریں گے تو اس سے کچھ فائدہ نہیں ہوگا۔ ہمیں دیکھنا ہے کہ کشمیری لوگوں کے لئے ہم کیا کر سکتے ہیں؟ جموں کشمیر میں آج بی-جے-پی۔ اور پی-ڈی-پی۔ کی سرکار ہے۔ مفتی صاحب کشمیر کے مسئلے کو لیکر بڑے گمبھیر تھے۔ انہوں نے بہت سنجیدگی سے کام کیا، تاکہ جموں و

[Mr. Deputy Chairman]

کشمیر کے مسئلے کو حل کیا جا سکے۔ آج وقت ایسا ہے کہ ہم ماضی کی غلطیوں کو نہیں دوہرائیں۔

جناب ڈپٹی چیئرمین صاحب، ہم نے افضل گرو کی فیملی کو غلط سمجھا ہے۔ ہم نے کوشش کی، میں یہاں پر بتانا چاہتا ہوں کہ ہماری پارٹی اس چیز میں بھروسہ رکھتی ہے، کہ Justice should not only be done, but it should also seem to have been done. میں یہاں پر یہ ضرور کہنا چاہتا ہوں کہ جس ہوم منسٹر نے افضل گرو کو prosecute کیا، آج اچانک ان کے من میں یہ رائے آئی ہے کہ افضل گرو کے ساتھ انصاف نہیں ہوا ہے۔ ہمارے ایک آنریبل ممبر جو اس وقت الیکشن میں ووٹ مانگ رہے تھے، وہ بھی یہ کہہ گئے کہ افضل گرو کے ساتھ انصاف نہیں ہوا ہے۔ وہ تو اس وقت کیبنیٹ منسٹر تھے، لیکن ہمیں اینٹی-نیشنل قرار دیا جاتا ہے۔ ہم نے جموں-کشمیر کے ساتھ ہمیشہ دوہرا رخ اپنایا ہے، چاہے وہ سیاسی میدان ہو یا ٹی-وی- چینل کی ڈبیٹس یا سوشل میڈیا میں ہو۔ آج جموں کشمیر کے لوگوں کو ملک کا دشمن قرار دیا جاتا ہے۔ اگر ہم اتہاس کی طرف دیکھیں گے تو پائیں گے کہ جموں کشمیر ایک ایسا اسٹیٹ ہے، **جس** نے two-nation theory کو ردّ کر دیا تھا اور عظیم ملک کے ساتھ اپنا ناطہ توڑا۔ ہمیں جموں کشمیر **کے** عوام کو بھروسہ دلانا چاہئے جنہوں نے 1947 میں اس دیش کے ساتھ الحاق کیا۔ ڈپٹی چیئرمین صاحب ہمارے وزیر اعظم نے کہا کہ جموں کشمیر کا ایک ایک بچہ، کشمیر کا ایک ایک بچہ میرا بچہ ہے۔ ہم اس **statement** کو ویلکم کرتے ہیں، ہم ویلکم کرتے ہیں، ہوم منسٹر کے اسٹیپ کو۔ کیوں کہ پردھان منتری نے کہا ہے، میں چاہتا ہوں کہ جموں کشمیر کے ایک ایک بچے کے ہاتھ میں لیپ-ٹاپ ہونا چاہئے، بک ہونی چاہئے، قلم ہونی چاہئے، لیکن جب ایسے

واقعے ہوتے ہیں توہمارے بچوں کو دیش کی الگ الگ ریاستوں میں تشدّد کا شکار بنایا جاتا ہے۔ ہمارے لڑکے اور لڑکیاں ایک ڈیسینٹ تعلیم حاصل کرنا چاہتے ہیں ---(وقت کی گھنٹی)--- لہذا میری تمام ساتھیوں سے گزارش ہے کہ کسی بھید بھاؤ کے بغیر، تمام ساتھیوں کو ملا کر ایک ڈیلی گیشن بننا چاہئے۔ وہ ویسا ڈیلی گیشن نہیں بنے، جیسا ڈیلی گیشن ہم یہاں کاغذوں پر رکھتے ہیں۔ وہ چاہتے ہیں کہ Jammu & Kashmir confidence building measures, economic development ہو، لیکن کشمیر کے لوگ کاغذوں والا ڈیلی گیشن نہیں چاہتے ہیں، کیوں کہ ان کو distrust ہو گیا، وہ بھروسہ نہیں کرتے ہیں کہ یہاں سے کوئی بولنے والا ہوگا، یہاں سےکوئی بات کی جاتی ہے۔ میں یہاں پر دل سے یہ بات کہتا ہوں کشمیریوں کو ہم سب لوگوں پر بھروسہ نہیں ہے۔ وہ بولتے ہیں، ڈیلی گیشن آتا ہے، ڈیلی گیشن جاتا ہے، لیکن ہمارے لئے کچھہ کام نہیں کرتا ہے۔ میری ان سے گزارش ہے کہ جو ڈیلی گیشن جائے، وہ پورے confidence کے ساتھہ، پورے confidence building measures کے ساتھہ جائے، اکونومک ڈیولپمینٹ کے ساتھہ جائے، پھر آپ دیکھنے گا کہ کشمیریوں کے دل میں کیا ہے؟ دیش کی ترقی کرنے میں آپ کو کشمیری نمبر ون دکھائی دیں گے۔ بہت بہت شکریہ۔

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Thank you very much Mr. Nazir Ahmed Laway. Thank you very much. Dr. Karan Singh.

DR. KARAN SINGH (NCT of Delhi): Mr. Deputy Chairman, Sir, I have been listening with rapt attention to the speeches that have been made, beginning with the effective intervention of the LoP and all the other leaders. Sir, one thing is very clear. There is a very broad consensus in this House, cutting across Party lines, rising above Party politics, that something urgently needs to be done to actually grapple with the problem in the Kashmir Valley. There is also a great deal of sympathy for what is happening there.

One thing is quite clear, Sir, that since we last debated this in the House here on the 18th of July, the situation has deteriorated. We were hoping that within eight or ten days, it would pass off. But what has happened is more and more people have died. The death toll is now over 60; 150 to 200 people have been blinded apparently and thousands have been injured.

[Dr. Karan Singh]

Let me start by saying that I agree with my friends here that those pellet guns have got to be banned. Just stop those pellet guns. They have become a symbol of an extremely negative situation. Some alternative must be found. Raj Nathji, the Committee may take another month before you get the Committee report. But, surely, before that, you can take some initiatives, and just stop those guns because they are really creating terrible turmoil and young people, particularly, who may not be even actually involved, are also getting caught.

Now what has happened in these thirty-two days of curfew? There has been a breakdown of civil administration. Essential services have broken down, the medical systems have broken down, educational systems have broken down, the schools and colleges are all closed and there is a massive humanitarian problem. I think, before we get onto the politics, let us understand the dimensions of the humanitarian problem that faces us in Jammu & Kashmir; and he is right, it is there not from now but for the last 25 years ever since this ill-conceived insurgency or whatever you want to call it, began in 1989. Tens of thousands of people have lost their lives. How many widows are there who are wailing? How many children are there who are orphaned? How many कब्रिस्तान बन गए हैं, गाँव-गाँव में। This has happened, Sir, because of this unfortunate resort to militancy, and also because of certain mistakes made by this side also.

Now, it is essential, Sir, that law and order must be restored. You must have a proper civil administration there. I understand even the Secretariats are not functioning properly. People's lives are being disrupted and this is the basic responsibility of the State Government because law and order is a State subject. The Government of India can and must help whenever necessary but, basically, the State Government has got to be more active and more effective in running the Administration, and that unfortunately has not happened.

In the last thirty days, the State Government has not come out with any particular initiative or any particular action, and the impression is going around that the Government, virtually, is disappearing or is not active. That is a very wrong impression to have, because once the society starts unravelling, then, you never know where it would stop.

Sir, the last time I spoke from the heart; today I want to speak from both my heart and my head. With your permission, Sir, I want to place before this hon. House some factors, which may not be fully known and may be a little uncomfortable, but whatever I say would be based upon facts. The first thing is, we have to introspect. Why is it that

thousands and thousands of young people have embarked on a path that can only bring death and destruction to themselves and their loved ones? Why is this happening? Why is it that this has spread not only to the towns, where it used to be concentrated, but also to the rural areas? Why is it that boys barely into their teens are coming out of their houses and facing these firings? What has happened? Why is the psyche of Kashmir so deeply hurt and deeply mortified that they are prepared to take this path? We know that they are motivated. We know where they are being motivated from. We know that these Facebook and Internet campaigns are going on. We know to some extent where finances come from. We know where arms come from. We know all of that. But that has been happening for many years. Why has now the situation suddenly blown sky-high?

I think we have got to introspect very carefully and see what it is, because apart from fighting the fire that is raging now, please remember, Jammu and Kashmir is an extremely complex and complicated affair. There is no magic bullet that will solve it overnight. Everybody wants a solution. I have been involved in it ever since it started, even before Partition, and I know that there is no simple solution. But that does not mean that we can sit back and say, 'No, no. This has to go on.' We have got to put our heads together and see what sort of consensus we gather.

Now, let me take up two-three things. First of all, we insist Jammu & Kashmir is an internal affair. Okay. I agree, it is an internal affair; obviously, it is. But let us not forget that 50 per cent of the original State of Jammu & Kashmir is not under our control. The State of Jammu and Kashmir, for which my father signed the Instrument of Accession, was 84,000 square miles. Today, we have hardly 42,000 square miles in our control. So, 42,000 square miles are not under our control. And, that is not only in Pakistan; we understand that vast swathes of land have been either leased or, in some way, alienated to China. So, when we say, 'we won't speak to Pakistan', does it mean that we have legitimized that? Does it mean that we have accepted that? यहाँ कहते हैं कि हम बात नहीं करेंगे, we won't talk. आप बात नहीं करेंगे, तो इसका यह अर्थ निकला कि आपने मान लिया, जो उन्होंने दबा दिया, वह आपने मान लिया। इसलिए यह कहना कि हम बात नहीं करेंगे, is not a mature response? I quoted, last time, Mao Tse Tung's dictum *'Ta Ta Tan Tan'* — 'fight, fight, talk, talk.

We have got to keep the dialogue going. I agree, it is very frustrating and it will take a long time, but you cannot say, 'I will not talk', because it is in our own interest to talk. If they are showing interest in the people of Kashmir, why are we not interested in the welfare of the people of Gilgit, in the people of Baltistan or in the people of PoJK? So, why is it that whatever we have lost, we have lost and there we are on the

[Dr. Karan Singh]

defensive? First of all, we say it is an internal matter, but that is an over-simplification. It is not just an internal matter; there is a very major international aspect to this; there is Pakistan and there is China. Therefore, we have to continue with the processes of dialogue. I am not going into the details of what can be done, because that would be much too long, but I am making this point. I think it is a point that needs to be made and needs to be understood, because sometimes we very blithely say, 'it is an internal matter. हमारा कुछ नहीं है।' We must realise what this means.

Then, Sir — and I know I just might make some people uncomfortable — we say, Jammu and Kashmir is an integral part of India. Of course, it is. The day my father signed the Instrument of Accession, it became an integral part of India. There is no doubt about it. On 262 of October, I was in the room; I was in the house when the Accession was signed. However, please remember something more, my father acceded for three subjects: Defence, Communication and Foreign Affairs. He signed the same Instrument of Accession that all the other Princely States signed. All the other States subsequently merged, but Jammu and Kashmir didn't merge. Jammu and Kashmir's relationship with the rest of India is guided by Article 370 and the State Constitution that I signed into law. Yes, it is an integral part of India, but we must realize that from the very beginning Jammu and Kashmir has been given a special position. Whether it was right or wrong, I am not going into the politics, or whether it should have been done or not, that is a different debate for historians. Now that special position; from the original three subjects, is, there has been a whole series of developments. Some may call them positive developments of integration; other people may say, as Yechuryji said, negative developments of reducing autonomy. That is a question of which way you look at it. But the fact of the matter is that there was the political Agreement in 1952, Sheikh Abdullah-Jawaharlal Agreement; there was the adoption of the State Constitution in 1957. On 26th January, 1957, I signed that Constitution. Subsequently, there have been a plethora of Presidential Orders which have, gradually and gradually, applied increasingly in Entries from the Union List to the State. So, this is a process that has been going on for a long time. Then, in 1975, there was another political Agreement between Sheikh Abdullah and Indira Gandhi and subsequently there have been many Commissions.

As the Leader of the Opposition mentioned, Dr. Manmohan Singh set up the Round Table Conference and Working Groups. Our Chairman has chaired one of those Working Groups. So much was done. There were interlocutors. Where are all those Reports? What has happened to them? Some action has been taken; I agree. But, politically, we are still

up in the air. There is still an uncertainty with regard to the exact status of Jammu and Kashmir and its relationship with Indian history. It is an integral part of India; there is no doubt about that. But what exactly the relationship will be? In many federal countries, it varies. Even China has one State, two systems. For Hong Kong, they have a different system. So, integral part doesn't necessarily mean that it will be exactly the same as anything else, and that is not what it is. So, this is an unresolved matter. The longer we keep it unresolved, the more confusion there will be. This is something, Raj Nathji, which the Government of India will have to bite the bullet at some point in time and try to clinch this issue.

So, on the one hand, we see it an internal matter; yes, it is; but it is an integral part of India. Of course, it is. But the exact relationship remains. And also, Jammu and Kashmir is a single State, yes. But, as it is mentioned by Shri Shamsher Singh Manhas and by other people, there are three regions: there is Jammu, there is Kashmir and there is Ladakh. There were five regions actually; two regions are not now in our control, that is, PoJK and Gilgit-Baltistan. There are these regions and they have their own problems and the youth in those regions have their own aspirations which will not necessarily coincide with each other. Therefore, I would submit that the point is well taken that where we have *Jamuriat,* Democracy, where we have *Insaniyat,* humanity and where we have *kashmiriyat,* let us have two more, Jammuiyat and Ladakhiyat. They are also parts of the State. They cannot be brushed aside. I agree that the crisis, at present, is in the Kashmir valley. Please remember that Ghulam Nabi Azad was the first Chief Minister of Jammu and Kashmir from Jammu in 70 years. After Dogra Rule, for the first time, somebody from Jammu became the Chief Minister there. He knows what happens in Jammu and what happens in Kashmir. You remember that Amarnath Yatra land disaster that took place! That disaster in Amarnath Yatra started in Kashmir and then in Jammu. For months and months together, it was going on. So, it is not as if you can brush aside the other two regions. They have their own problems; they have their own aspirations; and, any overall settlement of Jammu and Kashmir will have to take into consideration the varying political aspirations of the three regions.

I am just leaving it at that. I don't want to spell it out further. But this is something very important because we set up Gajendragadkar Commission in 1967 for redressing the regional imbalances. He was the Chief Justice of India, a brilliant man. In 1977, Sikri Commission, headed by another Chief Justice of India, was set up. So many Commissions were set up. Still, the matter is unresolved. So I am making all these points not for scoring political points but simply to submit to this hon. House, through you, Sir, that these are the many dimensions of the problems in Jammu and Kashmir. There is the humanitarian

[Dr. Karan Singh]

dimension; there is the internal-external dimension; there is the dimension of the special position of Jammu and Kashmir; and there is the dimension of regional imbalances and regional problems in Jammu and Kashmir. So, when we are now determined to address the problem in an integrated fashion, we have to keep in mind these various dimensions. That is really what I wanted to put before the House today because I think, perhaps, I am in a better position than most to be quite clear with regard to these various dimensions.

Yes, Sir, economic development is very important. There is no doubt about it. The Prime Minister talks about vikas (development), and as has been mentioned, AIIMs are there, IITs are there, IIMs are there, Central Universities are there, and these are very welcome. Employment, tourism, handicraft, horticulture - so much can be done in the Valley, but it is not only an economic problem; it is a political problem also. This has got to be accepted. Please remember that, if you look upon it only as an economic problem and you just give packages and so many thousand crores of rupees — You can do it. You should do it. We have to do it — that is not going to solve the problem. It is a political problem. It is a complex political problem. And, today, we are facing a situation where there is widespread alienation among the people of the Valley. Young people, intellectuals and everybody seem to be going through some kind of an inner torture.

So, Sir, we have got to put our heads together, we have got to put our hearts together and we have got to do something concrete. An all-party delegation is a good idea, but I would submit, Sir, let us not go there in a hurry. You should not go there in a hurry. You have to do some ground work before you go. आप वहां जाएं और सिर्फ मेहबूबाजी, उनके मंत्रियों, चीफ सेक्रेटरी से मिलकर वापस आ जाएं, तो उसका कोई लाभ नहीं होगा। You have to do a lot of ground work. When you go, you should be able to meet a wide spectrum of people. That work has to be done. But, I would suggest to the Government that what is now needed is an Empowered Group that can take decisions and not just make recommendations. You can take everybody's views, but then some decisions have to be taken. During his tenure, Dr. Manmohan Singh set up all those excellent Round Table Conferences. There was a whole plethora of excellent advices from there. You have to look not only at development but also at politics. So, it is a political problem, an economic problem and a humanitarian problem.

Sir, I would close by saying that this is not only a Kashmiri tragedy; it is a national tragedy. I remember just the day before that event, Srinagar was packed. You could not get a single room. खचाखच भरा हुआ था। Boulevard was packed, the Mughal Gardens were packed. It seemed as if everything was going fine, and then suddenly, this

event happened and the whole situation deteriorated. We cannot allow it to deteriorate further. We have got to stop the deterioration. We have got to get together and we must get out of the negative spiral in this entire thing. And, for this, I am sure all of us will be prepared to support the Government in any positive step. The LoP has said, and everybody else has also said that we are prepared to co-operate, but then something concrete needs to be done this time, so that we can douse the fire that is devouring the most beautiful Valley in the world.

Sir, I will close now. Tripathiji quoted an Urdu couplet. I will close with a Sanskrit verse from the Vedas which exhorts us, "Let us think together; let us work together; let us achieve together; let there be no hatred between us - ॐ सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सहवीर्यं करवावहै तेजस्वि नावधितमस्तु मा विद्विषावहै।"

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Thank you very much for the enlightening talk. Now, Dr. Jitendra Singh.

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF DEVELOPMENT OF NORTH-EASTERN REGION, THE MINISTER OF STATE IN PRIME MINISTER'S OFFICE, THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PERSONNEL, PUBLIC GRIEVANCES AND PENSIONS, THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF ATOMIC ENERGY, AND THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF SPACE (DR. JITENDRA SINGH): Mr. Deputy Chairman, Sir, when Dr. Radkakrishnan, during his tour of the United States, finished his speech, President Kennedy rose up and said, "it is very difficult to speak after an intellectual giant has finished speaking." In the same way, referring to our fatherly figure, Dr. Karan Singh, I think, the timing that has been given to me is difficult. But, Sir, I shall try to do justice as far as possible.

जम्मू और कश्मीर की चिंता हम सबको है और यह संतोषजनक बात है कि इस तरफ, उस तरफ, कोई भी दल हो, सबको चिंता है। नेता, विपक्ष का जम्मू और कश्मीर से गहरा ताल्लुक है, डा. कर्ण सिंह साहब का है, हमारे पीडीपी के दो साथी और भाजपा के साथी, सबका संबंध जम्मू और कश्मीर से है। मेरा व्यक्तिगत संबंध जम्मू और कश्मीर से है और भारतवर्ष से भी है, इसलिए चिंता उतनी ही है, थोड़ी ज्यादा हो सकती है, कम नहीं है। आपके समक्ष प्रस्तुत होने का मेरा एक ही उद्देश्य था कि काफी दिनों से यह बहस चल रही है inside and outside the House और शायद एक मर्यादा है किं मत्री होने पर intervention के रूप में बोलना जरा कम पड़ता है। कहते हैं,

"मज़बूर बहुत करता था दिल तो जुबां को,

कुछ ऐसी कैफ़ियत है कि कुछ नहीं कहते।"

इसलिए इतने सप्ताह कुछ नहीं कहा, लेकिन लगा कि कहीं न कहीं, as was being rightly

[Dr. Jitendra Singh]

mentioned by Ghulam Nabi Azad ji, Dr. Karan Singh ji and others across the party lines, time has arrived to rise above political lines and I would rather add, शायद छोटा मुंह, बड़ी बात, to face the inconvenient truths and rising above politicking. कभी-कभी जाने-अनजाने में हम वे बातें कह जाते हैं, जो हमें राजनीतिज्ञ या दूसरे पहलुओं से अनुकूल लगती हैं। सबसे पहले तो जम्मू और कश्मीर का विषय क्या है? हम सब जानते हैं, हम सब मानते हैं कि जम्मू और कश्मीर भारतवर्ष का अटूट अंग है। इस पर तो कोई प्रश्नचिन्ह नहीं है, whatever be the status or level of relationship etc. etc., और सन् 1994 में कांग्रेस नेतृत्व की सरकार ने ही सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पारित किया, जिसमें यह स्पष्ट किया गया कि जम्मू और कश्मीर को लेकर यदि कोई बकाया विषय है, तो मात्र इतना कि पाकिस्तान के नाज़ायज़ कब्ज़े वाले जम्मू और कश्मीर के हिस्से को किस प्रकार से छुड़ा करके पुनः भारतवर्ष में सम्मिलित किया जाए। I think, that should have ended the matter there. There was a unanimous Resolution, and, then, we should have proceeded forward on those lines. Fortunately or unfortunately, from time to time, we succmbed to certain other temptations. अब कुछ ऐसे प्रश्न पिछले कुछ दिनों से, कुछ सप्ताह से उठ रहे हैं, मुझे लगा कि उनका सामना करना जरूरी है, नहीं तो यह विषय और उलझता जाएगा। हमारे साथी लवाय जी ने ठीक कहा, Jammu and Kashmir has a legacy and it set an example which defied the two-nation theory, and, in fact, vindicated India's stand to become a secular State. It was an example not only for Jammu and Kashmir but it inspired the entire nation also. शायद पुराने लोगों को याद होगा, Progressive Writers' Forum नाम का एक मंच बना, डा. कर्ण सिंह जी उसके गवाह हैं, जिसमें कैफी साहब थे, मोहसिन भोपाली थे, साहिर थे, who actually got inspired by this and opposed the partition of India. That has been the legacy of integration of Jammu and Kashmir with India. जब बंटवारा हो गया, तो साहिर, out of disgust had written,

"वह वक्त गया, वह दौर गया, जब दो कौमों का नारा था,
वे लोग गए इस धरती से, जिनका मकसद बंटवारा था।"

Such was the extent of disgust, and, therefore, a State with a majority Muslim community chose to be part of India. And this got vindication in the following years, not only on this side, but even on the other side. Soon after the assassination of Liaquat Ali Khan, फैज़ ने लिखा था कि "यह दाग-दाग उजाला, यह शबगुज़ीदा सहर, वह इंतजार था जिसका यह वह सहर तो नहीं।" He was trying to say that we had been befooled into believing something which was not actually the truth. He could not say it in so many words. Later on, he even got imprisoned by General Ayub Khan. ...*(Interruptions)*... Therefore, the point is that every nation, and why only nation, every society, at some point or the other, has to draw a bottom line of how far and what not more, and this is also true with the most developed and most liberated democracies of the world. I am just reminded of a small incident which used to be very fondly told by one of the very senior journalists, who later on became a Member of the House, the same House. He is

no more now. After the 1965 war, when President Johnson was the President of the U.S. and Kashmir issue had been in the news all over after the Tashkent Pact and all those things, there were a section of media and the America's Press which was pointing to Kashmir being a disputed case, etc. etc., and accession was being under question mark. So, somebody pointed out to President Johnson: What about Atlanta? What about other States? They also have a history which is to a lesser or a greater extent similar to that because after all it became a conglomeration of the States. So, President Johnson lost his cool and said, "Look here, gentleman, this is a closed chapter. We do not open closed chapters." The problem with us in India — and that is why I have dared to stand up today — is that we do not close chapters. And sometimes when convenience suits us, we open chapters. गड़े मुर्दे उखाड़ लेते हैं, कभी-कभी जब हमें जरूरत हो। I am not saying for myself or others. I am saying for the entire society. And sometimes, I also dread to think that over the years, particularly after these 25 years of a protracted phase of militancy in Jammu & Kashmir, कभी-कभी ऐसा लगता है a message has gone rightly or wrongly that there is a premium on anti-India activism, a premium on anti-India intellectualism. आप हिन्दुस्तान के ऊपर प्रश्नचिन्ह लगाएं तो आपका नाम भी बुलन्द हो जाता है, आपकी किताब भी हिट हो जाती है। I do not know whether it would be parliamentary to say whether sometime somebody could contemplate or give a serious thought to this kind of an intellectual terrorism which is, in itself, going to create a lot of implications. यह बुद्धिजीवियों का एक नया रिवाज है और शायद उसी में ख्याति भी प्राप्त हो जाती है। और उसका नतीजा, परिणाम अनेकों मॉडल पिछले 20 सालों में दिए जा रहे कश्मीर को हल करने के लिए। In spite of what I said a few moments ago that we had already discussed it in 1994 and came to a consensus, do we need another Resolution? And still we are coming up with models, this model, that model, बातचीत होनी चाहिए, नहीं होनी चाहिए, किस के साथ होनी चाहिए, हो तो कब हो, कितनी हो। Can't we come to a consensus on this? और जिसके साथ नहीं हो सकती उसके साथ करने के लिए भी विवाद है। There is a famous English proverb — You cannot shake hands with a clenched fist. And I am proud to say that this quotation was most often quoted by none else but Prime Minister, Mrs. Indira Gandhi. At least, to identify which is a clenched fist, can't we come together, because that is a common enemy to all of us? If we go down to the history, then I can go one century back. That would take long, and it has already been talked about. Dr. Karan Singhji mentioned that even in the Constitution of Jammu & Kashmir, which I am carrying with me, it has been mentioned, "We, the people of the State of Jammu and Kashmir," I will not go into the whole, "having solemnly resolved, in pursuance of the accession of this State to India on the twenty sixth day of October, 1947", as Dr. Sahib was mentioning, "to further define the existing relationship of the State with the Union of India as an integral part." यह भारत का संविधान नहीं कह रहा, यह जम्मू-कश्मीर का संविधान कह रहा है।

[Dr. Jitendra Singh]

Jammu and Kashmir is unique in the sense that it has its own Constitution. The Constitution of Jammu and Kashmir itself says that it is an integral part of India. The House unanimously says this. And still we have to debate what model we have to follow. I will directly come to this because I don't want to take much time of the House. Children are getting killed. And it is everybody's concern. Children are common to us. हमारे यहाँ पंजाब में कहते हैं- *"बच्चे सांझे होंदे ने।"* Children have no religion. Children have no parentage. It does not matter whether it is his child or my child or whether it is a Hindu's child or a Muslim's child or a Sikh's child. When a child is killed, it should awaken the nation's consciousness. But there is something which should not go unnoticed. Most of the children who got killed were the children of the poorest of the poor in the Valley! Who is to answer this? यह प्रश्न अभी तक नहीं आया है। The poorest of the poor have lost their children. And those who have motivated these children to come forward in the name of so-called *Jihad* have very safely kept their children in safe havens in India's Metros and abroad. यह प्रश्न जो शायद inconvenient है, मैं इस सदन में करना चाहता हूं। As Gandhiji once said, "Of what use is the war for freedom if it leaves behind a trail of orphans, bereaved and widows, however holy may be the objective of liberty?" अगर यह जिहाद इतना महान है, इतना पावन है, इतना पवित्र है कि यहाँ से उठकर सीधे जन्नत तक जाने का मौका है, तो जन्नत में जाने का मौका पहले अपने बच्चों को क्यों नहीं दिया जाता? अपने बच्चों को मुम्बई, बेंगलुरू और विदेश में रखा जाए और गरीब के बच्चे को उकसाया जाए कि तुम जन्नत की राह देखो! I think all of us will have to face this and motivate the youth of Jammu and Kashmir. The saving grace today, Sir, in Kashmir Valley is the youth. The youth of today is no longer the youth of twenty-five years ago or of sixty years ago. It is an awakened youth, as Derek rightly said. He is open to the Internet and other means of communications. I am not sure, as he rightly said, whether we should debar them from those means of communications. Let them get exposed and let them learn it. We have to facilitate that. The youth of Kashmir wants to be the beneficiary of India's success story. वह नहीं चाहता कि जिस प्रकार से भारतवर्ष के बाकी युवाओं को इतनी अनगिनत और अद्‌भुत योजनाओं का लाभ मिल रहा है, उससे वह वंचित रह जाए, लेकिन कुछेक लोग उसको अपने कहकावे में या मजबूर करके ला रहे हैं। The youth is our asset. That is where we have to target. We need to engage them. मेरी एक प्रार्थना है कि हम आँकड़ों में न उलझें। इस सदन में बार-बार यह बात आई। यदि उलझना ही होगा तो उसका उत्तर है। I agree that two wrongs don't make one right. Sir, I will just take three minutes more. Not more than that. I am not repeating even a single word of what I am saying. बार-बार यह कहा गया कि जब से भारतीय जनता पार्टी आई, तो सारा गदर हो गया। I am not trying to be political. I am just trying to educate myself. And if I am wrong, please forgive me. You can accuse me. I can be accused of ignorance but not of wrong facts. I also don't want to match statistics because that is not

fair. We don't have to match how many killings happened under our watch and how many killings happened under your watch.

लेकिन बार-बार यह कहना, इसका क्या अर्थ है? यह कहा गया कि देखिए, 2010 में हमने क्या किया। क्या किया? 100 से अधिक लोग मारे गए। यह भी कहा गया कि देखिए, 2008 में हमने क्या किया। क्या किया? हिन्दुस्तान की तारीख का सबसे बड़ा आंदोलन, अमरनाथ आन्दोलन 2008 में हुआ। नेता, विपक्ष उस समय मुख्य मंत्री थे। I am not casting insinuation. I dare not. He is more than an elder brother to me. I will have to ask for forgiveness in the evening.

श्री गुलाम नबी आज़ाद: जम्मू वाला मेरे मुख्य मंत्री रहने के बाद हुआ। ...(**व्यवधान**)...

†قائد حزب اختلاف (جناب غلام نبی آزاد): جموں والا میرے مکھیہ منتری رہنے کے بعد ہوا۔۔(مداخلت)۔

डा. जितेन्द्र सिंह: आपने त्यागपत्र दे दिया था। What I am trying to say is that let us not get into matching figures. This is the wrong that happened. Now, we are living in an evidence-based era. हमारे बच्चे हमारे साथ क्यों नहीं चल रहे? We are unable to carry these youth with us because उन्हें लगता है कि हम असत्य बोल रहे हैं। अगर हम उनके आंकड़ों के आधार पर, तर्क के आधार पर बात करेंगे, तभी हमारा अपना बच्चा हमारे साथ चलेगा। आजकल तो अपने बच्चों से भी बात करनी हो, तो आपको evidence के साथ बात करनी पड़ती है। जब उन्हें लगता है कि हम घुमा-फिराकर बात को manipulate कर रहे हैं, तो वे हम से जुदा हो जाते हैं।

अब यह कहा गया कि साहब, भारतीय जनता पार्टी अगर coalition में न आती, तो सब कुछ ठीक रहता। डा. कर्ण सिंह साहब ने एक बहुत अच्छी बात कही कि इतना बड़ा टूरिस्ट सीज़न कश्मीर में था, 8 जुलाई को इस आतंकवादी युवक की हत्या हुई है, जैसा कि डा. साहब ने कहा कि 7 जुलाई तक वहां होटल तक बुक थे, भारतीय जनता पार्टी और पीडीपी की सरकार मार्च, 2015 से बनी, तो वहां सवा साल तक कुछ नहीं हुआ? रातों-रात ही कुछ हो गया। यदि भाजपा ही एक कारण होती, तो सवा साल में भी कुछ न कुछ होता?

दूसरा सवाल, let us not take this alibi, to settle scores, that it is because of BJP entering into coalition. Then, I will have a counter argument. What happened from 1990 to 2015 was because Congress entered into coalition with PDP and because Congress entered into coalition with National Conference. In other words, if Congress does it, it is okay. If BJP does it, it is wrong. We have to rise above this. And that is what I am trying to say that we need not raise the bogey of this. Of course, if BJP entered into coalition, it was a mandate dictated by the people of the State. We were the two largest parties. ...*(Time-bell rings)*... Just one minute more, Sir. Any other coalition would have been illegitimate. ...*(Interruptions)*...

---

†Transliteration in Urdu script.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: He is concluding.

श्री शरद यादवः उपसभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से यह कहना चाहता हूं कि आप कोई रास्ता भी बताइए कि क्या हो, किस तरह से हो? आप वहां के रहने वाले भी हैं।

डा. जितेन्द्र सिंहः अगर हम असत्य पर यकीन करके रास्ता ढूंढेंगे, तो रास्ता नहीं मिलेगा। मैं दरवाजे तक आ रहा हूं, फिर रास्ता भी दूंगा। सिर्फ एक-दो मिनट का समय और चाहिए। ऑल पार्टी मीटिंग की बात कही जाती है। यह बहुत बढ़िया बात है। It sounds very good – academically and ideologically. Why not? We have to talk. Why should we not talk? अब मेरा एक छोटा सा प्रश्न है, बुरा न माना जाए। गृह मंत्री जी ने श्रीनगर में दो दिन 23 और 24 तारीख को प्रवास किया। एक नहीं, अनेकों संदेश कांग्रेस पार्टी को भेजे गए कि आकर के मिलिए। सब पार्टियां आकर मिलीं। कांग्रेस पार्टी नहीं मिली। जब आप उनके घर जाइए, तो मिलने से इन्कार है। जब आप दिल्ली लौटकर आइए, तो आपने हमसे मीटिंग क्यों नहीं की? What does this mean? Are we going to expose ourselves to the duplicity to the people of this country and then, try to be credible? Or, are we opening ourselves to the accusation that we speak one language in Srinagar, second in Jammu and third in Delhi? In the days of Internet, we cannot afford to do so. Somewhere, we will have to answer. शायद सदन को इस बात की जानकारी नहीं है। मुश्किल यह है कि हम कुछ बातें खुद भूल जाते हैं, यह हमारे स्वभाव में है, कुछ हमारी याददाश्त कमजोर है और कुछ भुलवाने वाले भी बहुत हैं। लेकिन एक बहुत पुराना गीत है, यहां पर जया बच्चन जी बैठी हैं:-

"तुम मुझे भूल भी जाओ, तो ये हक है तुमको,
मेरी बात और है, मैंने तो मोहब्बत की है।"

जिन्होंने ज़मीन से मोहब्बत है, वे नहीं भूलेंगे। यदि इतनी ईमानदारी के साथ आपको अपना पक्ष रखना था, तो जब आपके घर जाकर मिलने का प्रयास किया गया, तो क्यों नहीं मिले? अब बात हो रही है हुर्रियत की या दूसरे लोगों की, उनसे मिलने में कोई ऐतराज नहीं है। We can talk. The question is: With whom to talk? Who represents Jammu and Kashmir? By Constitution, it is the elected representatives. अब हुर्रियत से मिलने को वहां पर कोई नहीं है। There are members of the civil society. They have never exposed themselves to the test of ballot in the last 25 years. Some of them have been members of the mainstream parties and are still drawing pensions. I don't want to name those individuals. Many of us know about it.

तीसरी बात, आप बात करते हैं, मुझे दुख हुआ, तो स्टेकहोल्डर्स कौन हैं? कश्मीरी पंडित कहां गया? यह कश्मीरियत, जम्हूरियत, इंसानियत, फलानियत, ढिकानियत। Can you have *kashmiriyat* without the presence of Kashmiri-Pandit? फिर, वह शेर है, "मैं चमन में चाहे

कहीं रहूं, मेरा हक है फसल-ए-बहार पे।" *Kashmiri Pandit,* even if he is living outside the Valley, is an equal stakeholder. आरोप यह लगाया जाता है कि वह खुद गया। मोहसिन भोपाली ने कहा था कि "बे-सबब लोग बदलते नहीं मस्कान अपना, तुम ने जलते हुए देखा है नशेमन अपना।" Stakeholders are *Kashmiri Pandits;* stakeholders are the refugees from West Pakistan; stakeholders are the refugees from PoJK; stakeholders are the Sikh community; stakeholder is Jammu; and stakeholder is Ladakh. बात करनी है, तो सबके साथ बात की जाए। मुझे खुशी है कि इस बात पर हमारी सहमति हो पाए और फिर कहीं ऐसा न हो कि इस scoring में हम भूल जाएं, जैसा कि बार-बार कहा, the actual mischief is being perpetrated by Pakistan, and, therefore, we have to come around and, actually, recognise that this is one of the best opportunities to confront Pakistan. The myth of non-State actors has been blown out. We earlier also contended that non-State actor also, as long as it originates from the Pakistan soil, is the responsibility of Pakistan. They have themselves now started confessing it. And the spillovers, as Dr. Saheb was mentioning "किश्तवाड़ में पिछले सप्ताह कुछ थोड़ी सी टेंशन हुई", these are matters of concern, which we will have to look into. Kashmir, as far as we are concerned, the present Government is concerned, is our nerve centre and it is true for all of us *...(Interruptions)...*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude now.

DR. JITENDRA SINGH: We cannot forget, we have invested very heavily in Jammu and Kashmir. As far as the party to which I belong, we lost our founder Shri Shyama Prasad Mukherjee on the soil of Jammu and Kashmir. How can we be otherwise? But this is the time to rise above all that. Therefore, without taking much time, I would just sound a note of warning. Sometimes, it happens, जब कोई हालात बिगड़ जाते हैं, तो हमें लगता है, we can oppose. *...(Interruptions)...*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, it is time to conclude.

DR. JITENDRA SINGH: I am concluding, Sir. लगता है, आज मैं अपोजिशन में हूं, जो रूलिंग पार्टी है, उसको कहा जाए। But let us not forget. If we fall to the temptation of using the bogey of terrorism to settle scores with political adversaries, we may sometimes ourselves succumb to that and that is what has happened in the past. Therefore, the need of the hour is to have political honesty before political approach and not to do or say anything which, directly or indirectly, tends to demoralize the security forces of India. It is because of the security forces that Jammu and Kashmir is today, in the last three days, showing a semblance of normalcy. We are proud of them and we have to reinforce their efforts while, at the same time, discharging our political responsibility in the best honest way possible. Thank you very much.

SHRI K.T.S. TULSI (Nominated): Sir, as we have heard all the stalwarts of the nation already debating on this issue since morning, I have nothing really more to add except to say that I endorse the views of the LoP, Mr. Sharad Yadav, Mr. Sitaram Yechury, Mr. Derek O'Brien and others. I just want to mention that Mr. Sharad Yadav mentioned about Punjab. In Punjab, I was assigned the task of prosecuting 50 of the top A-grade terrorists. But prosecution was one thing. The other is, Punjab is the only example where militancy and terrorism was completely crushed. It was completely eliminated and we have seen thereafter that Punjab became normal because of the magnanimity of the Government. It was by winning the hearts of the people of Punjab that militancy was crushed.

[THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHUBANESWAR KALITA) *in the Chair*]

Once people stopped cooperating with militants, then only the security forces can also have an upper hand and root out the problem. That is what is required. What I also want to mention is only one thing. Sikhs in Jammu and Kashmir are extremely insecure. There are only a few lakh Sikhs in the Kashmir Valley, particularly, and they are mostly in rural areas. After Chittisinghpura massacre, where 35 innocent Sikhs were massacred, the Commission of Inquiry was constituted by Justice Rathinavel Pandian, but the report has never been made public. The Sikhs are insecure. I have been getting telephone calls since yesterday that the plight of the Sikhs in Kashmir needs to be addressed and they need to be provided a sense of security in Kashmir. Thank you.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHUBANESWAR KALITA): Now, Mir Mohammad Fayaz; not present.

श्री प्रताप सिंह बाजवा (पंजाब): वाइस चेयरमैन साहब, सब से पहले तो मैं सारे हाउस को इस बात की मुबारकबाद देना चाहता हूं कि आज का level of discussion, बहुत बेहतरीन level of discussion रहा है। सब से बड़ी बात, होम मिनिस्टर साहब बैठे हुए हैं, इस मसले पर सारा हिंदुस्तान एक है कि कश्मीर हमारा अभिन्न अंग है। It is a jewel in the crown. वाइस चेयरमैन साहब, मैं सब से जरूरी बात यह कहना चाहता हूं कि हमारी सहानुभूति हमारे कश्मीरी भाईयों के परिवारों से है, क्योंकि तकरीबन 60 से ज्यादा मौतें, जब से कर्फ्यू लगा है, पिछले एक महीने में हुई हैं। कश्मीर के सारे बच्चे, माताएं, बुजुर्ग हमारे हैं। हमारा खून एक है। वह हमारे देश का टुकड़ा है और paramilitary forces, police forces, armed forces ये सब भी हमारे भाई हैं। यह Indian democracy के लिए बहुत बड़ा चैलेंज है। यह पार्लियामेंट के सामने Indian democracy के सामने और मौजूदा सरकार के सामने एक बहुत बड़ा चैलेंज है कि हम सारी दुनिया को यह बात साबित कर दें कि हमारी इतनी vibrant democracy है कि देश की खातिर, सारी पॉलिटिकल जमातें इकट्ठी होकर, party lines से ऊपर उठकर, अपने देश के लिए हर कुर्बानी देने के लिए तैयार हैं।

मैं टाइम देने के लिए Leader of Opposition का मशगूर हूं। गुरुदासपुर मेरा जिला है और जब

भी जम्मू-कश्मीर को जाना है, गुरुदासपुर होकर जाना पड़ेगा। सर, ये जिस प्रॉब्लम का जिक्र कर रहे हैं, उसे पंजाब ने और हमारे सूबे ने, 15 साल तक टेरेरिज्म की बहुत बड़ी कीमत अदा कर, अपनी छाती पर, अपने परिवारों पर झेला है। सर, 33 हजार पंजाबी टेरेरिज्म के दौरान कुर्बान हुए हैं। मैं कश्मीरी नौजवान बच्चों से अपील करना चाहता हूं कि आप दुनिया का इतिहास पढ़कर देख लीजिए, आप चाहे पहली वर्ल्ड वार की बात करें, दूसरी वर्ल्ड वार की बात करें या पंजाब की करें, हर बात आखिर में टेबल पर ही खत्म होती है। आपकी बात, चाहे वह पॉलिटिकल हो या इकॉनोमिक हो, national interest में हो, मौजूदा सरकार और सभी पॉलिटिकल पार्टीज इकट्ठी होकर सुनें और हिंदुस्तान के Constitution में रहते हुए, जो भी हो सकता हो, मेरी होम मिनिस्टर साहब से अपील है कि उसे हमें करना चाहिए।

सर, पंजाब ने टेरेरिज्म की बहुत बड़ी कीमत अदा की है। होम मिनिस्टर साहब, मेरे अपने पिता, he was a Minister in Punjab, terrorism के दौरान he was assassinated with five other people. We have already suffered. सर, जब हम post-election सारे scenario को स्टडी करते हैं, तो देखते हैं कि वहां 33,000 पंजाबी मारे गए जिसमें 90 परसेंट killings सिखों की थीं and the killings were also by their Sikh brothers. And since then पिछले 20-25 साल से पंजाब की economy अभी तक ट्रैक पर नहीं आ सकी है। आप उन परिवारों को देखिए, जिन्होंने अपने प्यार करने वालों को हमेशा के लिए खो दिया। सर, मैंने चंद दिनों पहले अखबार में पढ़ा कि एक व्यक्ति ने कहा कि मेरे दो लड़के कश्मीर के टैरेरिज्म में चले गए। अब मेरे बेटे नहीं रहे, तो मैंने अपनी नौजवान बेटी को तैयार कर लिया। सर, इस से बड़ी हमारी बदकिस्मती क्या हो सकती है? अभी डा. जितेन्द्र सिंह, माननीय राज्य मंत्री जी बोल रहे थे। मैं उनसे कहना चाहता हूं कि आज नेशन के सामने यह एक बहुत बड़ा सवाल खड़ा है। कश्मीर हमारा चेहरा है। चाहे जिस्म कितना भी खूबसूरत हो, लोग सब से पहले चेहरे की तरफ देखते हैं कि चेहरा कितना खूबसूरत है। कश्मीर हमारा चेहरा है। यह हमारे क्राउन में jewel है। हमारा कश्मीर के साथ बहुत पुराना ताल्लुक है, क्योंकि महाराजा रंजीत सिंह जी के बाद, चालीस सालों तक, सारा कश्मीर, लेह-लद्दाख भी, यह सारा कश्मीर, उनका हिस्सा था। सदर-ए-रियासत कर्ण सिंह जी का जो परिवार था, जो इनके पूर्वज थे, वे उनके जरनैल थे। गुलाब सिंह जी उनकी आर्मी में जेलर थे। इसकी हिस्ट्री यह है कि उन्होंने यह कश्मीर, बाद में, सिख राज टूटने के बाद भी अंग्रेजों से खरीदना था। मैं आपसे यह विनती करना चाहता हूं, मेरी गुज़ारिश है, इधर जो सवाल तुलसी साहब ने उठाया है, मैं भी उसी सवाल को उठाना चाहता हूं। इधर बहुत सारे stakeholders हैं, लेकन जहां कश्मीरी stakeholders हैं, वहां लद्दाखी भी हैं, वहाँ जम्मू वाले भाई भी हैं। जितेन्द्र सिंह जी ने जहाँ कश्मीरी ब्राह्मण का जिक्र किया है, मैं वहाँ सिख भाईयों का भी जिक्र करना चाहता हूं कि तकरीबन 70 गाँवों में, सवा लाख से ऊपर की आबादी हमारे सिख भाईयों की है। वहाँ पर, अभी तक किसी सिक्ख भाई ने अपना घर नहीं छोड़ा है। किसी गाँव में पाँच रहते हैं, कहीं दस घर हैं। आज से तकरीबन दस, बारह साल पहले चिट्टीसिंहपुरा गाँव में 36 सिख शहीद कर दिए गए थे, उसके बावजूद उन्होंने कश्मीर नहीं छोड़ा। मेरी गुज़ारिश है, मैं आज उनके माइनॉरिटी स्टेटस की बात करना चाहता हूं, क्योंकि कश्मीर में असेम्बली के बिना माइनॉरिटी स्टेटस नहीं मिल सकता है। राजनाथ सिंह जी, मेरी आपसे गुज़ारिश है कि आप जब भी कभी स्टेकहोल्डर्स से बात करें, तब उस टाइम पर सिख भाइयों के माइनॉरिटी स्टेटस की और पंजाबी की बात भी करें। आप कर्ण सिंह जी से बात कीजिए, वे

[श्री प्रताप सिंह बाजवा]

पंजाबी बोलते भी हैं और अंडरस्टैंड भी करते हैं, आप आज़ाद साहब से बात कर लीजिए, जितेन्द्र सिंह जी, जब हम मिलते हैं, तो पंजाबी में बोलते हैं, हमारे जितने कश्मीरी भाई हैं, उनमें चाहे फारुक अब्दुल्ला साहब हों या जो लेट मुफ्ती साहब थे, वे पंजाबी understand करते थे, पंजाबी बोलते थे, लेकिन वे आज पंजाबी को कुछ स्पेशल स्टेटस देने के लिए तैयार ही नहीं है। हमारा इनके साथ बहत करीब का रिश्ता है, क्योंकि अमृतसर शहर है, जब होंद में आया, तब महाराजा रंजीत सिंह जी कश्मीर से special artisans वहाँ लेकर गए। मेरी राजनाथ सिंह जी से गुज़ारिश है कि होम मिनिस्टर साहब, जब कश्मीर शांत रहेगा, तब ही पंजाब शांत रहेगा। पाकिस्तान ने दो दफा पंजाब की सरजमीं पर हमला किया। ...(समय की घंटी)... पहली दफ़ा दीनानगर पर किया, उसके बाद, दूसरी दफ़ा, हमारा जो पठानकोट एयरबेस है, उस पर अटैक किया। You have to be very careful on that. मेरी आपसे विनती है, क्योंकि आपको बाकी सारी बातें पता हैं - जैसे डा. मनमोहन सिंह जी के टाइम में, हमारी टीमें, इंटरलोक्युटर्स और बाकी अन्य टीमें भी वहाँ गई हैं, आपके पास सारा रिकार्ड पड़ा है, इनकी जो recommendations आई हैं, आप उन recommendations को जल्दी ही अमल में लाना शुरू कीजिए। इसके साथ ही मैं इनसे यह बात भी कहना चाहता हूं, आज के अखबार में आया है, ऑनरेबल सुप्रीम कोर्ट ने भी यह बात कही है that human touch is missing in J&K. गवर्नमेंट का जो ह्यूमन टच है, वह होना चाहिए। हम प्रधान मंत्री जी की बहुत इज्जत और सम्मान करते हैं, मगर जो पार्लियामेंट की गरिमा है, उसको बहाल रखना प्राइम मिनिस्टर और गवर्नमेंट का काम है। ...(**समय की घंटी**)... यही स्टेटमेंट, जो प्रधान मंत्री जी ने बाहर जाकर दी है, अगर लोक सभा या राज्य सभा में देते, तो उसका ज्यादा असर होता। मैं आज के टाइम्स ऑफ इंडिया का ...(**व्यवधान**)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHUBNESWAR KALITA): Please conclude. Your time is over.

SHRI PARTAP SINGH BAJWA: Sir, just a second. मैं आपको आज के टाइम्स ऑफ इंडिया के एक लेख का लास्ट पैराग्राफ पढ़कर सुनाऊंगा। जितेन्द्र सिंह जी ने जिक्र किया है, मैं कहना चाहता हूं कि जिनके पी.एम.ओ. ऑफिस में वे मिनिस्टर हैं, उनके लीडर का, प्राइम मिनिस्टर का जो स्टेटमेंट है, उसमें मोदी साहब ने आज कहा है and I read, "The Prime Minister said that all political parties want peace in Kashmir and lauded the political class, especially Congress, for making mature attempts in a patriotic atmosphere for a solution to the issue through talks. Even, today, all parties speak in one voice on Kashmir. This is India's strength." This is what the hon. Prime Minister has said. And the Minister must not make statements which are not in line with his own Prime Minister's statements. कृपया करके आप warn मत कीजिए। जितेन्द्र सिंह जी पहली दफ़ा आए हैं, हमारे भाई हैं, इनको रास्ते से गुजर कर ही जम्मू जाना होता है। मेरी विनती है कि 'warning' शब्द ठीक नहीं है।

4.00 P.M.

पंजाब वाले यह 'warning' शब्द इस प्रकार से नहीं लेते, आप किसी को भी warn मत कीजिए। कृपा करके इस word को expunge किया जाए।

आखिर में कश्मीरी नौजवान, बच्चों को आप रोकें। मैं वही बात याद कराऊँगा, जो अल्लामा इकबाल ने कही थी,

"सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा,
हम बुलबुले हैं इसकी, ये गुलसिताँ हमारा।"

इसलिए मेरे भाइयों, हिन्दुस्तान से बेहतर मुल्क कोई नहीं मिलेगा। हमारे सिख भाइयों के साथ पाकिस्तान और अफगानिस्तान में जो हो रहा है, जो क्रिश्चियन भाइयों के साथ, हिन्दू भाइयों के साथ हो रहा है।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHUBANESWAR KALITA): Please conclude now.

श्री गुलाम नबी आज़ादः सर, मैं इस वक्त माननीय मंत्री को disturb नहीं करना चाहता था, वे हमारे भाई हैं, लेकिन उन्होंने जो मामला उठाया, कोई भी मिनिस्टर सदन को warn नहीं कर सकता। उन्होंने कहा, 'I would like to warn you' कि इससे बाखबर रहना चाहिए। वह कह सकता है, 'I would like to caution you' or 'caution everybody'. The Prime Minister cannot warn the Members of the Parliament or the Members of the House. आप इसे रिकॉर्ड में देखिए। That should be expunged.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHUBANESWAR KALITA): We will check the records. *...(Interruptions)...*

SHRI PRATAP SINGH BAJWA: I was on my legs. Sir, I will take just a minute.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHUBANESWAR KALITA): No. You had already concluded.

श्री प्रताप सिंह बाजवाः सर, एक मिनट। मुझे होम मिनिस्टर साहब से एक ही बात कहनी है। जो पाकिस्तान की policy है, उसमें कोई confusion नहीं है। Policies were laid down by late Shrimati Indira Gandhi. How to deal with Pakistan is very, very clear before you. You do not need to adopt any other policy. इसलिए आप वह policy लागू कीजिए, जो स्व. इन्दिरा गाँधी ने पाकिस्तान की तर्ज पर की हुई है और वह उन्होंने करके दिखाई है। आपने 56 इंच की छाती का बहुत दफा ज़िक्र किया, अब कुछ करके तो दिखाएँ। ...(**समय की घंटी**)... थोड़ा सा दम दिखाएँ। संजय सिंह जी, हो मिनिस्टर साहब तो ठाकुर हैं। हमें इस बात का पूरा मान है।

उपसभाध्यक्ष (श्री भुवनेश्वर कालिता): आप please conclude कीजिए, आपकी कांग्रेस पार्टी से एक और सदस्य हैं, फिर उनको समय कम मिलेगा।

श्री प्रताप सिंह बाजवा: सर, मैं conclude कर रहा हूँ। आपने देश के साथ जो वादा किया था कि हम पाकिस्तान को ईंट का जवाब पत्थर से देंगे। इसके लिए आप पर पाबंदी किसने लगाई है? आपके सामने policies laid हैं, आप कुछ करके दिखाएँ, तो हमें भी आपकी तारीफ करने का मौका मिल पाएगा। आपकी बहुत मेहरबानी।

डा. विनय पी. सहस्रबुद्धे (महाराष्ट्र): आदरणीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं आपका आभारी हूँ कि आपने मुझे इस महत्वपूर्ण विषय पर, जो देश की एकात्मता से जुड़ा हुआ है, अपने विचार रखने का अवसर दिया। वैसे अभी डा. जितेन्द्र सिंह, जो हमारी सरकार के एक प्रमुख राज्य मंत्री हैं, मैं उनका भाषण सुन रहा था, तो मुझे लगा कि उन्होंने बहुत सारे विषयों को स्पर्श किया है। उन बातों को repeat करने की कोई आवश्यकता नहीं। मैं उन्हें repeat न करते हुए संक्षेप में अपनी बात रखने की कोशिश करूंगा।

उपसभाध्यक्ष जी, मैं शुरुआत इससे करूँगा कि कल ही, जिस कार्यक्रम में मैं स्वयं उपस्थित था, प्रधान मंत्री जी ने पुनः एक बार हमारे पूर्व प्रधान मंत्री, अटल बिहारी वाजपेयी जी के उन शब्दों को दोहराया है, जिनमें उन्होंने 'कश्मीरियत, इंसानियत और जम्हूरियत' की बाती की है। मगर शायद पुराने प्रधान मंत्री जी और अभी के प्रधान मंत्री जी ने जो नहीं कहा, जो मैं समझा, मैं उस पर भी थोड़ा कटाक्ष करना चाहता हूँ। मैं एक छात्र के रूप में समझता हूं कि 'कश्मीरियत, जम्हूरियत और इंसानियत' की भाषा 'हिन्दुस्तानियत' के दायरे में होती है, क्योंकि जितनी कश्मीरियत महत्वपूर्ण है, उतनी ही महाराष्ट्र की महाराष्ट्रियत महत्वपूर्ण है, उतनी ही बंगाल की बंगालियत महत्वपूर्ण है। इसलिए कश्मीरियत कोई ऐसी चीज़ नहीं है, जिसके कारण बाकी सारी चीज़ों की अनदेखी की जाए। कश्मीरियत का सम्मान जरूर होना चाहिए, जितना अन्य प्रदेशों की अपनी-अपनी छोटी-छोटी अस्मिताओं का सम्मान भारत माता की जो एक विशाल और सर्वसमावेशी अस्मिता है, उसके दायरे में होता है। मैं मानता हूँ कि हमें इस बात को नहीं भूलना चाहिए।

उपसभाध्यक्ष महोदय, जब मैं सारे भाषण सुन रहा था, तब मुझे लगा कि इस पूरी समस्या के मूल में जो कश्मीर का भारत में विलय हुआ, उससे संबंधित जो भ्रांतियां बनने दीं, रहने दीं, एक दृष्टि से उनको मजबूत करने की भी कोशिशें हुईं, partition के साथ जुड़े हुए जो सवाल हैं, उनके बारे में भी कुछ भ्रांतियाँ बनाई गईं, उनको भी बनने दिया गया और एक दृष्टि से विघटनवाद को भी प्रश्रय दिया गया। जितेन्द्र सिंह जी ने सही कहा कि एक 'intellectual terrorism' का और भारत विरोधी भाषा का प्रयोग कोई करता है, तो उसको बड़ा सम्मान देने की एक पद्धति भी कई और तबकों में चलती रही, उसका भी संदर्भ है। मगर मुझे इसमें एक दूसरी बात भी लगती है। क्या हमारे अंदर कोई बेवजह guilt conscious है? Are we haunted by some kind of an unnecessary, totally unfounded, un-required guilt conscience? मुझे याद आता है, देश के एक पूर्व गृह मंत्री ने एक बार famously यह कहा था, "Kashmir is the saga of broken promises." सदन जानता है कि यह किसने कहा था। अगर एक गृह मंत्री को पुराने जमाने में यह, 'Saga of broken promises', लगता था, तो सवाल यह

उठता है कि ये promises किसने दिए और किसने break किए? और फिर जो promises दिए गए, क्या वे सही promises थे? इसमें कई सारी चीज़ें और भी हैं। अभी हम अलगाववाद की चर्चा करते हैं और यह भी बोलते हैं कि कश्मीर का एक विशेष स्थान है। आर्टिकल 370 की चर्चा भी होती है। मैं सदन को बताना चाहता हूं कि इसी आर्टिकल 370 की आड़ में कई विषयों को कश्मीर तक पहुंचने ही नहीं दिया गया। आज भी 73rd and 74th amendments कश्मीर में लागू नहीं हैं।

उपसभाध्यक्ष महोदय, हम सब जानते हैं कि कश्मीर में 14 per cent Scheduled tribes की पॉपुलेशन है, मगर उनको वहां पर राजनैतिक आरक्षण उपलब्ध नहीं है। 'Right to Education', जिसके बारे में हमारे विपक्ष के मित्र बार-बार उल्लेख करते हैं, वह कश्मीर में लागू नहीं है। जिस समय यह निर्णय लागू किया गया था, उस समय वहां पर भाजपा की सरकार नहीं थी। मैं मानता हूं कि इस तरीके से विघटनवाद को प्रश्रय देने की व्यवस्था पहले हो गई, जिसके बारे में हमें निश्चित रूप से सोचना चाहिए।

उपसभाध्यक्ष महोदय, यहां पर कई बातों का जिक्र आया और कई बातों का जिक्र नहीं आया। 8 जुलाई को Burhan Wani की घटना हुई। यह Burhan Wani कौन है? उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं आपको बताना चाहता हूं, आप जरा उसका twitter profile देखिए। उसने tweet किया था, जिसमें, जवान की जब मृत्यु होती है, तब उसको celebrate करने की बात थी। जब चुनाव हुए थे, तब कश्मीर की जनता बड़ी मात्रा में voting के लिए सामने आई, उसके लिए वह कहता है कि इस्लाम की नज़र में यह हराम है। यह कहां की बात है?

केवल इतना ही नहीं, उसने अपनी मृत्यु के कुछ ही दिन पहले यह बात कही थी, "There is only one solution, gun solution, gun solution, gun solution," अगर इस Burhan Wani को महिमामंडित करने की कोशिश होती है, तो क्या हम चुप बैठें? उपसभाध्यक्ष महोदय, यह नहीं हो सकता। जिस दिन यह घटना हुई, मैं आपको उसके बाद की घटना का जिक्र करना चाहता हूं, जो कश्मीर में हुई। वहां पर एक Kokernag नाम का स्थान है, उसके निकट एक Bamdoora नाम का गांव है। महोदय, मैं आपको बताना चाहता हूं कि वहां उद्यमिता का जो वातावरण बना है, तो वहां एक कश्मीरी युवक, जो first generation entrepreneur है, उसने Italian Apple की खेती लगाई। चूंकि उसका उद्घाटन हमारी पीडीपी की नेता और वर्तमान मुख्यमंत्री जी ने किया था, इसलिए जैसे ही Burhan Wani का सारा प्रसंग प्रारम्भ हुआ, उसके बाद उसका सारा बगीचा उखाड़ कर फेंक दिया गया और उसमें आग लगा दी गई। ...**(समय की घंटी)**... केवल उसके बगीचे में ही आग नहीं लगाई गई, बल्कि लगभग 10-12 घरों को भी उसी पद्धति से जला दिया गया। यह कौन सी राजनीति होती है? ये जलाने वाले कौन थे या किन राजनीतिक दलों के लोग थे? मैं मानता हूं कि इन प्रश्नों के जवाब निश्चित रूप से मिलने चाहिए।

उपसभाध्यक्ष महोदय, हम देखते हैं और यहां पर यह जिक्र भी हुआ है, यह सवाल जम्मू का भी है, लद्दाख का भी है और कश्मीर वैली का भी है। वहां जो समस्या है, वह वैली के मुट्ठी भर लोगों के कारण है और आमतौर पर सिर्फ वैली में ही है। जैसे जम्मू में भठिंडी नाम का स्थान है। कई सारे लोग, जो मूलतः जम्मू के रहने वाले नहीं थे, उन्होंने वहां आकर एक township बना ली। वैली में ऐसी township, जिसमें मूलतः वैली के लोग नहीं हैं, क्यों नहीं बन सकती?

[डा. विनय पी. सहस्रबुद्धे]

महोदय, हम जानते हैं कि पुणे, गुवाहाटी और बेंगलुरु जैसे शहर, जब देश के सारे लोग वहां आए, तब prosper हुए और जो आज IT centres बन चुके हैं। यह काम वैली में भी क्यों नहीं हो सकता है? यह काम वैली में भी होना चाहिए, क्योंकि वहां की जनता विकास की प्यासी है, विकास की भूखी है और मैं मानता हूं कि विकास का अधिकार उन सबको भी मिलना चाहिए। ...**(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष (श्री भुवनेश्वर कालिता): अब आप समाप्त कीजिए।

डा. विनय पी. सहस्रबुद्धे: सर, मैं समाप्त कर रहा हूं। जब पुराने-पुराने लोग भी समय की सीमा को क्रॉस कर जाते हैं, तो मैं तो नया हूँ, इसलिए आप एक बार थोड़ा माफ कर दीजिए। It is a maiden violation of rules.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHUBANESWAR KALITA): There is nothing like maiclen voilation of rules. Rules are to be obeyed.

DR. VINAY P. SAHASRABUDDHE: I know, Sir. Just give me two minutes. मैं केवल इतना ही कहना चाहता हूं कि वहां की सरकार ने, जो पीडीपी और बीजेपी की सरकार है, इतनी विपरीत परिस्थितियों के बावजूद वहां NEET and CET के entrance exams को बहुत तरीके से संपन्न करवाया। वहां के हर एक जिले में, जितने भी Deputy Commissioner के offices हैं, वे एक helpline centre के रूप में काम कर रहे हैं।

कश्मीर में बहुत अच्छा tourist season चल रहा था, जो दुर्भाग्यवश अब disturb हो गया है, लेकिन इसके बावजूद अमरनाथ की यात्रा बहुत अच्छे तरीके से चल रही है। यहां पर pellet का उल्लेख भी आया है, मगर यह pellet तो 2010 में भी उपयोग में लाया गया था, इसलिए यह केवल इस सरकार के कारण आया है, मैं ऐसा नहीं मानता हूं।

उपसभाध्यक्ष महोदय, अंत में मैं केवल इतना ही कहना चाहता हूं, हम सब जानते हैं कि जब कश्मीर में कबाइलियों का हमला हुआ था, तब एक मक़बूल शेरवानी नाम का कश्मीर का सुपुत्र था। जो कबाइली आए थे, उसने उनको गुमराह करके, उनके हमले से श्रीनगर को बचाने की कोशिश की थी, लेकिन जब उनके ध्यान में यह आया, तो उसको फांसी के फंदे पर चढ़ा दिया गया। मैं पूछना चाहता हूं और देश पूछना चाहता है कि मक़बूल शेरवानी का जो कश्मीर था, वह मक़बूल भट्ट के कश्मीर में कैसे तब्दील हो गया? मैं पूछना चाहता हूं कि मास्टर अब्दुल अज़ीज जैसा एक व्यक्ति जो देशभक्त था, उसका जो कश्मीर था, वह बुरहान वानी के कश्मीर में कैसे तब्दील हो गया? किन का राज चला था, 60 सालों तक किसने कश्मीर की एकात्मता के साथ खिलवाड़ किया? देश इसका जवाब मांगता है। मैं मानता हूँ और चर्चा में बहुत बार बात आई, 'पॉलिटिकल सॉल्युशन', 'पॉलिटिकल सॉल्युशन', इसमें बहुत सारे विषयों को जितेन्द्र सिंह जी ने, माननीय मंत्री जी ने स्पष्ट किया कि चर्चा किससे करें, कौन से बिन्दुओं पर करें। अंत में देश की एकात्मता के साथ खिलवाड़ करने वालों के मन में कौन से ऐसे सवाल हैं, जिनके जवाब हम दे सकते हैं? बिल्कुल नहीं दे सकते। कश्मीर के विकास के बारे में अगर किसी के मन में सवाल हैं, तो ऐसे कौन से सवाल हैं, जिनका समाधान हम सब मिलकर ढूंढ नहीं सकते? निश्चित रूप से ढूंढ सकते हैं। बहुत-बहुत धन्यवाद।

मीर मोहम्मद फ़ैयाज (जम्मू और कश्मीर): वाइस चेयरमैन साहब, इस वक्त जो कश्मीर का मौजूदा हालत है, वह बहुत ही गंभीर है। मैं सभी पार्टीज़ का शुक्रिया अदा करूंगा, जिन्होंने कश्मीर में जो हालात बने हुए हैं, उनको लेकर यहां चर्चा में हिस्सा लिया, चिंता जाहिर की। वहां पर 32 दिनों से बंदिश-ए-कर्फ्यू है। इस वक्त कश्मीर के लोग टीवी पर देख रहे हैं, हरेक ने राज्य सभा का चैनल लगाया हुआ है और वह देख रहा है कि आज हमारे इस देश के इस हाउस में कश्मीर पर चर्चा हो रही है। आज़ाद साहब ने कहा, जम्मू कश्मीर पर शायद आज चौथा दिन है, उस हाउस में भी बात हुई, यहां भी हुई। बात किससे करें? यह बात हर जगह उठती है, डेली हमारे टीवी चैनल्स पर उठती है कि अलगाववादियों से बात क्यों करें? लवाय साहब ने कहा, 1947 से लेका 1987 तक, जिनको आज हम अलगाववादी कहते हैं, गिलानी साहब, यह वहां पर हमारे एमएलए थे। यह जो पाकिस्तान में सईद सलाउद्दीन बैठा है, यह बटमालू से इलेक्शन लड़ रहा था, उसका असली नाम मोहम्मद युसुफ शाह है। यह जो यासिन मलिक, कश्मीर में लिबरेशन फ्रंट का चीफ है, वह उस वक्त मोहम्मद युसुफ शाह का चीफ एजेंट था। सर, कहीं न कहीं शायद हमसे भी ज्यादतियां हुई हैं, जिसका खामियाजा आज कश्मीर की अवाम उठा रही है। 1987 में जब वहां पर इलेक्शन में धांधलियां हुईं, यहां पर कांग्रेस की सरकार थी। जम्मू-कश्मीर में आपने पीएम से सीएम बनाया, जम्मू-कश्मीर के लोगों ने वह भी एक्सेप्ट किया। फिर बात यहां इलेक्शन पर पहुंची, जिस दिन काउंटिंग होती थी, जिस गाड़ी में यहां से वोटों के बक्से जाते थे, वहां दूसरी गाड़ी ही अनलोड हुई होती थी। जिनको हम अलगाववादी कहते हैं, उनको अलगाववादी बनाने में हमने भी शायद कहीं गलती की होगी। आज हम कहते हैं कि हम इनसे बात नहीं करेंगे। 2002 में जब लाल किले से जनाब अटल बिहारी वाजपेयी साहब ने ऐलान किया कि जम्मू-कश्मीर में अब जो चुनाव होंगे, वे फेयर होंगे। 2002 में जब चुनाव हुए, तो वहां कांग्रेस और पीडीपी की सरकार बनी। हमारे लीडर जनाब मुफ्ती मोहम्मद सईद साहब वहां के चीफ मिनिस्टर बने। 1999 में पाकिस्तान और हिंदुस्तान के बीच में कारगिल की जंग हुई। उसके बावजूद जब उस वक्त के हमारे वजीरे-ए-आज़म, जब यहां पर एनडीए की सरकार थी, जनाब अटल बिहारी वाजपेयी साहब कश्मीर आए, तो उन्होंने कश्मीर से यह आवाज दी कि हम पाकिस्तान के साथ दोस्ती का हाथ बढ़ाएंगे। हुर्रियत कॉंफ्रेंस के साथ बातचीत शुरू की, 'पोटा' खत्म किया, रास्ते खोलने की बात की। 2002 से 2005 तक वहां पर जो सरकार चली, आपको अगर याद होगा, आज पाकिस्तान के प्रधान मंत्री ने यूएनओ को ख़त लिखा, लेकिन उस वक्त के पाकिस्तान के जनरल मुशर्रफ, जब हालात ऐसे बने, तब उन्होंने कहा कि अब United Nations Resolution की जरूरत नहीं है। 2005 में हमारे आज़ाद साहब वहां के मुख्य मंत्री बने। यहां पर भी सरकार चेंज हुई, यूपीए की सरकार बनी। डा. मनमोहन सिंह जी हमारे वज़ीरे-ए-आज़म बने। इन्होंने शुरूआत की। 2006 में round table conference हुई, वर्किंग ग्रुप बना, जिसमें हमारे ऑनरेबल चेयरमैन साहब एक कमेटी के चेयरमैन थे। 2008 में बदकिस्मती से हालात खराब हुए। यहां से all-party delegation चला गया, वहां लोगों से बात की। 2008 में वहां पर election हुए और नेशनल कॉंफ्रेंस तथा कांग्रेस की सरकार बनी। 2010 में फिर हालात खराब हुए और 120 लड़के शहीद हुए।

आज यह जो पेलेट गन की बात हो रही है, मैं बड़ा खुश हुआ कि हमारे ऑनरेबल एक्स होम मिनिस्टर साहब आज यहां पर हैं। जब मैं सवेरे आया था, तो मैंने इनको बाहर जाते हुए देखा। मैं बड़ा खुश हुआ कि आज कश्मीर पर जो चर्चा है, हमारे एक्स होम मिनिस्टर साहब ने इसमें बहुत कोशिशें

[मीर मोहम्मद फ़ैयाज]

की हैं, क्योंकि पिछले कुछ महीनों से उन्होंने कुछ बयान एनडी टीवी पर दिया, मैं उसको सुन रहा हूँ, शायद मुझे, इंश अल्लाह, यह उम्मीद है कि आज वे इस हाउस में कुछ बात कहेंगे कि वहां पर क्या-क्या चीज़ें हुईं, जब ये वहां पर आए थे और उस पर भी बात होगी।

सर, यह जो वर्किंग ग्रुप बना था, जिसमें सभी पार्टीज़ के लोग थे। उस पर क्या हुआ? उस पर आज़ाद साहब ने रोशनी डाली, लेकिन कितना हुआ? उन्होंने कहा कि हमने पीड़ितों के लिए जम्मू के जगती में कुछ बनाया। उन्होंने यह कहा कि हमने कुछ लोगों को नौकरियां दी, लेकिन इसमें जो बाकी चीजें थीं, उनके बारे में उन्होंने नहीं कहा, जो हमने, यानी कमेटी ने वहां पर कश्मीरियों से वादे किए थे, जिसमें सारी पार्टीज़ के लोग थे, चाहे कांग्रेस हो, बीजेपी हो, एनसीपी हो या सीपीएम हो, जितनी भी पार्टीज़ थीं, उन सबके लोग थे, लेकिन उस पर कोई अमल नहीं हुआ।

हमारे ऑनरेबल एक्स होम मिनिस्टर साहब यहीं हैं। आज हम कह चुके हें कि देश में जितनी आज़ादी गुजरात के लोगों को है, जितनी आज़ादी राजस्थान के लोगों को है, जितनी आज़ादी दिल्ली के लोगों को है, उतनी ही आज़ादी जम्मू और कश्मीर के लोगों को भी है, लेकिन आप देख लीजिए, इस वक्त जो मसला है, यह एक सियासी मसला है। अभी यादव साहब ने कहा कि हमारा जो उस पार कश्मीर है, वहां भी कश्मीर है और यहां कश्मीर है, इसलिए मसला तो है। इसमें 'AFSPA' की बात उठी थी, इसमें लिखा कि जहां-जहां हालात ठीक हुए - जम्मू में कौन-से हालात खराब थे, श्रीनगर में कौन-से हालात खराब थे? उस वक्त के हमारे मुख्य मंत्री, जनाब उमर अब्दुल्ला साहब ने कहा कि हमारा सेक्रेटेरिएट 6 महीने जम्मू में रहता है और 6 महीने कश्मीर में रहता है। ...(**समय की घंटी**)... कुछ जगहों पर जहां अभी जरूरत नहीं है, वहां से हम इसको हटाएंगे।

उपसभाध्यक्ष (श्री भुवनेश्वर कालिता)ः आपका समय समाप्त हो चुका है, अब आप और कितना समय लेंगे?

मीर मोहम्मद फ़ैयाजः सर, मैं दो-तीन मिनट में अपनी बात समाप्त कर दूंगा।

उपसभाध्यक्ष (श्री भुवनेश्वर कालिता)ः ठीक है, आप दो-तीन मिनट में अपनी बात समाप्त कीजिए।

मीर मोहम्मद फ़ैयाजः सर, जब-जब जम्मू और कश्मीर में हालात खराब होते हैं, तब-तब हमें कश्मीर की याद आती है। 2010 में जब हालात खराब हुए, तो सब कुछ कहा गया कि ये-ये करेंगे। ठीक है, अगर हमें हुर्रियत वालों से बात नहीं करनी थी, उनकी बात नहीं माननी थी, यह बात तो हमारी अपनी पार्टी ने कही थी। हमने कही थी, सभी पार्टियों ने कही थी, इन पर क्यों नहीं अमल हुआ, वर्किंग ग्रुप की सिफारिशों पर आज तक क्यों नहीं अमल हुआ? आज अगर कश्मीर जल रहा है, वह इसलिए जल रहा है, क्योंकि 2008 और 2010 में जितने भी यहां से डेलीगेशन और interlucuters गए थे, उनकी रिपोर्ट कहां गई? लोग यह देखते हैं। सर, मैं एक और बात यहां पर कहूंगा। अफज़ल गुरु को सुप्रीम कोर्ट ने फांसी की सजा सुनाई। ऐसी कोई बात नहीं है क्योंकि सुप्रीम कोर्ट जिसको भी जो सजा

सुनाएगी, वह उसको लगेगी। लेकिन कश्मीर में यह बात उठी है कि देश में और भी लोग थे, जिन्होंने ऐसे कारनामे किए थे। हमारे वज़ीरे-ए-आज़म का भी एक जो कहीं का मामला था, वह मुझे याद नहीं है, उनके मुज़रिम जेल में हैं। कश्मीर का अफज़ल गुरु था, जिसका सीरियल न. 27 था। उसको पहले क्यों फांसी दी गई? कश्मीर के लोगों में इस वक्त शायद यह बात उठी कि हमें दूसरी नजर से देखा जाता है। देश के बाकी रियासतों में जो लोग हैं, उनमें और हम में फर्क है। जो लोग इस माहौल को बिगाड़ने में लगे हैं, उनके लिए तो यह एक अच्छा प्वाइंट है। यह देखो, जिस देश की बात आप करते हो उस देश में देखो कि उसको दस साल पहले फांसी की सजा मिली है और किसी को दस साल के बाद, लेकिन नम्बर किस का लाया गया, उसका, क्योंकि वह कश्मीरी है। यह एक नेगेटिव मैसेज जाता है। इसलिए मैं कहता हूं कि कुछ चीज़ें जो हमने खुद की हैं, उनका खामियाजा आज वहां के लोग भुगत रहे हैं। वहां बच्चे दूध के लिए तरस रहे हैं, बुजुर्गों को अगर कहीं जाना होगा तो वे निकल नहीं सकते हैं। कश्मीर के लोग परेशान हैं। गली-गली, कूचे-कूचे में एक ही नारा है, वह है आज़ादी। यहां कोई कहे या न कहे, मैं कश्मीर का हूं और मैं वह कहूंगा। मैं अभी कश्मीर से आया। मैं अपने घर से रात के तीन बजे निकला। इतना गुस्सा है उनमें, क्यों है गुस्सा? यह गुस्सा इसलिए है कि जो वायदे हमने उनके साथ किए, हमने कोई भी नहीं निभाए। अगर हमने निभाए होते तो शायद जो रास्ता, जो बातचीत, जो पीस प्रोसेस ज़नाम अटल बिहारी वाजपेयी जी ने शुरू किया था, अगर हमने उसको आगे बढ़ाया होता, तो जैसा हमारे ऑनरेबल कर्ण सिंह जी ने भी कहा कि बातचीत होती और मसले का समाधान निकलता।

मध्य प्रदेश में कल जो प्रधान मंत्री साहब ने बयान दिया, हम उसका वेलकम करते हैं। उन्होंने कहा कि कश्मीर के लोग हमारे अपने लोग हैं, बच्चों के हाथ में लैपटॉप होना चाहिए। लेकिन इसको अमल में लाने की जरूरत है और ऐसा नहीं होना चाहिए जैसा पहले हुआ। वहां पर जो हमारी सिक्योरिटी फोर्सेज हैं, जहां पर उनको लैंड की जरूरत है, वहां वे रखें, जो इसमें है। जहां तक पावर प्रोजेक्ट्स की बात है, हमने पाकिस्तान के साथ जो हमारे दरिया थे, एन.एच.पी.सी. से मिलकर हमने कुछ पावर प्रोजेक्ट बनाए। उसका ज्यादा हिस्सा जम्मू-कश्मीर को मिलना चाहिए था। वह क्यों नहीं मिला? वह भी इसमें है। इन सभी चीजों पर अमल करने की जरूरत है। आज यहां पर सभी पार्टियों ने जो बात कही, मैं ऑनरेबल होम मिनिस्टर साहब से यही कहूंगा कि जम्मू-कश्मीर के लोग परेशान हैं। जिस जम्मू से कश्मीर, जिस दिल्ली से कश्मीर एक हजार गाड़ियां और ट्रक डेली जाते थे, आज तीस दिन से एक भी गाड़ी नहीं गई। 2010 में तीन महीने रहे। आप खुद ही देख लीजिए उन लोगों का क्या हाल होगा। वहाँ बच्चे एक महीने से स्कूल नहीं गए। मैं यूपीए के समय के प्राइम मिनिस्टर, ऑनरेबल डा. मनमोहन सिंह साहब का शुक्रगुज़ार हूँ कि इन्होंने बाहर की रियासतों के कॉलेजों में हर साल कश्मीर के 5,000 बच्चों को पढ़ने के लिए भेजने का एक प्रोग्राम बनाया। सर, मैं जब इस हाउस में आया, उस समय उन बच्चों को, जो यहाँ के कॉलेजों में तीन-तीन, चार-चार सालों से पढ़ रहे थे, वहाँ से निकाला गया। उनसे कहा गया कि ये कॉलेज यहाँ पर रजिस्टड नहीं हैं। तब मैं यहाँ स्मृति जी से मिला और हमारी इस वक्त की मुख्य मंत्री, मेहबूबा जी भी मिलीं और बताया कि ये बच्चे यहाँ जंतर-मंतर पर बैठे हैं, आपने इनको इन कॉलेजों में क्यों भेजा? यहाँ एक मेवाड़ यूनिवर्सिटी है, लेकिन उसको किसी ने नहीं देखा। उन बच्चों को एनजीओ के थ्रू भेजा गया था और उनसे 30-30 हज़ार रुपये

[मीर मोहम्मद फ़ैयाज]

लिए थे। जब तीन साल के बाद उनको उन कॉलेजों से निकाला गया और वे 5-5 हज़ार बच्चे यहाँ से गए, तो उन्होंने वहाँ जाकर कहा कि हमारे साथ धोखा हुआ है। आज मैं जावडेकर साहब और आज की गवर्नमेंट का शुक्रिया अदा करता हूँ कि इस साल इन्होंने एआईसीटीई के चेयरमैन को यह कहकर हर डिस्ट्रिक्ट में भेजा कि आप कश्मीरी यूथ के साथ डायरेक्ट बात कीजिए और उनसे कहिए कि हम आपको इस-इस कॉलेज में भेजेंगे। इस साल, वहाँ के हालात इतने खराब होने के बावजूद, वहाँ 8,000 बच्चे लाइन में लगे हैं कि हम जाएँगे, क्योंकि इस साल हमें पहली बार ऐसा लगा कि कोई हमें यह विश्वास दिला रहा है कि हम आपको जहाँ भेज रहे हैं, वहाँ आप सेफ रहेंगे। जो बच्चे यहाँ से गए, उनका आप रिकॉर्ड निकालकर देखिए। मैं आपके माध्यम से होम मिनिस्टर साहब से पूछना चाहूँगा कि ऐसे कितने बच्चे हैं, जिनको उन कॉलेजों से तीन-तीन साल के बाद निकाला गया? वे बच्चे वापस गए और उनकी जिन्दगी खत्म हो गई। ...(समय की घंटी)...

उपसभाध्यक्ष (श्री भुवनेश्वर कालिता)ः अब आप समाप्त कीजिए।

मीर मोहम्मद फ़ैयाजः सर, वे कहाँ जाएंगे? आज हम बुरहान वानी की बात करते हैं। हमें इनको बुरहान वानी नहीं बनने देना है। आतंकवादी क्यों बनता है, इसको देखने की जरूरत है।

सर, मैं कश्मीर के उस कुपवाड़ा डिस्ट्रिक्ट से हूँ, जहाँ ज्यादातर इसकी आवाजाही है और जहाँ से पाकिस्तान बिल्कुल नजदीक है। मैंने इन चीज़ों को देखा है। एक टाइम वह भी था जब कश्मीर के लड़के डेली पाकिस्तान जाते थे और तब पाकिस्तान को भी हमारी ओर access करने का मौका मिला। सर, यह मसला है और इस मसले को ऐड्रेस करने की जरूरत है। आज मौका हे कि हम इस किताब को बन्द करें। इस किताब और इस मसले को हम कश्मीरियों के साथ बात करके हल करें, क्योंकि यह जितना चलेगा, उतनी इसकी प्रॉब्लम है। थैंक्यू सर।

†**فیّاض (جموں و کشمیر):** وائس چیئرمین صاحب، اس وقت جو

...دہ حالت ہے، وہ بہت ہی گمبھیر ہے۔ میں سبھی پارٹیز کا شکریہ

...ہوں نے کشمیر میں جو حالات بنے ہوئے ہیں، ان کو لے کر یہاں

...لیا، چنتا ظاہر کی۔ وہاں پر بتّیس دنوں سے بندش کرفیو ہے۔ اس

...لوگ ٹی-وی- پر دیکھ رہے ہیں، ہر ایک نے راجیہ سبھا کے چینل

...وہ دیکھ رہا ہے کہ آج ہمارے اس دیش کے اس ہاؤس میں کشمیر

...ہے۔ آزاد صاحب نے کہا، جموں کشمیر پر آج شاید چوتھا دن ہے،

...ہی بات ہوئی، یہاں بھی ہوئی، بات کس سے کریں؟ یہ بات ہر جگہ

†Transliteration in Urdu script.

اٹھتی ہے، روزانہ ہمارے ٹی.وی. چینلس پر اٹھتی ہے کہ الگاؤ وادیوں سے بات کیوں کریں؟ لوانے صاحب نے کہا، 1947 سے لیکر 1987 تک، جن کو آج ہم الگاؤ وادی کہتے ہیں، گیلانی صاحب، وہ یہاں پر ہمارے ایم.ایل.اے. تھے۔ یہ جو پاکستان میں سعید صلاح الدین بیٹھا ہے، وہ بٹمالو سے الیکشن لڑ رہا تھا، اس کا اصلی نام محمد یوسف شاہ ہے۔ یہ جو یسین ملک، کشمیر میں لبریشن فرنٹ کا چیف ہے، وہ اس وقت محمد یوسف شاہ کا چیف ایجنٹ تھا۔ سر، کہیں نہ کہیں شاید ہم سے بھی زیادتیاں ہوئی ہیں، جس کا خمیازہ آج کشمیر کی عوام اٹھا رہی ہے۔ 1987 میں جب وہاں پر الیکشن میں دھاندلیاں ہوئیں، یہاں پر کانگریس کی سرکار تھی۔ جموں کشمیر میں آپ نے پی.ایم. سے سی.ایم. بنایا، جموں کشمیر کے لوگوں نے وہ بھی ایکسیپٹ کیا۔ پھر بات یہاں الیکشن پر پہنچی، جن دن کاؤنٹنگ ہوتی تھی، جس گاڑی میں یہاں سے ووٹوں کے بکسے جاتے تھے، وہاں دوسری گاڑی ہی ان۔لوڈ ہوئی ہوتی تھی۔ جن کو ہم الگاؤوادی کہتے ہیں، ان کو الگاؤوادی بنانے میں ہم نے بھی شاید کہیں غلطی کی ہوگی۔ آج ہم کہتے ہیں کہ ہم ان سے بات نہیں کریں گے۔ 2002 میں جب لال قلعے سے جناب اٹل بہاری واجپئی صاحب نے اعلان کیا کہ جموں کشمیر میں اب جو چناؤ ہوں گے، وہ فیئر ہوں گے۔ 2002 میں جب چناؤ ہوئے، تو وہاں کانگریس اور پی.ڈی.پی. کی سرکار بنی۔ ہمارے لیڈر جناب مفتی محمد سعید صاحب وہاں کے چیف منسٹر بنے۔ 1999 میں پاکستان اور ہندوستان کے بیچ میں کارگل کی جنگ ہوئی۔ اس کے باوجود جب اس وقت کے ہمارے وزیر اعظم، جب یہاں پر این.ڈی.اے. کی سرکار تھی، جناب اٹل بہاری واجپئی صاحب کشمیر آئے، تو انہوں نے کشمیر سے یہ آواز دی کہ ہم پاکستان ساتھ دوستی کا ہاتھ بڑھائیں گے۔

[मीर मोहम्मद फ़ैयाज]

حریت کانفرنس کے ساتھہ بات چیت کی، 'پوٹا' ختم گیا، راستے کھولنے کی بات کی۔ 2002 سے 2005 تک وہاں پر جو سرکار چلی، آپ کو اگر یاد ہوگا، آج پاکستان کے پردھان منتری نے یو۔این۔او۔ کو خط لکھا، لیکن اس وقت کے پاکستان کے جنرل مشرف، جب حالات ایسے بنے، تب انہوں نے کہا کہ اب یونائیٹیڈ نیشنس ریزلیوشن کی ضرورت نہیں ہے۔ 2005 میں ہمارے آزاد صاحب وہاں کے مکھیہ منتری بنے۔ یہاں پر بھی سرکار چینج ہوئی، یو۔پی۔اے۔ کی سرکار بنی۔ ڈاکٹر منموہن سنگھہ جی ہمارے وزیر اعظم بنے۔ انہوں نے شروعات کی۔ 2006 میں راؤنڈ ٹیبل کانفرنس ہوئی، ورکنگ گروپ بنا، جس میں ہمارے آنریبل چیئرمین صاحب ایک کمیٹی کے چیئرمین تھے۔ 2008 میں بدقسمتی سے حالات خراب ہوئے۔ یہاں سے آل پارٹی ڈیلی گیشن چلا گیا، وہاں لوگوں سے بات کی۔ 2008 میں وہاں پر الیکشن ہوئے اور نیشنل کانفرنس و کانگریس کی سرکار بنی۔ 2010 میں پھر حالات خراب ہوئے اور 120 لڑکے شہید ہوئے۔

آج یہ جو پیلیٹ گن کی بات ہو رہی ہے، میں بڑا خوش ہوا کہ ہمارے آنریبل ایکس ہوم منسٹر صاحب آج یہاں پر ہیں۔ جب میں سویرے آیا تھا، تو میں نے ان کو باہر جاتے ہوئے دیکھا۔ میں بڑا خوش ہوا کہ آج کشمیر پر جو چرچا ہے، ہمارے ایکس ہوم منسٹر صاحب نے اس میں بہت کوششیں کی ہیں، کیوں کہ پچھلے کچھہ مہینوں سے انہوں نے کچھہ بیان این۔ڈی۔ ٹی وی پر دیا، میں اس کو سن رہا تھا، شاید مجھے، انشاءاللہ، یہ امید ہے کہ آج وہ اس ہاؤس میں کچھہ بات کہیں گے کہ وہاں پر کی کیا چیزیں ہوئیں، جب یہ وہاں پر آئے تھے اور اس پر بھی بات ہوگی۔

سر، یہ جو ورکنگ گروپ بنا تھا، جس میں سبھی پارٹیز کے لوگ تھے، اس پر کیا ہوا؟ اس پر آزاد صاحب نے روشنی ڈالی، لیکن کتنا ہوا؟ انہوں نے کہا کہ ہم نے پیڑتوں کے لئے جموں کے جگتی میں کچھ بنایا۔ انہوں نے یہ کہا کہ ہم نے کچھ لوگوں کو نوکریاں دیں، لیکن اس میں جو باقی چیزیں تھیں، ان کے بارے میں انہوں نے نہیں کہا، جو ہم نے، یعنی کمیٹی نے وہاں پر کشمیریوں سے وعدے کئے تھے، جس میں ساری پارٹیز کے لوگ تھے، چاہے کانگریس ہو، بی۔جے۔پی۔ ہو، این۔سی۔پی۔ ہو یا سی۔پی۔ایم۔ ہو، جتنی بھی پارٹیز تھیں، ان سب کے لوگ تھے، لیکن اس پر کوئی عمل نہیں ہوا۔

ہمارے آنریبل ایکس ہوم منسٹر صاحب یہیں ہیں۔ آج ہم کہہ رہے ہیں کہ دیش میں جتنی آزادی گجرات کے لوگوں کو ہے، جتنی آزادی راجستھان کے لوگوں کو ہے، جتنی آزادی دہلی کے لوگوں کو ہے، اتنی ہی آزادی جموں اور کشمیر کے لوگوں کو بھی ہے، لیکن آپ دیکھہ لیجئے، اس وقت جو مسئلہ ہے، یہ ایک سیاسی مسئلہ ہے۔ ابھی یادو صاحب نے کہا کہ ہمارا جو اس پار کشمیر ہے، وہاں بھی کشمیر ہے اور یہاں بھی کشمیر ہے، اس لئے مسئلہ تو ہے۔ اس میں 'AFSPA' کی بات اٹھی تھی، اس میں لکھا کہ جہاں جہاں حالات ٹھیک ہونے، - جموں میں کون سے حالات خراب تھے، شرینگر میں کون سے حالات خراب تھے؟ اس وقت کے ہمارے مکھیہ منتری، جناب عمر عبداللہ صاحب نے کہا کہ ہمارا سیکریٹریٹ چھہ مہینے جموں میں رہتا ہے اور چھہ مہینے کشمیر میں رہتا ہے ...(وقت کی گھنٹی)... کچھہ جگہوں پر جہاں ابھی ضرورت نہیں ہے، وہاں سے ہم اس کو ہٹائیں گے۔

اپ سبھا ادھیکش (شری بھونیشور کالیتہ) : آپ کا وقت ختم ہو چکا ہے، اب آپ اور کتنا وقت لیں گے؟

[मीर मोहम्मद फ़ैयाज]

جناب میر محمد فیّاض : سر، میں دو تین منٹ میں اپنی بات ختم کر دوں گا۔

اپ سبھا ادھیکش (شری بھونیشور کالیتہ) : ٹھیک ہے، آپ دو تین منٹ میں اپنی بات ختم کیجئے۔

جناب میر محمد فیّاض : سر، جب جب جموں اور کشمیر کے حالات خراب ہوتے ہیں، تب تب ہمیں کشمیر کی یاد آتی ہے۔ 2010 میں جب حالات خراب ہوئے، تو سب کچھ کہا گیا کہ یہ یہ کریں گے۔ ٹھیک ہے، اگر ہمیں حریت والوں سے بات نہیں کرنی تھی، ان کی بات نہیں ماننی تھی، یہ بات تو ہماری اپنی پارٹی نے کہی تھی۔ ہم نے کہی تھی، سبھی پارٹیوں نے کہی تھی، ان پر کیوں نہیں عمل ہوا، ورکنگ گروپ کی سفاشوں پر آج تک کیوں نہیں عمل ہوا؟ آج اگر کشمیر جل رہا ہے، وہ اس لیے جل رہا ہے، کیوں کہ 2008 او 2010میں جتنے بھی یہاں سے ڈیلی گیشن اور interlucuters گئے تھے، ان کی رپورٹ کہاں گئی؟ لوگ یہ دیکھتے ہیں۔ سر، میں ایک اور بات یہاں پر کہوں گا۔ افضل گرو کو سپریم کورٹ نے پھانسی کی سزا سنائی۔ ایسی کوئی بات نہیں ہے کیوں کہ سپریم کورٹ جس کو بھی جو سزا سنائے گی، وہ اس کو لگے گی۔ لیکن کشمیر میں یہ بات اٹھی ہے کہ دیش میں اور بھی لوگ تھے، جنہوں نے ایسے کارنامے کئے تھے۔ ہمارے وزیراعظم کا بھی ایک جو کہیں کا معاملہ تھا، وہ مجھے یاد نہیں ہے ان کے مجرم جیل میں ہیں۔ کشمیر کا افضل گرو تھا، جس کا سیریل نمبر 27 تھا۔ اس کو پہلے کیوں پھانسی دی گئی؟ کشمیر کے لوگوں میں اس وقت شاید یہ بات اٹھی کہ ہمیں دوسری نظر سے دیکھا جاتا ہے۔ دیش کی باقی ریاستوں میں جو لوگ ہیں، ان میں اور ہم میں فرق ہے۔ جو لوگ اس ماحول کو بگاڑنے میں لگے ہیں، ان کے لیے تو یہ ایک اچھا پوائنٹ ہے۔ یہ دیکھو، جس دیش کی بات آپ کرتے ہو اس دیش میں

دیکھو کہ اس کو دس سال پہلے پھانسی کی سزا ملی ہے اور کسی کو دس سال کے بعد، لیکن نمبر کس کا لایا گیا، اس کا، کیوں کہ وہ کشمیری ہے۔ یہ ایک نگیٹیو میسیج جاتا ہے۔ اسلئے میں کہتا ہوں کہ کچھ چیزیں جو ہم نے خود کی ہیں، ان کا خمیازہ آج وہاں کے لوگ بھگت رہے ہیں۔ وہاں بچے دودھ کے لیے ترس رہے ہیں، بزرگوں کو اگر کہیں جانا ہوگا تو وہ نکل نہیں سکتے ہیں۔ کشمیر کے لوگ پریشان ہیں۔ گلی گلی، کوچے کوچے میں ایک ہی نعرہ ہے، وہ ہے آزادی۔ یہاں کوئی کہے یا نہ کہے، میں کشمیر کا ہوں میں وہ کہوں گا۔ میں ابھی کشمیر سے آیا۔ میں اپنے گھر سے رات کے تین بجے نکلا۔ اتنا غصہ ہے ان میں، کیوں ہے غصہ؟ یہ غصہ اس لیے ہے کہ جو وعدہ ہم نے ان کے ساتھ کیے، ہم نے کوئی بھی نہیں نبھائے۔ اگر ہم نے نبھائے ہوتے تو شاید جو راستہ، جو بات چیت، جو پیس پروسیز جناب اٹل بہاری واجپئی جی نے شروع کیا تھا، اگر ہم نے اس کو آگے بڑھایا ہوتا، تو جیسا ہمارے آنریبل کرن سنگھ جی نے بھی کہا کہ بات چیت ہوتی اور مسئلے کا سمادھان نکلتا۔

مدھیہ پردیش میں کل جو پردھان منتری صاحب نےبیان دیا، ہم اس کا ویلکم کرتے ہیں۔ انہوں نے کہا کہ کشمیر کے لوگ ہمارے اپنے لوگ ہیں، بچوں کے ہاتھ میں لیپ ٹاپ ہونا چاہیئے۔ لیکن اس کو عمل میں لانے کی ضرورت ہے اور ایسا نہیں ہونا چاہیئے جیسا پہلے ہوا۔ وہاں پر جو ہماری سیکورٹی فورسیز ہیں، جہاں پر ان کو لینڈ کی ضرورت ہے، وہاں وہ رکھیں، جو اس میں ہے۔ جہاں تک پاور پروجیکٹس کی بات ہے، ہم نے پاکستان کے ساتھ جو ہمارے دریا تھے، این ایچ پی سی سے ملکر ہم نے کچھ پاور پروجیکٹ بنائے۔ اس کا زیادہ حصہ جمو وکشمیر کو ملنا چاہیئے تھا۔ وہ کیوں نہیں ملا؟ وہ بھی اس میں ہے۔ ان سبھی چیزوں پر عمل کرنے کی ضرورت ہے۔ آج یہاں پر سبھی پارٹیوں نے جو بات

[मीर मोहम्मद फ़ैयाज]

کہی، میں آنریبل ہوم منسٹر صاحب سے بہی کہوں گا کہ جموں وکشمیر کے لوگ پریشان ہیں۔ جس جموں سے کشمیر، جس دہلی سے کشمیر ایک ہزار گاڑیاں اور ٹرک ڈیلی جاتے تھے، آج تیس دن سے ایک بھی گاڑی نہیں گئی۔ 2010 میں تین مہینے رہے۔ آپ خود ہی دیکھ لیجئے ان لوگوں کا کیا حال ہوگا۔ وہاں بچے ایک مہینے سے اسکول نہیں گئے۔ میں یو.پی.اے. کے وقت کے پرائم منسٹر، آنریبل ڈاکٹر منموہن سنگھ صاحب کا شکر گزار ہوں کہ انہوں نے باہر کی ریاستوں کے کالجوں میں ہر سال کشمیر کے 5000 بچوں کو پڑھنے کے لئے بھیجنے کا ایک پروگرام بنایا۔ سر، میں جب اس ہاؤس میں آیا، اس وقت ان بچوں کو، جو یہاں کے کالجوں میں تین تین، چار چار سالوں سے پڑھ رہے تھے، وہاں سے نکالا گیا۔ ان سے کہا گیا کہ یہ کالج یہاں پر رجسٹرڈ نہیں ہے۔ تب میں یہاں اسمرتی ایرانی جی سے ملا اور ہماری اس وقت کی مکھیہ منتری، محبوبہ جی بھی ملیں اور بتایا کہ یہ بچے یہاں جنتر منتر پر بیٹھے ہیں، آپ نے ان کو ان کالجوں میں کیوں بھیجا؟ یہاں ایک میواڑ یونیورسٹی ہے، لیکن اس کو کسی نے نہیں دیکھا۔ ان بچوں کو این.جی.او. کے ذریعے بھیجا گیا تھا اور اس نے تیس تیس ہزار روپے لئے تھے۔ جب تین سال کے بعد ان کو ان کالجوں سے نکالا گیا اور وہ پانچ پانچ ہزار بچے یہاں سے گئے، تو انہوں نے وہاں جاکر کہا کہ ہمارے ساتھ دھوکا ہوا ہے۔ آج میں جاوڈیکر صاحب اور آج کی گوورنمینٹ کا شکریہ ادا کرتا ہوں کہ اس سال انہوں نے اے. آئی. سی. ٹی.ای. کے چیئرمین کو یہ کہہ کر ہر ڈسٹرکٹ میں بھیجا کہ آپ کشمیری یوتھ کے ساتھ ڈائریکٹ بات کیجئے اور ان سے کہئے کہ ہم آپ کو اس اس کالج میں بھیجیں گے۔ اس سال، وہاں کے حالات اتنے خراب ہونے کے باوجود، وہاں 8000 بچے لائن میں لگے ہیں کہ ہم جائیں گے، کیوں کہ اس سال

ہمیں پہلی بار ایسا لگا کہ کوئی ہمیں یہ وشواس دلا رہا ہے کہ ہم آپ کو جہاں بھیج رہے ہیں، وہاں آپ سیف رہیں گے۔ جو بچے یہاں سے گئے، ان کا آپ ریکارڈ نکال کر دیکھئے۔ میں آپ کے مادھیم سے ہوم منسٹر صاحب سے پوچھنا چاہوں گا کہ ایسے کتنے بچے ہیں، جن کو ان کالجوں سے تین تین سال کے بعد نکالا گیا؟ وہ بچے واپس گئے اور ان کی زندگی ختم ہو گئی ۔۔(وقت کی گھنٹی)۔۔۔

اپ سبھا ادھیکش (شری بھونیشور کالیتہ) : اب آپ ختم کیجئے۔

جناب میر محمد فیّاض : سر، وہ کہاں جائیں گے؟ آج ہم برہان وانی کی بات کرتے ہیں۔ ہمیں ان کو برہان وانی نہیں بننے دینا ہے۔ آتنک واد کیوں بنتا ہے، اس کو دیکھنے کی ضرورت ہے۔

سر، میں کشمیر کے اس کپواڑہ ڈسٹرکٹ سے ہوں، جہاں زیادہ تر اس کی آوا جاہی ہے اور جہاں سے پاکستان بالکل نزدیک ہے۔ میں نے ان چیزوں کو دیکھا ہے۔ ایک ٹائم وہ بھی تھا جب کشمیر کے لڑکے روزانہ پاکستان جاتے تھے اور تب پاکستان کو بھی ہماری اور ایکسیز کرنے کا موقع ملا۔ سر، یہ مسئلہ ہے اور اس مسئلے کو ایڈریس کرنے کی ضرورت ہے۔ آج موقع ہے کہ ہم اس کتاب کو بند کریں، اس کتاب اور اس مسئلے کو ہم کشمیریوں کے ساتھ بات کرکے حل کریں، کیوں کہ یہ جتنا چلے گا، اتنی اس کی پرابلم ہے۔ تھینک یو سر.

श्री विवेक के. तन्खा (मध्य प्रदेश): वाइस चेयरमैन साहब, सबसे पहले मैं कांग्रेस प्रेजिडेंट, सोनिया जी को और कांग्रेस पार्टी को अपना धन्यवाद देना चाहता हूँ कि उन्होंने मध्य प्रदेश से एक कश्मीरी पंडित को राज्य सभा में भेजा। आज पूरे पार्लियामेंट में शायद मैं ही एक कश्मीरी पंडित हूं। इसके लिए मैं कांग्रेस पार्टी को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ। सर, कई साल पहले हमारा परिवार उत्तर प्रदेश आया, फिर मध्य प्रदेश गया, मगर हम लोगों के दिल में आज भी कश्मीरियत है। जब कभी कश्मीर में कोई आपदा आती है, कोई घटना होती है, तो सबसे पहले हम लोग ही कश्मीर पहुँचते हैं। जिस दिन उरी में अर्थक्वेक आया था, मैं स्वयं रोटरी क्लब के डेलिगेशन के साथ, लाखों रुपये की सामग्री लेकर वहाँ गया था। आज भी मेरा कश्मीर में सम्पर्क है। मेरा यह ओपिनियन है कि कश्मीर में, there is no communalism, there is separatism. सच्चाई तो यह है कि कश्मीर के लोग पंडितों की बहुत इज्जत करते हैं, पंडितों को बहुत इज्जत से देखते हैं और पंडितों को उन्होंने उस वक्त बचाया भी है। सच्चाई तो यह है किं पडित वहां टीचर था, शिक्षक था, वह बच्चों को पढ़ाता था और हर मजहब के बच्चों को पढ़ाता था। यह कहीं न कहीं पाकिस्तान की साजिश थी किं पडितों को वहां से बाहर करो, तब उनका यह मूवमेंट इफेक्टिव होगा। यह सच्चाई है कि हर पंडित कश्मीर वापस जाना चाहता है,

[श्री विवेक के. तन्खा]

वह उसकी भूमि है, वह वहां रहना चाहता है। वह अपने भाइयों के साथ जाना चाहता है, अपने भाइयों के साथ रहना चाहता है, उनके दुख में शामिल होना चाहता है। हमारे बच्चों को, बहनों को इस वक्त बहुत पीड़ा है। जब वहां पर इतने लोग जख्मी हुए, इतने लोग मरे, आप मानेंगे नहीं, लेकिन हर पडित उतना ही दुखी है, जितना कि कोई कश्मीरी या कोई देशवासी दुखी है। मुझे यह महसूस हुआ कि कहीं न कहीं यह देश हमारे हित को भूल गया कि कश्मीर के पंडित भी कोई थे, जो कश्मीर में रहना चाहते हैं, जो कश्मीर की तरक्की के साथ रहना चाहते हैं। They want to be a part of the progress of Kashmir.

अभी एक महीने पहले मैं अपनी पत्नी के साथ कश्मीर गया। जब मैं एयरपोर्ट पर उतरा, तो श्रीनगर के एस.पी. ने बोला कि आप एम.पी. हैं, इसलिए मैं आपको सिक्योरिटी देना चाहूंगा। मैंने कहा कि नहीं, मुझे कोई सिक्योरिटी की जरूरत नहीं है। मैं और मेरी पत्नी पूरे कश्मीर में घूमे, that was the best season of Kashmir. हम ढाबों में जाकर खाना खाते थे, लोगों से बात करते थे, अपना परिचय देते थे, हर व्यक्ति हम लोगों का स्वागत करता था। कश्मीरी लोगों ने हमारे लिए एक दिन शानदार प्रोग्राम किया था, उन्होंने कल्चरल ईवनिंग का प्रोग्राम किया था। उस कल्चरल ईवनिंग में जो सूफी सिंगर था, वह कश्मीर की एकता और भारत की एकता के बारे में प्रस्तुति कर रहा था। उसके साथ जो म्युजिशियन्स थे, आप यकीन नहीं करेंगे, वे कौन थे? वे stone-pelters थे, जिनको एक प्रकार से ट्रेनिंग देकर म्युजिशियन बनाया गया था। कहीं न कहीं हमको कश्मीरियों का दिल जीतना है, हमको उनको बिजी करना है, हमें उन कश्मीरियों को इज्जत और सम्मान के साथ इस देश में रखना है।

मेरा एक मित्र कश्मीरी पंडित है, उसका नाम अमित वांचू है। उसके दादा जी की 1992 में हत्या हुई थी, लेकिन उस परिवार ने कश्मीर नहीं छोड़ा। उसने कश्मीर में फैक्टरी लगाई है, जिसमें वह करीब 300 लोगों को नौकरी देता है, हर मजहब के लोगों को नौकरी देता है। उसमें 50 प्रतिशत महिलाएं हैं। वह पंडित है और उसने पिछले एक साल से Ambulance Service स्टार्ट की है। वह करीब 3000 लोगों की सेवा कर चुका है। इस एक महीने में कम से कम 200 लोगों को Ambulance Service के माध्यम से फ्री ऑफ चार्ज अस्पताल तक पहुंचाया गया। कश्मीरी पंडित कश्मीर का महत्वपूर्ण भाग है। वह कश्मीर का एक महत्वपूर्ण अंग है। जिस दिन से कश्मीरी पंडित कश्मीर से बाहर निकला है, उस दिन से ही हमारे लोगों की वहां पर परेशानियां स्टार्ट हुई हैं। कहीं न कहीं इस पूरी परेशानी का एक आँसर कश्मीरी पंडितों को वापस आना भी है।

जब डा. मनमोहन सिंह प्राइम मिनिस्टर थे, आज भी हमको लोग बताते हैं, इनके जो इनिशिएटिव हुए और कश्मीरी पंडितों को वापस भेजा गया, उनके लिए accommodation create किए गए, उससे बहुत सी चीज़ें इम्प्रूव हुईं। मगर आपको इस चीज़ को और आगे बढ़ाना है। जो कश्मीरी पंडित हैं और even जो दूसरे कश्मीरी हैं और जो कश्मीर के बाहर हैं, they want to come and work in Kashmir. They want to come and invest in Kashmir. आप policies बनाइए। मैं राजनाथ सिंह जी को अपने सजेशन्स दूंगा, जो मुझे मेरे कश्मीरी friend ने दिए हैं, how Kashmir can prosper with the cooperation of all the three regions and all the Kashmiris, whether inside Kashmir or

outside Kashmir. जो लोग कश्मीर में अच्छा काम कर रहे हैं, अमित वांचू जैसे, उनको recognise करना है। आपको security के अच्छे लोगों को सम्मान देना है। अगर हम यह सब करेंगे, तो हो सकता है कि कश्मीर का कोई न कोई एक सोशल पोलिटिकल ऑन्सर आए। Security forces have to be there. इसमें कोई डाउट नहीं है। Security forces have to fight terrorists, इसमें कोई डाउट नहीं है। मगर security forces are not an answer for Kashmir. The answer for Kashmir will come from the people of Kashmir. आज मैं आपको यह भी बताना चाहूंगा कि हम तो मध्य प्रदेश में हैं। आप देखिए, how well Kashmiris have integrated in all parts of India. जबलपुर या मध्य प्रदेश में मुश्किल से 50 फेमिलीज़ होंगी। सब पढ़े-लिखे हैं, सब सम्पन्न हैं और सब अच्छे से काम कर रहे हैं तथा देशभक्त हैं। तो कहीं न कहीं हमें इन देशभक्तों को एक साथ इकट्ठा करके एक अच्छा माहौल कश्मीर में बनाना है। जिसमें हमें all stakeholders, including Kashmiri Pandits के बारे में भी सोचना है और कहीं न कहीं हमें यह भी देखना है कि कश्मीर पहले भी हमारा अंग था, आज भी हमारा अंग है और आगे भी रहेगा। Thank you, जय हिन्द।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHUBANESWAR KALITA): Thank you. Now, Dr. K. Keshava Rao.

डा. के. केशव राव (आंध्र प्रदेश): सर, खुशी की बात यह है ...**(व्यवधान)**...

सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री रामदास अठावले): सर ...**(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष (श्री भुवनेश्वर कालिता): आपको थोड़ा रुकना होगा। आपका नम्बर next round में आएगा। यह इनकी टर्न है, आपका नम्बर next round में आएगा। ...**(व्यवधान)**...

DR. K. KESHAVA RAO: Sir, cutting across party lines, we have taken the debate to a very high level, and we have all welcomed it. We started with the LoP. He said, "We have started this debate not for any other reason but to express our support and solidarity with what the Government does, provided kashmiriyat, or insaniyat, or jamhooriyat, which you all people talked, are upheld." Now, the question today is this. As a matter of fact, having heard all of them, I am at a loss to decide what exactly should be said.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHUBANESWAR KALITA): Dr. Rao, you are not the last speaker. There are many more speakers. So, please be brief.

DR. K. KESHAVA RAO: Sir, what do you want me to do?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHUBANESWAR KALITA): Please be brief.

DR. K. KESHAVA RAO: I will do so, Sir. Now, I agree with most of the people who have said this. To make it very short, I think, what Dr. Jitendra Singh said is, perhaps, what our Members would have said standing there — the difficulties they face, how they are

[Dr. K. Keshava Rao]

trying to counter them, face them and answer them. What exactly is the Kashmir issue? After hearing you — I am only picking up from that —all of us agree that Kashmir is an integral part of India. Dr. Karan Singh has however thrown a spanner and said, 'Though it is an integral part, yet it should be differently viewed. He thinks it has not merged. Whatever it is, the Home Minister— he is sitting here — should ponder over all the questions that have been raised by him and find an answer. Dr. Karan Singh has raised four, five points which are very relevant. We may not be agreeing with most of them because we are not part of the history, to which he is. Then we heard Nazir Ahmed Saheb and Fayaz Saheb who have raised very fundamental issues, speaking with the same emotions with which the boys there in Kashmir are speaking. They also need to be answered. Sir, what needs to be answered is, if it is a political issue — and we all agree that Kashmir is a part of India — what is that political issue and how do we solve it? We have the Home Minister here, former Home Minister, former Prime Minister, and all are here. For all of us, all these issues are not a legacy but, nonetheless, they have been hanging fire for all these 60 years. We have not been able to solve this. So, there is no mantra readily available for us that we just apply it and we get the answer to Kashmir. They need to be answered one by one. Questions apart, and what they have raised, I would bring a third dimension. There is a new dimension that has been given. Apart from all that is said, there is a third dimension that I am trying to focus. Please understand that this is a low-cost proxy war by Pakistan. We have sufficient evidence to prove that how it is being funded. It is not necessary that what is happening in three districts of Anantnag, Baramulla or Kargil is the real issue. The root cause is something else which all of us know. Unless the funding is stopped, unless you cut short the funding, you will not be able to face it. When 'composite talk' issue was coming up which Dr. Manmohan Singh was taking up, there was a lot of opposition from your side but now you are doing it. Today, you realize that these talks will take you to the solution. That is the second issue that you have to face.

The third issue is, what the Government today is doing, the Home Minister Saheb, all that you are doing, we are with you, sans that pellet gunning. That we think, perhaps, was not necessary. That is the consensus here. So, that is for you to decide. But that also can go.

Now, another thing is, Mr. Yechury has raised another five points. Now, he said, all the promises that you have made should be honoured so that it will pave the way for a solution. According to Dr. Karan Singh, we have given Kashmir a Constitution which gives it a separate entity in the Union. What is the other opinion? The other opinion here is the Constitution that we have brought in, the Article 370 help and facilitate the integration.

Now, that must take you to the first issue which Mr. Ghulam Nabi Azad also said that these issues will not help unless there is integration of hearts. There is no Talisma. This is not done merely for pushing the things. The point is, all the opportunities that we had, we have lost. The third thing, Sir, is the war that we had. *...(Time-bell rings)...*

So, Sir, this is what is happening. Whenever a serious issue like this comes up, and when we try to articulate it in a fashioned manner — because many of the Members said — you really push us out of the stream. So, Sir, I would say three things for the Home Minister to understand. Please also factor in the Chinese angle to this. The common corridor that is coming up, it is not economic,- it is political. They have already claimed that. They have put their stake in Ladakh. That also cannot be forgotten. Number two, you are too much depending on U.S. It is all right. But U.S.'s stand is ambivalent. They are also not very clear as to where they should stand. That also needs to be factored in. Now, even the US investments in that 'common corridor thing' might go up where it may disturb the balance that you are now trying to set right. Sir, whatever it is, Pakistan is opening up a broader front internationally today on Kashmir unlike two years back. Now, wherever they go to international forums, Nawaz Sharif talks about Kashmir only. So, our mere talking about the things will not do. As both Yadavjis said, we need to be very strong. We are with you. There is, of course, the issue of polemics. I am not getting into polemics. I am not going into schism. I am not getting into arguments also. The question is: How do we mainstream Kashmir? One issue is, remove Article 370. The second issue is, use Article 370 to integrate and use it. I still believe Article 370 can be used to pave way for this integration.

Nothing happened before July 17; everything was good. It was only on the day Wani was killed that the entire thing changed. If you think what had happened is unprecedented; no there was no magic that happened there. That means, the media played a dirty role, which you should have controlled. That means, there were groups active at that time, which was known to you from Intelligence reports, but you were not able to contain or check them. So, vigilance on your part could have easily saved the situation. Now, although the consensus in this House is that we should send delegations there, I am not for it immediately. That could be done.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHUBANESWAR KALITA): Dr. Rao, please conclude now.

DR. K. KESHAVA RAO: Otherwise, Sir, I think that an Empowered Committee must be sent there first and they should be given some powers. Let them first prepare the ground, so that a political dialogue could follow. Please treat this as a political issue. This

[Dr. K. Keshava Rao]

is not a developmental issue, as somebody here said. The kind of money that has been given to the State, which even the earlier Governments have given, no other State has been given that much money. But nothing has happened there at all. Development is not an answer at all. Next, only because three districts are tense, don't think entire Kashmir has been affected. Whenever you talk about Kashmir, don't just talk about one district or two. Talk about Jammu too. My friend just now said that there are only 4,000 Pandits left there as against half-a-million that were there earlier.

So, these are issues that the Home Ministry must look into. Take the House into confidence first. The entire House, cutting across Party lines and rising above their Parties, has pledged its support to you. Please take advantage of this. Let us think boldly, out of the box and, if necessary, get into action.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHUBANESWAR KALITA): Thank you. Now, Mr. D. Raja.

श्री रामदास अठावले: सर ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री भुवनेश्वर कालिता): जब आपका समय आएगा, तब आपको बुलाएंगे।

SHRI D. RAJA: Sir, finally, the Parliament has risen to the occasion to discuss the grim situation in Kashmir. Sir, the Parliament cannot be a mute spectator when Kashmir is bleeding.

Sir, I do share the opinion of the LoP that the Prime Minister should come to Parliament and speak on such crucial issues on the floor of the House. I am not particularly opposed to the Prime Minister speaking outside on such matters, but it will be appropriate if he comes to the Parliament and speaks on such issues of national concern and importance. Having said that, Sir, to widen our understanding, I think we need to address certain issues.

Sir, Mr. K.R. Narayanan was the Chairman of this House, the Vice-President and the President of our country. In 1986, he had been to the Kashmir University to address the students during Convocation. There, he said, "The Convocation of Kashmir University is symbolic of the atmosphere of reconciliation, peace, tolerance and brotherhood that is characteristic of Kashmir and that is spreading among the people of the State, who deserve nothing less than perfect peace and harmony, progress and prosperity, preserving their unique identity, splendid culture and their dignity and rights within the vibrant structure of India's democracy and plural society."

Sir, this was said by Mr. K.R. Narayanan in 1986. After that, somehow, we lost the confidence of the people of Jammu & Kashmir, particularly the people of Kashmir. They do not trust New Delhi. They do not trust the Central Government. There are several reasons for this. From time to time, questions have been raised about the very Article 370 that we all agreed upon. It is being questioned from time to time by those who are in power. Sir, there are other issues, and it is not a question of religion. In fact, Mr. K.R. Narayanan himself has admitted, "Hinduism, Buddhism and Islam influencing and inter-penetrating one another, producing a remarkable liberal and tolerant society in Kashmir." This is what Mr. K.R. Narayanan said. Sir, in fact, Mr. K.R. Narayanan went on to refer to Sheikh Abdullah, who is considered to be the famous Lion of Kashmir. It was Sheikh Abdullah who said, "There is a common spirit in all religions, which teach universal brotherhood and bring peace and solace to our minds, and that, in Kashmir, there is no place for a theocratic State." This is Mr. Sheikh Abdullah, the Lion of Kashmir. That is the spirit of Kashmir,- that is the culture of Kashmir. But why is it happening? Why are people agitating? This is what we should find out. Hon. Home Minister, to begin with, I think it is time to de-escalate and initiate a dialogue with Kashmiris, a dialogue with all stakeholders in Jammu and Kashmir. I think it is time to stop the use of pellet guns. Even the Prime Minister has admitted that with excess use of power, with the might of military and the might of security, we cannot win the minds of the people of Kashmir. As Home Minister, you should take initiative to stop the use of pellet guns. Sir, I have been repeatedly asking the Government that the Armed Forces (Special Powers) Act should be reviewed. And there are *...(Interruptions)...*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHUBANESWAR KALITA): Please conclude. We are running short of time. *...(Interruptions)...*

SHRI D. RAJA: Sir, it is a serious subject. I am concluding. *...(Interruptions)...* And there are midnight knocks at the doors of civilians. Why should it happen in Kashmir? Sir, the former Home Minister, Mr. Chidambaram, is sitting. I am quoting Mr. Chidambaram. He said, "People find the overpowering presence of security forces oppressive, humiliating and unacceptable." This is what he has observed from what is happening in Kashmir. So, to begin with, the Government should initiate these steps. Sir, as far as long-term political solution is concerned, the Government should spell out what its political strategy is. You will have to initiate a political process; you will have to talk to all stakeholders and you will have to talk to China and Pakistan at one level. The Government should not allow others to internationalise the whole issue. Instead, the Government itself will have to engage with Pakistan and will have to engage with China. At the domestic level, the Government should initiate a dialogue with all stakeholders. But, Sir, what is happening?

[Shri D. Raja]

One of your party leaders, I am asking you, who is also a Member of this House, has already Tweeted and said, "Impose President's rule; handover administration to the Army and security forces." I can take the name; he is Dr. Subramanian Swamy. Already, he has Tweeted. Is it the thinking of the Government? Is there any thinking like that? I am suggesting to the Government, rather asking the Government, not to resort to such misadventure of imposing President's rule. Take the people of Jammu and Kashmir into confidence. It is time to win their confidence, not to further alienate them and antagonize them. Otherwise, we will not be able to solve the problem. We will be responsible if we allow the situation to get out of our control. This is what the hon. Home Minister should take note of. The situation is so shocking, alarming and the young people are agitating. We should give them the trust and we should give them the confidence. Sir, finally, I end again by quoting from Mr. K.R. Narayanan's speech. He quotes one poet, Mehjoor. Our colleagues from Kashmir may be knowing about him. I cannot read this as it is written in Dogri, but the translation says, "Oh God! This garden land is immensely beautiful. Fill it with love." That is how he ended the speech. Fill it with love. Let us have love and compassion towards the people of Jammu and Kashmir. Let us win their confidence. When we say that we are all one, they also should feel that they are all one and they are Indians. We have to see as to how to give them that confidence and trust. You cannot do it unless you take some immediate measures. Here, I would repeat that you should stop the use of pellet guns, review the Armed Forces (Special Powers) Act, remove Army and security forces from the civilian areas and start a political process, a political dialogue, with all the stakeholders in Jammu and Kashmir. Here, I would like to say that we should also include separatists. We should demarcate between separatism and terrorism. Separatism cannot be equated with terrorism. We will fight terrorism. We know what is home-grown terrorism and what is cross-border terrorism. We will fight terrorism, but because some people raise some separatist slogans, it does not mean that we should not talk to them or that we should not reach out to them. So, initiate a political dialogue at the domestic level with all stakeholders and engage with Pakistan and China.

Sir, having said that, I again urge upon the Home Minister, through you, not to resort to any misadventure of imposing President's rule in Jammu and Kashmir. You should take the people of Jammu and Kashmir into confidence. Let us move forward. You can think of sending an all-party delegation at an appropriate time. It is for the Government to assess the situation and take a decision. Thank you, Sir.

SHRI T.K.S. ELANGOVAN (Tamil Nadu): Sir, on behalf of the DMK Party, I share

5.00 P.M.

the sentiments expressed by various leaders in this House cutting across party lines. I was able to know the long history of Jammu and Kashmir during this debate. But I am going to restrict my speech to only one point by quoting two reports in the media. One is regarding the Chief Minister's statement. The Chief Minister of Jammu and Kashmir had said that Burhan Wani was killed inadvertently, which means the Police, without knowing that he was Burhan Wani, killed him. How can this happen? Where did the intelligence go? Why was a person like Burhan Wani killed without identifying him? That was the first thing. This was the statement issued by the Chief Minister herself.

(MR. DEPUTY CHAIRMAN *in the Chair*)

Secondly, a group of people, who was going on a street, was stopped by the Central Forces. They told the Central Forces that they were going to pay their homage to Burhan Wani. The Central Forces allowed them. When they reached near the house, the State Police started shooting at them. It means, without knowing that the Central Forces had allowed them, the State Police attacked them with pellet guns.

Thirdly, Sir, what is the feeling of the people in the State? It is all reported in the newspapers. People in the State say, "The Central Forces are reasonable, but the State Police is not reasonable. They want to attack us and they want to kill us."

My question is: Is there any coordination between the Central forces and the State police? I think, the reason for the problem which has been continuing for the last one month is non-coordination between the forces which were there to protect the people, to stop the untoward incidents, and to book the terrorists and put them into place. The people who have been attacked are the common people. Policemen go to their houses, knock at their doors, beat them and kill them. This is not the way in which this issue should be treated. Sir, what is happening there for the last 32 days is only because of non-coordination between the two forces, which are present there to control the situation. I want the hon. Home Minister to look into this.

I do not want to blame the Chief Minister also. Maybe she was briefed by the police. She must have been briefed by the authorities. Sir, definitely, there is no coordination. The media reports also say that there is no coordination between the Central forces and the State police. Sir, I want the hon. Home Minister to look into it so that this problem, the present problem, the immediate problem, can be solved. The long-term issues can be taken up slowly, and, as suggested by various other Party leaders, you can send a team of representatives of political parties to Kashmir to talk to the stakeholders and chalk out a long-term plan. Thank you.

SHRI RAMDAS ATHAWALE: Sir, I want to speak for two minutes. *...(Interruptions)...*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, no. *...(Interruptions)...* Listen to me. *...(Interruptions)...* Let me decide. *...(Interruptions)...* You are a Minister. I allowed Dr. Jitendra Singh to intervene. *...(Interruptions)...*

SHRI RAMDAS ATHAWALE: Sir, I am a Minister but I am also the leader of my Party. *...(Interruptions)...*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: That is a different thing. When you become a Minister, you are bound by the joint responsibility. *...(Interruptions)...* Listen to me. I allowed Dr. Jitendra Singh to intervene because he is from Jammu. Please understand this. Now, yours too will be an intervention. If you want to intervene, I will see to it after all the names are disposed of. If there is time, I will allow you. Otherwise, I cannot allow. If all Ministers say that they want to intervene, then, what will happen to other Members? So, now, you sit down. At the end, if there is time, I will allow you.

SHRI RAMDAS ATHAWALE: Sir, only two minutes. *...(Interruptions)...*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: See, when you become a Minister, you have to shed some of your privileges. *...(Interruptions)...* No, no. *...(Interruptions)...*

SHRI MUKHTAR ABBAS NAQVI: Sir, one minute only. *...(Interruptions)...*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: He will not stop in one minute. *...(Interruptions)...* Naqvi ji, he will not stop. *...(Interruptions)...* After disposing of all these names, if time is there, I will call you. *...(Interruptions)...* Please sit down. *...(Interruptions)...* Now, Shri Ram Jethmalani. Before that, let me request all the remaining Members to please take five minutes each. Please start.

SHRI RAM JETHMALANI (Bihar): Mr. Deputy Chairman, Sir, apart from the fact that probably I am the oldest Member in this House, *...(Interruptions)...*

SOME HON. MEMBERS: Maiden speech.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: How can it be a maiden speech? *...(Interruptions)...* He is the oldest Member. *...(Interruptions)...*

SHRI RAM JETHMALANI: Sir, it is my maiden speech so far as my representation of the State of Bihar is concerned. *...(Interruptions)...* I have been now elected from that State and I am entitled to the benefit of one maiden speech, and, that is the one which I

am delivering just now. However, Sir, I leave it to you. When you want me to stop, give me three minutes' notice.

Sir, I must start by paying a tribute to the only speech which I thoroughly enjoyed from the first word to the last word, and that is the speech of the BJP Member from Jammu. *...(Interruptions)...* I am sorry, if I do not know your correct name but, I think, you are Gopal Yadav. Is it? *...(Interruptions)...* No? What is his name? *...(Interruptions)...* Okay. Mr. Jitendra Singh. My apologies but I must say that I was terribly impressed by the speech, which you delivered, and, I am much wiser with that. Sir, I don't wish to repeat the contents of any other Member's speech, not because I have not enjoyed them but because of lack of time, and, Sir, I hope I will not repeat a word which has already been spoken. I must tell you that I probably had no intention of coming and speaking on this subject in this House. But, yesterday, when I got up in the morning — and I was in Mumbai, attending a very great festival in my home; I was celebrating the 60th birthday of my elder son — and read the newspapers which contained the statement of the hon. Chief Minister of Jammu & Kashmir. I have regarded that lady as a younger sister of mine, and I have treated her with respect and affection. But I must tell you that I cut short my stay in Bombay, came to Delhi, immediately wrote a very strong letter to her and saw to it that it was delivered to her on the e-mail and probably repeated in the morning by the normal mail. Sir, that letter of her contained what I regard as some very, very mischievous suggestion. The mischievous suggestion was, 'please now start a new dialogue, like the dialogue which Atalji had with Pakistan'. We shall have no dialogue with Pakistan but we are prepared to have every dialogue with the people of Jammu & Kashmir and we shall surrender to them many things which they may not even deserve. But that is our love and affection for them. So far as Pakistan is concerned, Sir, the Kashmir problem has been solved more than once. It has been settled at least four times in the political history of India. Sir, first of all, let me point out to you one great mistake which Pakistan committed. Fortunately, they did not get the benefit of it. You know that when India was finding its independence, question arose as to the sovereignty of the British Crown the States, the multitudes of States we had. To whom shall it go? And I believe that the Congress Party took a very correct role. They said it shall revert to the people of India. Even many Muslim politicians joined in this except the strict one in the Muslim League. They said, "No; the sovereignty shall not go to the people, but it shall go to the ruler of the State." Now, there was a plan behind this. The plan behind it was that they thought, "Kashmir is a small State, we will be able to conquer it by force at any time". They said, therefore that the sovereignty must go to the Princes because they had their eyes on the State of Hyderabad. It was a Non-Muslim majority State and His Highness, the Nizam

[Shri Ram Jethmalani]

of Hyderabad, was ruling the State by that great army of Razakars, like whom one has not seen so far as military ethics and character are concerned. However, the Indian Army, under the control of Sardar Patel, one of the greatest politicians and sensible people that India had produced, was marching into Hyderabad when Pandit Nehru got some qualm of conscience and he tried to stop it, and Sardar Patel had to tell him a lie that the Army had already entered Hyderabad. And, if Pandit Nehru had his way and Sardar Patel had failed, take it from me, we will today be facing the problem of Hyderabad and India *...(Interruptions)...*

SHRI JAIRAM RAMESH: This is simply not true, Sir. *...(Interruptions)...* This is simply not true. This is falsifying history. *...(Interruptions)...* This is a canard. *...(Interruptions)...* This is a propaganda. This is simply not true. *...(Interruptions)...* I have seen the archives. *...(Interruptions)...* I have written a book on *...(Interruptions)..* He is misleading the House. *...(Interruptions)...* He is misleading the House. *...(Interruptions)...* He is a very senior Member. I respect him. I respect him as a human being, as a lawyer *...(Interruptions)...* But on this, he is completely, comprehensively wrong. *...(Interruptions)...*

DR. K. KESHAVA RAO: Which part of it is wrong? *...(Interruptions)...*

SHRI JAIRAM RAMESH: Don't interfere*...(Interruptions)...*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay. All right. Keshava Raoji, both are on record. *...(Interruptions)...* You sit down. *...(Interruptions)...* No, no. Both are on record. *...(Interruptions)...* What Mr. Ram Jethmalani said and what Mr. Jairam Ramesh said... *(Interruptions)...*

SHRI GHULAM NABI AZAD: Sir, today, we should not go into the history. All of us, the Congress Party, the BJP and all other parties, decided not to dig out the past. We should talk about the present.

SHRI RAM JETHMALANI: We are not digging out the past. We are talking about some historical truths *...(Interruptions)...*

SHRI GHULAM NABI AZAD: We will have it when we will have discussion on archives. That time we will have this discussion. *...(Interruptions)...*We are discussing the current problem. *...(Interruptions)...*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Ram Jethmalaniji, the issue is that Kashmir is burning. We want some solution. We are racking our brains for a solution as to what to do. So,

rather than going back to the history, give suggestion for that. ...*(Interruptions)*...

SHRI RAM JETHMALANI: Yes, Sir. Sir, I personally wish to tell this House that the solution offered yesterday in the Press by the Chief Minister of Jammu and Kashmir is not a solution to be considered at all. You must reject it. We must be careful about giving this kind of advice which the Chief Minister gave because this particular matter had been decided four times. As I told you, the sovereignty had to reside in the people. I wish to cite one incident. When Hyderabad was lost, the raiders, the armed military people of Pakistan is concealed identity and became poring to be tribals to attack Kashmir and they had ...*(Time-bell rings)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now you have to conclude. Please conclude. You have already taken nine minutes.

SHRI RAM JETHMALANI: Sir, out of nine minutes, you deduct those seven minutes. ...*(Interruptions)*... All right, Sir. My appeal to this House is that the Kashmir problem has been solved with Pakistan more than three times. One point towards which I would particularly like to draw your attention is that in the 60s, Pakistan started a war of aggression knowing full well that they are attacking us, while we were unarmed and weak. But the Indian Army completely mastered that aggressive attack and that led to another great action of one of the greatest Prime Ministers which India had and he was Lal Bahadur Shastri. What happened was that we got Tashkent Declaration. The Tashkent Declaration had two clauses. One was that neither party shall change the present status quo by force or by violence. And the second one was that neither party shall even carry on any propaganda for changing it. ...*(Time-bell rings)*... If Pakistan wishes to go back on the Tashkent Declaration and other settlements that have taken place, be sure that you will tell Pakistan that it will lose its claim to half of Jammu and Kashmir which Indian generosity had given to it for good. But, we are prepared that we will take it back. ...*(Time-bell rings)*... Sir, I want no talks with Pakistan on this issue. All that you must tell them is that if they want to fight that issue with us, let us go to the International Court of Justice or let us go to the Security Council; and, be sure that they will lose there. Tell them that if they succeed there, we will succumb to the decision of the international community. Today, Sir, please do not carry on with any kind of dialogue with Pakistan, but do carry on every kind of dialogue with the people of Jammu and Kashmir. ...*(Time-bell rings)*... They are our kith and kin, and they are as dear to us as anybody else can be. Sir, so far as I am concerned, you may be pretty sure that I will give my life to keep the people of Jammu and Kashmir as friends of India and I will see to it that the Indian Union with that State is appreciated by everybody including the entire civilised world. I shall spend there a few

[Shri Ram Jethmalani]

years of my life that remain. I am running today the 93rd year of my life. I will devote the remaining part of my life to see that the people of Jammu and Kashmir are happy and that they remain happy, live long and be friends of this country. Thank you.

SHRI ABDUL WAHAB (Kerala): Mr. Deputy Chairman, Sir, I thank you for having given me a chance to speak on this subject. First of all, I completely agree with what our dear brother from Kashmir said. When he was narrating the issue, he was very emotional. I fully agree with my Kashmiri friends, Mr. Ghulam Nabi Azad and his counterpart, Mr. Manhas, the first speaker from the other side. They have given us a clear picture and I am not repeating the same issues. The only thing is, I want to support Mr. Raja on the issue of taking back the Army and the special powers given to the Armed Forces and Paramilitary Forces. Kerala and Kashmir are beautiful States in India. One is the crown; and the other is the God's own country. So, these two States are integral part of India. When some separatists or terrorists make a little noise, please do not take it in a serious way. Media is also covering it in a big way. In Kerala, one or two persons went to ISIS. They are creating all the.....

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Order, please. ...*(Interruptions)*... A lot of noise is coming. ...*(Interruptions)*... Please proceed.

SHRI ABDUL WAHAB: So, my suggestion is, whenever something happens in our country in the name of terrorism and all, we should take stern action but we should not tarnish the whole community for that single incident. That is what is happening in Kashmir also. We have travelled to Kashmir so many times. We know Kashmiris and their patriotism. But, still, some people want only the land and not the Kashmiris. So, we should win the hearts of Kashmiris, as they have mentioned. I hope this will soon be settled by the eminent Home Minister, Raj Nath Singhji. He is a moderate man. He is not like Dr. Subramanian Swamy. ...*(Interruptions)*... So, I hope he will take this issue in the right way. Thank you very much.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: For being brief and to the point, I thank you very much. Now, Shri Biswajit Daimary.

श्री बिश्वजीत दैमारी (असम)ः सर, मेरे गले में थोड़ी प्रॉब्लम है, तब भी मैं बोलना चाहूंगा। सर, जम्मू और कश्मीर की जो सिचुएशन है, यह आज की नहीं है, बल्कि बहुत पुराने समय से चली आ रही है। बात सिर्फ यह हुई है कि वहां एक महीने से बहुत बुरी हालत है और वहां कर्फ्यू लगाकर रखना पड़ रहा है। वहां की जो यह समस्या है, उसके परमानेंट सॉल्यूशन के लिए सरकार को अच्छी तरह से एक पॉलिसी बनानी चाहिए। अगर हम सिर्फ वहां की वर्तमान परिस्थिति को देखकर कदम उठायेंगे, तो वह कभी भी permanent solution नहीं हो सकता है। अभी की जो situation है, अभी के टाइम की जो

demand है, शायद इसके कारण ऐसा करना पड़ रहा है। मैं आशा रखता हूं कि हमारी केन्द्रीय सरकार की तरफ से अभी जो वहां पर situation है, उसमें normalcy लाने के लिए कोशिश की जाएगी। वहां के जो भी आम आदमी हैं, उन लोगों के साथ बात करते हुए situation को नॉर्मल बनाने के लिए सरकार की तरफ से थोड़ी जिम्मेदारी ली जाए।

सर, इस देश में सिर्फ कश्मीर ही नहीं, नॉर्थ-ईस्ट में भी इसी तरह की situation है। फर्क सिर्फ इतना ही है कि जम्मू-कश्मीर की सीमा पाकिस्तान के साथ लगी हुई है और पाकिस्तान claim करता है कि जम्मू-कश्मीर उनका part है। जम्मू-कश्मीर से कुछ लोग कभी-कभी मुद्दा उठाते हैं कि वे लोग पाकिस्तान के साथ जाना चाहते हैं। शायद नॉर्थ-ईस्ट में भी कुछ लोग भारत से कभी अलग हो जाना चाहते हैं, लेकिन सिर्फ डिफरेंस यह है कि वहां के लोग चीन के साथ, बंगलादेश के साथ, म्यांमार के साथ, भूटान के साथ नहीं जाना चाहते हैं। चीन, बंगलादेश, भूटान या म्यांमार ने कभी भी नॉर्थ-ईस्ट को, वहां के लोगों के साथ मिलकर ले जाना नहीं चाहा, तो फर्क सिर्फ यही है। यह जो समस्या आई है, इसमें सिर्फ हमारी केन्द्रीय सरकार और वहां के लोगों के बीच में जो संपर्क है, इस संपर्क में थोड़ी-सी दूरी रही है। एक-दूसरे के साथ अच्छा सम्पर्क नहीं है।

सर, इस देश को हमने खुद बनाया है। यह भारत geographically एक है, लेकिन ब्रिटिश के समय में यहाँ अलग-अलग शासन व्यवस्था थी, उसमें अलग-अलग राजाओं के द्वारा शासन किया गया था। इसलिए सदियों के बाद इस देश को जोड़कर एक system के अंदर लाया गया। उसके बाद एक-दूसरे की भावना को आपस में मिलाना थोड़ा मुश्किल हो गया। इसको हम लोगों को उस दृष्टि से देखना होगा कि कश्मीर के लोग क्या सोचते हैं, वे कैसे जीना पसंद करते हैं, वहां के लोगों की संस्कृति क्या है, वे रियली किस तरह से रहते आए हैं। वे भारत में रहते हुए किस हद तक हुकूमत कर सकते हैं, इसके लिए उन लोगों से बात करनी जरूरी है। हो सकता है कि वे लोग किसी कारणवश यहां से अलग होकर जाना चाहते हैं। इसलिए उन लोगों की जो बातें हैं, दुख है, गुस्सा है, उसको सुनना बहुत जरूरी है और उनको हम लोगों द्वारा थोड़ी सी importance देना बहुत जरूरी है।

मैं चाहता हूं कि इसी तरह से अगर उन लोगों के साथ बातचीत की जाएगी, तो definitely एक solution आ जाएगा और permanently हमें बार-बार कश्मीर के ऊपर, यहां पर एक दूसरे के साथ argument नहीं करना पड़ेगा।

सर, यह जो Armed Forces Special Powers Act है, यह नॉर्थ-ईस्ट में भी चल रहा है। इस कानून को वहां पर लागू करने के बाद भी, वहां की जो उग्रवाद की समस्या है, जो terrorist activities हैं, उनको यह कानून control नहीं कर पाया है। इसलिए इस कानून के ऊपर सरकार को पुनर्विचार करना चाहिए। इस कानून के बारे में लोगों की अच्छी धारणा नहीं है। कानून-व्यवस्था को लेकर वहां पर जो army deploy की जाती है, जो paramilitary forces deploy की जाती हैं, वे लोग भी इस कानून की power का misuse करते हैं और इसके बहुत सारे उदाहरण हैं। ...**(समय की घंटी)**... मैं आपके जरिए केन्द्र सरकार से मांग करता हूं कि Armed Forces Special Powers Act के ऊपर भी बात होनी चाहिए। शायद यहां पर कोई नहीं जानता कि इस power को लेकर वहां गांव, अंचल में लोगों के साथ कोई बड़ा हादसा भी हो सकता है, जिसके कारण आज कश्मीर के कुछ लोग वहां पर संग्राम कर रहे हैं। ...**(समय की घंटी)**...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude.

श्री बिश्वजीत दैमारीः सर, मुझे विश्वास है कि कश्मीर के जो लोग हैं, वे भारत के ही लोग हैं और वे भारत के हिसाब से ही जीना चाहते हैं। सिर्फ उनके मन के अंदर कुछ दुख है, कुछ गुस्सा है, इसको हमें अच्छी तरह से समझना चाहिए। उनके साथ बातचीत करने से मैं समझता हूं कि इसका अच्छी तरह से समाधान हो जाएगा, धन्यवाद।

सरदार सुखदेव सिंह ढिंडसा (पंजाब)ः उपसभापति जी, मैं पूरे सदन को बधाई देना चाहता हूं कि जिस तरीके से आज यह debate हुई, सभी सदस्य एक मत से कश्मीर के साथ खड़े हैं और पूरे देश के साथ खड़े हैं। मेरी राज्य सभा में यह तीसरी term है, तो मुझे आज यह मालूम हुआ कि वाकई यह House of Elders है। मैंने आज से पहले कभी ऐसी debate नहीं देखी। मैं यह महसूस करता हूं कि आगे भी जो national issues होंगे, तो जैसे आज सभी पार्टियां एक मत हुई हैं, ऐसी ही आगे भी होंगी। ऐसा मैं महसूस करता हूं।

सर, यह भी सभी जानते हैं कि आज कश्मीर का मसला बहुत grave और serious issue बना हुआ है। हम जानते तो सभी हैं, लेकिन बोलते कम हैं कि यह पाकिस्तान के साथ inter-related है। पाकिस्तान के साथ जितनी देर दुश्मनी रहेगी, उतनी देर वह कोशिश करेगा कि कश्मीर का मसला हल न हो। हमारे देश के प्रधान मंत्रियों ने बड़ी कोशिश की है। श्री लाल बहादुर शास्त्री ने ताशकन्द में समझौता किया, वे नहीं रहे। उसके बाद श्रीमती इंदिरा गांधी ने शिमला समझौता किया और उसके बाद भी कोशिशें होती रही। पहले तो गुजराल साहब ने पहल की थी, लेकिन उनको टाइम नहीं मिला। फिर श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने पहल की, जिनके लिए आज भी कह रहे हैं कि वही formula better है। उन्होंने इतना बड़ा काम किया कि वे बस में बैठकर पाकिस्तान गए और वहां जाकर वे उनके Prime Minister से मिले तथा उनकी बातचीत शुरू हुई। यह उम्मीद थी कि शायद वह मसला हल हो जाएगा, लेकिन आप जानते हैं कि वहां पर न तो political पार्टियों की और न ही political leadership की कोई बात है, वहां पर फौज का राज है। जब उनके Prime Minister ने इस दिशा में काम करना शुरू किया तो ऐसी उम्मीद जगी थी कि शायद यह समझौता हो जाए, लेकिन उन्होंने उसका राज पलट दिया। उसके बाद कश्मीर के लिए जो formula श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने दिया था, आज भी महबूबा जी ने कहा है कि उस formula को लागू किया जाए। डा. मनमोहन सिंह जी ने भी वह formula जारी रखा, लेकिन जब मोदी साहब प्रधान मंत्री बने, तो उन्होंने भी वही formula लागू किया। जब उनकी oath-taking ceremony थी, तो उन्होंने पाकिस्तान के प्रधान मंत्री को बुलाया। उसके बाद आप भी गए, उनके birthday पर भी गए, आप उनको बिना टाइम दिए चले गए। उसके बाद भी वहां आर्मी से डर है। किसी भी political leadership में इतनी ताकत नहीं है कि वह कोई समझौता कर सके। पाकिस्तान हमेशा यह कोशिश करेगा कि कश्मीर का समझौता न हो। आज सभी सदस्यों ने सही कहा है कि वहां पर हमारे बच्चे मर रहे हैं। पाकिस्तान उनके जज्बातों से खेलकर देश के खिलाफ भड़काने की कोशिश करता है। उसका नतीजा यह होता है कि जब वे agitation करेंगे, तो paramilitary forces उनको रोकेंगी। फिर गोलियां भी चलेंगी, लेकिन उससे पूरे कश्मीर के नौजवानों में ऐसी स्थिति पैदा हो गई है कि हमें इस देश में नहीं रहना। इसको दूर करने के लिए सरकार को चाहिए कि जो श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी का formula है, उस पर चले।

दूसरा, मैं यह कहता हूं कि जहां तक लोगों के दिल जीतने की बात है, यह बात बाजवा साहब ने भी कही है। जितनी देर लोगों का साथ नहीं मिला, उतनी देर तक कोई अमन नहीं हुआ। जब लोगों ने उनको reject किया, उसके बाद हुआ। वहां पर हमारे बड़े लीडर्स मरे। वहां पर ऐसे हुआ, जैसे आज हो रहा है कि हिन्दू मुसलमान की बात कर रहे हैं। वहां पर सिख और हिन्दुओं की बात चलाई गई। वहां पर हिंदू मर रहे हैं, सिख तो majority में मरे, लेकिन वहां कहा गया कि हिंदू मर रहे हैं, इसलिए हिंदुओं का वहां से जाना शुरू हुआ। उसके बाद जब situation ठीक हुई, तो पंजाब वहां पर आ गया, जहां पर पंजाब को पहले आना था। वैसे ही आपको उन लोगों का दिल जीतना पड़ेगा। अब वह आप किस तरीके से जीतेंगे? सर, कुछ लोग, खासकर वहां के जो नौजवान हैं, जो young blood है, उनके जज़बातों से खेलते हैं। हमारे यहां भी यही हुआ है, लेकिन ये कहते रहे कि सिख मार रहे हैं, लेकिन लीडर तो सारे हमारे मरे। हमारे प्रेसीडेंट संत हरचरण सिंह लोंगोवाल मारे गए। बाजवा साहब ने कहा कि उनके पिताजी चले गए। हमारे भी दो लीडर्स - तलवंडी साहब और टौरा साहब पर हमले हुए। इस तरह वहां पर हजारों आदमी मारे गए।

श्री प्रताप सिंह बाजवाः सरदार बेअंत सिंह मारे गए।

सरदार सुखदेव सिंह ढिंडसाः हां, वे भी मारे गए। लेकिन डिप्टी चेयरमैन साहब हालात तब तक ठीक नहीं हुए जब तक कि लोगों का साथ नहीं मिला। इसलिए मैं समझता हूं कि लोगों का साथ बहुत जरूरी है। ...(**समय की घंटी**)... सर, मैं सिर्फ दो मिनट और लूंगा। होम मिनिस्टर साहब बैठे हैं। तुलसी साहब और बाजवा साहब ने भी अपनी बात रखी कि कश्मीर में सिखों की क्या हालत है? सर, वे भी वहां 75,000 से ज्यादा हैं और 70-80 गांवों में रहते हैं। जब हमारी सरकार थी तो उसमें मैं भी मिनिस्टर रहा हूं। वहां चित्तीसिंहपुरा में 36 सिखों को मार दिया गया था। उस बारे में किसी ने अभी तक रिपोर्ट नहीं दी है। जो कमीशन बना, उसकी रिपोर्ट नहीं आई। मैं चाहूंगा कि उनके लिए भी कुछ किया जाए। सर, उनको मुलाजमत भी नहीं मिलती है। मैं सभी सरकारों के हर चीफ मिनिस्टर से दो-तीन बार मिला हूं और कहा है कि किसी को कोई नौकरी नहीं दी है। सर न ही उन्हें वहां minority status मिला है और न ही उन्हें काउंसिल में कोई रिजर्वेशन है। वहां उनके लिए कोई पैकेज भी नहीं है। ...(**व्यवधान**)... ठीक है, पंडितों के साथ भी बुरा हुआ, लेकिन इसके बावजूद वे तो वहां पर अपना देश समझकर बैठे हैं।

सर, मैं होम मिनिस्टर साहब को इस बात के लिए बधाई देना चाहता हूं कि आज दोनों जगह आपकी सरकारें हैं - सेंट्रल में भी हैं और वहां भी हैं। आपको ऐसा मौका कभी नहीं मिलेगा। अगर कश्मीर का मसला हल होगा, तो इसी से होगा, क्योंकि दोनों जगह आपकी सरकारें हैं, नहीं तो स्टेट में किसी और पार्टी की होती है और सेंटर में किसी और पार्टी की होती है। सर, इतना ही कहकर मैं अपनी बात समाप्त करता हूं। Thank you very much.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now I have four names received after the commencement of the discussion. The subject being very important, I don't mind giving each Member three minutes if the House has no objection.

SHRI NEERAJ SHEKHAR (Uttar Pradesh): What about Mantriji?

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mantriji is also included in that. Mantriji, please sit down. I will give you time. I will allow you also. So, if the House has no objection, I will give each Member three minutes because the subject is very important, let us hear them also. Each Member should confine himself to three minutes positively. Mr. Minister.

श्री रामदास अठावलेः डिप्टी चेयरमैन सर, मैं आपका आभार व्यक्त करता हूं कि आपने मुझे बहुत महत्व के विषय पर बोलने का मौका दिया।

सर, हमारा संविधान भारत की एकता और अखंडता को मजबूत बनाता है। आज यहां कश्मीर के बारे में चर्चा हो रही है। मैं कहना चाहूंगा कि,

"जो हमारा है सिर, वह है हमारा कश्मीर, पाकिस्तान चला रहा है वहां तीर।

पाकिस्तान चला रहा है तीर, लेकिन नहीं झुकेगा कश्मीर।"

डिप्टी चेयरमैन सर, कश्मीर कब तक जलता रहेगा?

"कश्मीर कब तक जलता रहेगा,
वहाँ आतंकवाद कब तक पलता रहेगा?

उपसभापति जी, हम सभी लोग पाकिस्तान के लिए आदर व्यक्त करते थे। मैं तीन बार पाकिस्तान होकर आया हूं, पाकिस्तान की जनता भारत के खिलाफ नहीं है। हमारे कश्मीर पर पाकिस्तान ने कब्ज़ा किया। वहाँ पाकिस्तान की आर्मी क्यों आई? जम्मू-कश्मीर राजा हरि सिंह के ताबे में था। जब भारत को 15 अगस्त, 1947 को आज़ादी मिली, तब उन्होंने, पाकिस्तान ने, कश्मीर पर अचानक हमला किया। पाकिस्तान को हमला करने की क्या जरूरत थी? पाकिस्तान आगे आता रहा, पाकिस्तान की आर्मी आगे आती रही। राजा हरि सिंह और पं. जवाहरलाल नेहरू के बीच में एग्रीमेंट हुआ। जब पं. जवाहरलाल नेहरू ने ऐलान किया, तब, उसके बाद कश्मीर का भारत के साथ रहने का एग्रीमेंट हुआ। हम अपने कश्मीर को, अपने भारत से कटने नहीं देंगे। हम अपने सिर को भारत से कटने नहीं देंगे और अपनी अखंडता को मिटने नहीं देंगे।

मैं कश्मीर के तमाम नौजवानों से कहना चाहता हूं कि तुम्हारे ऊपर अन्याय हुआ है, हमारे ऊपर भी अन्याय होता रहा है, दलितों पर रोज अत्याचार होते हैं, लेकिन हम दलितस्तान की मांग नहीं करते हैं। उपसभापति महोदय, हमारे ऊपर रोज हमले हो रहे हैं, लेकिन हम भारत के साथ रहेंगे। हम मर-मिटेंगे, चाहे जो कुछ भी हो जाए, लेकिन हम भारत की एकता के लिए काम करेंगे। हम बाबा साहब अम्बेडकर जी के अनुयायी हैं और बाबा साहब ने हमें बताया है कि देश तुम्हारे धर्म, जाति और भाषा से बहुत बड़ा है, इसलिए भारत कभी नहीं टूटेगा। जो भारत को तोड़ने की कोशिश करेगा, उसका सत्यानाश होगा। भारत कभी भी टूट नहीं सकता है। मैं कश्मीर के नौजवानों से कहना चाहता हूं, सरकार से भी मेरा निवेदन है, उस सरकार ने कुछ नहीं किया, थोड़ा-बहुत किया, आपने भी किया, कांग्रेस पार्टी ने किया, लेकिन आतंकवाद को खत्म करने में आपको सफलता नहीं मिली, हमें भी सवा दो साल होने वाले हैं, लेकिन हमें भी सफलता नहीं मिल रही है। आतंकवाद का सामना कैसे करना है? अगर वहाँ से आर्मी निकालेंगे, तो क्या होगा? ...(**समय की घंटी**)... उपसभापति जी, थोड़ा-सा टाइम और दे दीजिए। ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: All right. Okay.

श्री रामदास अठावलेः अगर वहाँ से आर्मी निकाल लेंगे, तो वहाँ के लोगों की रक्षा कौन करेगा? जो innocent लोग हैं, उन पर अन्याय नहीं होना चाहिए। जो आतंकवादी हैं, आर्मी को, उन आतंकवादियों को पकड़ना चाहिए, लेकिन बहुत बार ऐसा होता है कि आतंकवादी छूट जाते हैं और दूसरे लोग पकड़े जाते हैं। ऐसा नहीं होना चाहिए। ...(**समय की घंटी**)...

श्री उपसभापतिः बैठिए, बैठिए।

श्री रामदास अठावलेः उपसभापति महोदय, इसीलिए मेरा यह कहना है कि इसका जम्मू-कश्मीर नाम है, लेकिन लद्दाख में बुद्धिस्ट कम्युनिटी रहती है, जम्मू में हिंदू कम्युनिटी ज्यादा रहती है, कश्मीर में मुस्लिम कम्युनिटी रहती है, यह बहुत बड़ा national integration and national equality है। इसका नाम Jammu, Kashmir and Laddakh रखना चाहिए। हमारी होम मिनिस्ट्री ने ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापतिः ओ.के., अभी बैठिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री रामदास अठावलेः उपसभापति महोदय, मेरा इतना ही कहना है कि यह जो पाक ऑक्युपाइड कश्मीर है, उसके लिए मेरा सरकार से निवेदन है, मेरा पाकिस्तान से भी निवेदन है कि जो पाक ऑक्युपाइड कश्मीर है, जो हमारे भारत का कश्मीर है,उसको जल्दी से जल्दी छोड़ दे। ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापतिः ओ.के, बैठिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री रामदास अठावलेः थोड़ा-सा ...(**व्यवधान**)... होम मिनिस्टर साहब ...(**व्यवधान**)... अगर वह नहीं छोड़ेगा, तो जो पाक ऑक्युपाइड कश्मीर है ...(**व्यवधान**)... उस पाक ऑक्युपाइड कश्मीर को अपने ताबे में लेना चाहिए ...(**व्यवधान**)... अगर वक्त आ गया तो पाकिस्तान को भी ताबे में लेना चाहिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापतिः ओ.के. बैठिए, बैठिए। All right. *...(Interruptions)...* Shri Anil Desai now. *...(Interruptions)...* Mr. Anil Desai, you may start. *...(Interruptions)...*

श्री रामदास अठावलेः पाकिस्तान हमारा है। ...(**व्यवधान**)... वहाँ क्या झगड़ा है? ...(**व्यवधान**)... वहाँ पाकिस्तानी भी हिंदी बोलते हैं। ...(**व्यवधान**)... पाकिस्तान हमारा है। ...(**व्यवधान**)... इस झगड़े को खत्म करना चाहिए। मैं अच्छी बात कह रहा हूं। ...(**व्यवधान**)... अखंड भारत के संकल्प को पूरा करने के लिए ...(**व्यवधान**)... कश्मीर भारत के साथ रहेगा। ...(**व्यवधान**)... भारत से अलग नहीं होगा। ...(**व्यवधान**)... हम कश्मीर को अलग नहीं होने देंगे। जय भीम, जय भारत।

श्री उपसभापतिः ओ.के. बैठिए, बैठिए। Now, Mr. Anil Desai.

SHRI ANIL DESAI (Maharashtra): Thank you, Mr. Deputy Chairman, Sir, for giving me an opportunity to speak on this very serious subject, which is being discussed and debated in the House today. Many speakers, across Party lines, have expressed their feelings. All the hon. Members are unanimously saying that Kashmir is an integral part of India and that we will never give up Kashmir, come what may. आज कश्मीर के जो हालात हो रहे हैं, वे बहुत गंभीर हालात हैं। कश्मीर की जनता, कश्मीर के लोग इन हालातों से जूझ रहे हैं, बेकसूर लोग मारे जा रहे हैं, stone pelting हो रही है। उसी दरमियान हमारे प्रधान मंत्री जी ने जो

[Shri Anil Desai]

बयान दिया है कि कश्मीर के नौजवानों के हाथों में लैपटॉप होना चाहिए, उनके हाथों में कलम होनी चाहिए। मैं यह बात समझता हूं कि यह बहुत अच्छी पहल है, अच्छी शुरूआत है। जिस तरह से मामला बढ़ रहा है, गए 32 दिनों में, महीना हो गया और कश्मीर में कर्फ्यू है, लेकिन अगर हम जड़ की बात सोचें, जैसा येचुरी जी ने कहा कि dialogue should start. We should have dialogue. But with whom should we have a dialogue? Is the Pakistan Government controlling Pakistan? Do they have power? Do we have to have a dialogue with the Pakistan Government which is feeble by itself? It is governed by the Army; it is controlled by the Army; it has substantial power of the ISI. हम किसके साथ dialogue करें? Separatist force से? आज भी अगर हम पाकिस्तान की history देखें, यहाँ पर सारे लोगों ने यह बयान दिया है कि 1947 हो या 1965 हो, 1971 हो या कारगिल का war हो, every time they fought with us, they lost the battle, but, despite all these things, they had continued to foment terrorism in India and the Indian soil. आज जो बातें कही गई हैं, यह जरूर है कि कश्मीर के लोग हमारे भाई हैं, कश्मीर का हर नागरिक हिन्दुस्तान का नागरिक है। कश्मीर के लोगों के लिए जो कदम उठाने चाहिए, जिस तरह से उनकी awareness और conciliation meetings वगैरह की जो बातें कही गई हैं, उनके लिए political process शुरू होनी बहुत जरूरी है। उसके लिए हमारे दिल में कोई नहीं है, लेकिन जैसे महाभारत में शिखंडी की आड़ से प्रघात किया जाता था, बदकिस्मती से कश्मीर के लोगों को लेकर ISI या terrorists या separatists लोग उस तरह की बातें कर रहे हैं। यह process जरूर होनी चाहिए कि इन लोगों के साथ बातचीत की जाए, क्योंकि ये हमारे लोग हैं, ये हिन्दुस्तानी हैं, यह उनका हक बनता है। लेकिन जो वाकयात हुए, जो बातें हुईं, पठानकोट में क्या हुआ, पाकिस्तान ने हमारे साथ किस तरह से सलूक किया? If you go back, तन्खा जी ने कश्मीरियों की बात कही। कश्मीरी पंडितों के साथ जिस तरह का सलूक किया गया, ...(**समय की घंटी**)... I will just take one or two minutes. कश्मीरी पंडितों के साथ जिस तरह का सलूक किया गया, जिस तरह से उनको निकाला गया, आज वे वहां जाना चाहते हैं, लेकिन अगर वहां पर separatist force के जरिए स्टेट गवर्नमेंट भी यह लाइन लेती है, तो यह बहुत गलत है। अटल जी ने जो प्रयास शुरू किए थे, समझौता एक्सप्रेस वगैरह शुरू की थी ...(**समय की घंटी**)... कांग्रेस ने भी अच्छे प्रयास किए थे कि वह वहाँ एक normalcy ले आई। अटल जी ने जो प्रयास किए, आज हम उसी रास्ते पर जरूर जाना चाहते हैं, लेकिन क्या यह संभव होगा? ...(**समय की घंटी**)... How will the normalcy return? Sir, I am making a point. जब कश्मीरी वहाँ से बाहर गए, तब कश्मीरियों के हिन्दुस्तानी होने के नाते शिव सेना प्रमुख, बाला साहेब ठाकरे जी ने उन्हीं कश्मीरियों के लिए ...(**समय की घंटी**)... महाराष्ट्र में हर दरवाजे खोल दिए। ...(**समय की घंटी**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay, all right. There is no time. That is over ...*(Interruptions)*... Nothing more is going on record. Now, Munvvar Saleem. You have only three minutes and not even one minute more.

चौधरी मुनव्वर सलीम (उत्तर प्रदेश) : मान्यवर, मेरी पार्टी की तरफ से माननीय प्रोफेसर साहब ने जो मशविरे दिए हैं, वे इतने concrete और मजबूत मशविरे हैं कि माननीय गृह मंत्री जी अगर उनका संज्ञान लेंगे, तो कुछ बाकी नहीं बचेगा। आज नवाज शरीफ ने UNO को जो खत लिखा है, मैं उसके संदर्भ में एक कवि की चार पंक्तियाँ पढ़ना चाहता हूँ।

"कश्मीर तेरे ख्वाब की ताबीर नहीं है,
कश्मीर में रहना तेरी तकदीर नहीं है।
कश्मीर हमारा है, हमारा ही रहेगा,
कश्मीर तेरे बाप की जागीर नहीं है।।"

मान्यवर, कश्मीर हिन्दुस्तान का वह सूबा था, जब गाँधी जी 1947 में सांप्रदायिक दंगों से परेशान हो गए, तो मरने से कुछ दिन पहले 1948 में वे कश्मीर पहुंचे। गाँधी जी ने उस समय कहा कि कश्मीर की जो मोहब्बत है, जो भाईचारा है, उसे देख कर मेरा दिल इस बात के लिए इत्मीनान जाहिर करता है कि हिन्दुस्तान में इसी तरह की सद्भावना कायम हो जाएगी। कश्मीर में शेख अब्दुल्ला के नेतृत्व में उनके और कश्मीरी पंडितों के बीच जो रिश्ता था, वह इतना मजबूत था, स्वर्गीय हरि सिंह जी का वहाँ के आवाम से जो रिश्ता था, वह इतना मजबूत था कि उसको देख कर यह लगता ही नहीं था कि यहाँ कोई सांप्रदायित दुर्भावना है। मैं आज सदन के माध्यम से कश्मीरी नौजवानों से सिर्फ यह कहने के लिए खड़ा हुआ हूं कि पूरा मुल्क़ और खासतौर से हिन्दुस्तानी मुसलमान उनके साथ हैं, लेकिन उनके सीने पर लगने वाली हर गोली, पाकिस्तान के कारण ही उनके सीने पर लग रही है। उन्हें पाकिस्तान से दूर हो जाना चाहिए। पाकिस्तान की सरहदों से आग बरसती है।

मान्यवर, मैं एमपी बनने के बाद सबसे पहले कश्मीर गया था और मैंने कश्मीर के सबसे सेंसिटिव इलाके, Rajouri से चलकर Mandore में सभा की थी, तालीमी सेमिनार की थी। वहां पर मेरे उत्तर प्रदेश से एक आईपीएस ऑफिसर था, उसने मुझे कहा कि इस मजमे में आप कहीं 'हिन्दुस्तान जिन्दाबाद', 'भारत माता की जय' या 'जय हिन्द' मत बोल देना, लेकिन मैंने Mandore में पूरे मजमे को एड्रेस किया और मजमे को एड्रेस करने के बाद 'हिन्दुस्तान जिन्दाबाद' के अनेक नारे लगवाए और उन्होंने भी मेरे साथ ये नारे लगाए।

मान्यवर, मैं कहना यह चाहता हूं, जैसा कि प्रोफेसर साहब ने कहा कि गंगा गंगोत्री से पाक होगी, तो फिर कानपुर में भी शुद्ध मिलेगी। आतंकवाद सीमा पार से आता है। कश्मीर हमारा है और हमारा ही रहेगा और हमारे कश्मीर में आज भी मोहब्बत की बारिश है। लेकिन माननीय गृह मंत्री जी, वहां जिस गन का इस्तेमाल हो रहा है, उस गन से बड़ा जुल्म हो रहा है, इसके लिए आपके अंदर की मानवीय संवेदनाएं जागनी चाहिए और उन नौजवानों के ऊपर वह गन नहीं चलनी चाहिए। आज अगर आप यह ऐलान करेंगे, तो हमें बहुत अच्छा लगेगा। बहुत-बहुत शुक्रिया, हिन्दुस्तान जिन्दाबाद।

†**چودھری منور سلیم (اترپردیش):** مانیور، میری پارٹی کی طرف سے مانینے پروفیسر صاحب نے جو مشورے دیئے ہیں، وہ اتنے concrete اور مضبوط مشورے ہیں کہ مانینے گرہ منتری جی اگر ان کا سنگیان لیں گے، تو کچھ باقی نہیں بچے گا۔ آج نواز شریف نے UNO کو جو خط لکھا ہے، میں اس کے سندربھ میں ایک کوی کی چار پنکتیاں پڑھنا چاہتا ہوں ۔

کشمیر تیرے خواب کی تعبیر نہیں ہے
کشمیر میں رہنا تیری تقدیر نہیں ہے
کشمیر ہمارا ہے، ہمارا ہی رہے گا
کشمیر تیرے باپ کی جاگیر نہیں ہے

مانیور، کشمیر ہندستان کا وہ صوبہ تھا، جب گاندھی جی 1947 میں سامپردائک دنگوں سے پریشان ہوگئے، تو مرنے سے کچھ دن پہلے 1948 میں وہ کشمیر پہنچے۔ گاندھی جی نے اس وقت کہا کہ کشمیر کی جو محبت ہے، جو بھائی چارہ ہے، اسے دیکھ کر میرا دل اس بات کے لیے اطمینان ظاہر کرتا ہے کہ ہندستان میں اسی طرح کی سدبھاؤنا قائم ہوجائے گی۔ کشمیر میں شیخ عبداللہ کی

†Transliteration in Urdu script.

[चौधरी मुनव्वर सलीम]

قیادت میں ان کے اور کشمیری پنڈتوں کے بیچ جو رشتہ تھا، وہ اتنا مضبوط تھا، مرحوم ہر سنگھ جی کا وہاں کے عوام سے جو رشتہ تھا، وہ اتنا مضبوط تھا کہ اس کو دیکھ کر یہ لگتا ہی نہیں تھا کہ یہاں کوئی سامپردائک دُربھاؤنا ہے۔

میں آج سدن کے مادھیم سے کشمیری نوجوانوں سے صرف یہ کہنے کے لیے کھڑا ہوا ہوں کہ پورا ملک اور خاص طور سے ہندستانی مسلمان ان کے ساتھ ہیں، لیکن ان کے سینے پر لگنے والی ہر گولی، پاکستان کی وجہ سے ہی ان کے سینے پر لگ رہی ہے۔ انہیں پاکستان سے دور ہوجانا چاہیئے۔ پاکستان کی سرحدوں سے آگ برستی ہے۔

مانیور، میں ایم پی بننے کے بعد سب سے پہلے کشمیر گیا تھا اور میں نے کشمیر کے سب سے سینسیٹیو علاقے، Rajouri سے چل کر Mandore میں سبھا کی تھی، تعلیمی سیمنار کی تھی۔ وہاں پر میرے اترپردیش سے ایک آئی پی ایس آفیسر تھا، اس نے مجھے کہا کہ اس مجمع میں آپ کہیں 'ہندستان زندہ باد'، 'بھارت ماتا کی جے' یا 'جے ہند' مت بول دینا، لیکن میں نے Mandore میں پورے مجمع کو ایڈریس کیا اور مجمع کو ایڈریس کرنے کے بعد 'ہندستان زندہ باد' کے انیک نعرے لگوائے اور انہوں نےبھی میرے ساتھ یہ نعرے لگائے۔

مانیور، میں کہنا چاہتا ہوں، جیسا کہ پروفیسرصاحب نے کہا کہ گنگا گنگوتری سے پاک ہوگی، تو پھر کانپور میں بھی شدھ ملیگی۔ آتنک واد سیما پار سے آتا ہے۔ کشمیر ہمارا ہے اور ہمارا ہی رہیگا اور ہمارے کشمیر میں آج بھی محبت کی بارش ہے۔ لیکن مانینے گرہ منتری جی، وہاں جس گن کا استعمال ہورہا ہے، اس گن سے بڑا ظلم ہورہا ہے، اس کے لیے آپ کے اندر کی مانوی سنویدنائیں جگنی چاہیئں اور ان نوجوانوں کے اوپر وہ گن نہیں چلنی چاہیئے۔ آج

اگر آپ یہ اعلان کریں گے، تو ہمیں بہت اچھا لگے گا۔ بہت بہت شکریہ، 'ہندستان زندہ باد'۔

श्री गुलाम नबी आज़ादः सर, माननीय होम मिनिस्टर जवाब दे रहे हैं, मैं भाषण नहीं करूंगा, मैं उनसे सिर्फ दो सवाल पूछना चाहूंगा और उम्मीद करता हूं कि होम मिनिस्टर साहब इन सवालों का जवाब देंगे।

मुझे बहुत खुशी है कि अभी पौने आठ घंटे तक सदन में कश्मीर पर चर्चा हुई और जब तक माननीय गृह मंत्री जी जवाब देंगे, तब तक शायद पौने नौ घंटे हो चुके होंगे। मैंने अपने 35-36 साल के अरसे में, इतने भरे हुए हाउस में, कश्मीर पर कभी भी इतनी बहस होते हुए नहीं देखी। इसका मतलब यह है कि चारों तरफ से, सभी एमपीज़ और सभी पार्टीज़ ने इसकी गंभीरता को महसूस किया है और सभी ने बहुत ही अच्छे वातावरण में, बहुत ही अच्छे माहौल में यहां बात की है। मुझे उम्मीद है कि इसके बाद जनाब होम मिनिस्टर साहब, पार्लियामेंट की तरफ से, कश्मीरी अवाम को अपील भी करेंगे।

सर, मेरे दो सवाल हैं। एक यह कि इस वक्त कश्मीर वादी में यह आम बात चल रही है कि हफ्ते या दस दिन के अंदर, ज्यों ही अमरनाथ यात्रा खत्म होगी, उसके बाद वैली को आर्मी के हवाले कर दिया जाएगा। मेरे ख्याल में होम मिनिस्टर साहब को यह क्लीयर करना चाहिए, क्योंकि अगर यह बात फैल गई, तो कुछ न होने से पहले ही कुछ हो जाएगा। कश्मीर के हालात को ठीक करने में इस बात का स्पष्टीकरण करना बहुत जरूरी है।

दूसरा, आज सुबह से ही Leader of the House और जनाब होम मिनिस्टर साहब ने सभी political parties को सुना। सभी ने यह बात कही और सभी का यह मानना है कि सिर्फ नौकरी देने से यह मामला हल नहीं होगा और economic packages देने से भी यह मामला हल नहीं होगा। अब तक हम economic packages, नौकरी, सड़क, बिजली, स्कूल, इंस्टीट्यूशन इत्यादि को बहुत पीछे छोड़ चुके हैं। इस वक्त के हालात में उनसे बात करने की जरूरत है।

मैं होम मिनिस्टर साहब से यह गुज़ारिश करूंगा कि क्या आप mainstream political parties के साथ, जो moderates हैं, उनके साथ और कश्मीर में जो दूसरे stakeholders हैं, उनके साथ बात करना शुरू करेंगे? पाकिस्तान के अभी वे हालात नहीं हैं, भले ही वह यूएनओ पहुंच गया है और कहां-कहां पहुंच गया है, लेकिन हम इसकी शुरुआत अपने घर से ही करें। जब हम अपने घर के लोगों से बात करेंगे, तभी हम परायों से बात करेंगे। Moderates के साथ जो दूसरी mainstream parties के लोग हैं या जो other stakeholders हैं, अगर आप उनसे बात करेंगे, तो शायद आज के हालात को ठीक करने में कुछ मदद होगी।

तीसरा, आज हो या हफ्ते बाद हो, क्या पार्लियामेंट से all party delegation कश्मीर जाएगा? बहुत-बहुत धन्यवाद।

[चौधरी मुनव्वर सलीम]

†**قائد حزب اختلاف (جناب غلام نبی آزاد)** : سر، مانّنے ہوم منسٹر جواب دے ہیں، میں بھاشن نہیں کروں گا، میں نے سے صرف دو سوال پوچھنا چاہوں گا اور امید کرتا ہوں کہ ہوم منسٹر صاحب ان سوالوں کا جواب دیں گے۔

مجھے بہت خوشی ہے کہ ابھی پونے آٹھ گھنٹے تک سدن میں کشمیر پر چرچا ہوئی اور جب تک مانّنے گرہ منتری جی جواب دیں گے، تب تک شاید پونے نو گھنٹے ہو چکے ہوں گے۔ میں اپنے 36-35 سال کے عرصے میں، اتنے بھرے ہوئے ہاؤس میں، اتنے بھرے ہوئے ہاؤس میں، کشمیر پر کبھی بھی اتنی بحث ہوتے ہوئے نہیں دیکھی۔ اس کا مطلب یہ ہے چاروں طرف سے، سبھی ایم پیز اور سبھی پارٹیز نے اس کی گمبھیرتا کو محسوس کیا ہے اور سبھی نے بہت ہی اچھے واتاورن میں، بہت ہی اچھے ماحول میں یہاں بات کی ہے۔ مجھے امید ہے کہ اس کے بعد جناب ہوم منسٹر صاحب، پارلیمنٹ کی طرف سے، کشمیری عوام کو اپیل بھی کریں گے۔

سر، میرے دو سوال ہیں۔ ایک یہ کہ اس وقت کشمیر وادی میں یہ عام بات چل رہی ہے کہ ہفتے یا دس دن کے اندر، جیوں ہی امرناتھ یاترا ختم ہوگی، اس کے بعد ویلی کو آرمی کے حوالے کر دیا جائے گا۔ میرے خیال میں ہوم منسٹر صاحب کو یہ کلئیر کرنا چاہئے، کیوں کہ اگر یہ بات پھیل گئی، تو کچھ نہ ہونے سے پہلے ہی کچھ ہو جائے گا۔ کشمیر کے حالات کو ٹھیک کرنے میں اس بات اسپشٹیکرن کرنا بہت ضروری ہے۔

†Transliteration in Urdu script.

دوسرا، آج صبح سے ہی لیڈر آف دی ہاؤس اور جناب ہوم منسٹر صاحب نے سبھی پولیٹکل پارٹیز کو سنا۔ سبھی نے یہ بات کہی اور سبھی کا یہ ماننا ہے کہ صرف نوکری دینے سے یہ معاملہ حل نہیں ہوگا اور اکونومک پیکیجس دینے سے بھی یہ معاملہ حل نہیں ہوگا۔ اب تک ہم اکونومی پیکیجس، نوکری، سڑک، بجلی، اسکول، انسٹی ٹیوشن وغیرہ کو بہت پیچھے چھوڑ چکے ہیں۔ اس وقت کے حالات میں ان سے بات کرنے کی ضرورت ہے۔

میں ہوم منسٹر صاحب سے یہ گزارش کروں گا کہ آپ مین اسٹریم پولیٹکل پارٹیز کے ساتھہ، جو موڈریٹس ہیں، ان کے ساتھہ اور کشمیر میں جو دوسرے اسٹیک-ہولڈرس ہیں، ان کے ساتھہ بات کرنا شروع کریں گے؟ پاکستان کے ابھی وہ حالات نہیں ہیں، بھلے ہی وہ یو۔این۔او۔ پہنچ گیا ہے اور کہاں کہاں پہنچ گیا ہے، لیکن ہم اس کی شروعات اپنے گھر سے ہی کریں۔ جب ہم اپنے گھر کے لوگوں سے بات کریں گے، تبھی ہم پراؤں سے بات کریں گے۔ موڈریٹس کے ساتھہ جو دوسری مین-اسٹریم پارٹیز کے لوگ ہیں یا جو دوسرے اسٹیک-ہولڈرس ہیں، اگر آپ ان بات کریں گے، تو شاید آج کے حالات کو ٹھیک کرنے میں کچھہ مدد ہوگی۔

تیسرا، آج ہو یا ہفتے بعد ہو، کیا پارلیمنٹ سے آل پارٹی ڈیلی گیشن کشمیر جائے گا؟ بہت بہت دھنیواد۔

गृह मंत्री (श्री राजनाथ सिंह): डिप्टी चेयरमैन सर, राज्य सभा और लोक सभा का मिला कर मेरा 19 वर्ष से अधिक का समय हो गया है, लगभग 20 वर्ष मैंने पूरे किए हैं। लोक सभा की भी और राज्य सभा की भी कार्यवाही में मैंने कई बार हिस्सा लिया है और उसे देखने का भी अवसर मिला है, लेकिन इन बीस वर्षों के इतिहास में कभी भी जम्मू-कश्मीर के संबंध में इतनी लम्बी चर्चा न कभी देखी थी, न सुनी थी। मेरे लिए सबसे सुखद स्थिति यह है कि जो यह चर्चा हुई है, इसे हम केवल स्तरीय चर्चा नहीं कहेंगे, बल्कि इस सदन में उच्च-स्तरीय चर्चा हुई है। इसके लिए मैं एक बार सभी को अपनी तरफ से बधाई देना चाहता हूँ। हेल्दी डेमोक्रेसी, स्वस्थ लोकतंत्र की बात की जाती है, हो सकता है कि यदि कोई अदना ऐसा व्यक्ति हो, जिसको हेल्दी डेमोक्रेसी की डेफिनेशन न समझ में आती हो, स्वस्थ लोकतंत्र कहते किसे हैं, यह न समझ में आता हो, तो डिप्टी चेयरमैन साहब, वह यदि दिन भर बैठकर हमारे राज्य सभा की कार्यवाही को देख लेगा, उसे समझ में आ जाएगा कि हेल्दी डेमोक्रेसी कहते किसे हैं? आज की जैसी चर्चा हुई है, सचमुच हम सबको नाज होना चाहिए कि हमारे भारत की संसद ऐसी

[श्री राजनाथ सिंह]

है। बहुत से माननीय सदस्यों ने इस चर्चा में भाग लिया है और मैं अपनी जिम्मेदारी समझता हूँ, क्योंकि जब मैं नाम लेता हूँ, तो नाम लेने के पीछे हमारा मकसद यह होता है कि उन्होंने जो कुछ भी कहा है, पॉजिटिव कहा है, निगेटिव कहा है, न्यूट्रल रहे हैं, सबके प्रति एक सम्मान के भाव की अभिव्यक्ति करनी होती है, यह उसके पीछे उद्देश्य होता है। इस चर्चा को इनीशिएट करने का काम हमारे ऑनरेबल लीडर ऑफ अपोजीशन, गुलाम नबी आज़ाद साहब ने किया है और जम्मू-कश्मीर के श्री शमशेर सिंह मन्हास, प्रो. राम गोपाल जी यादव, श्री ए. नवनीतकृष्णन जी, श्री देरेक ओब्राईन जी, श्रीमान् शरद यादव जी, श्रीमान् सीताराम येचुरी, श्री दिलीप कुमार तिर्की, श्री मुनक़ाद अली जी, श्री डी.पी. त्रिपाठी जी, श्री स्वपन दासगुप्ता, नज़ीर अहमद साहब, आदरणीय डा. कर्ण सिंह जी, श्री जितेन्द्र सिंह जी, श्री के.टी.एस. तुलसी, श्री प्रताप सिंह बाजवा, डा. विनय पी. सहस्रबुद्धे जी, मीर मोहम्मद फ़ैयाज़ जी, श्री विवेक के. तन्खा, डा. के. केशव राव, श्री डी. राजा, श्री टी.के.एस. एलंगोवन, श्री राम जेठमलानी, श्री अब्दुल वहाब, श्री बिश्वजीत दैमारी, श्री सुखदेव सिंह ढिंडसा, श्री रामदास अठावले, श्री अनिल देसाई और चौधरी मुनव्वर सलीम, इन 29 लोगों ने चर्चा में अपने विचार व्यक्त किए हैं।

श्रीमन्, बैठे-बैठे मैं यह सोच रहा था कि अपनी चर्चा की शुरुआत कहां से करूं, लेकिन मैं अपना यह एक फर्ज समझता हूँ कि कश्मीर की सिचुएशन को लेकर जो इस संसद ने चिंता व्यक्त की है, तो इस समय की सिचुएशन के बारे में एक मोटी-मोटी जानकारी दे दूं। मैं संसद को यह भी जानकारी देना चाहता हूं कि मैं 23 और 24 जुलाई को कश्मीर गया था। वहां पर जाने के बाद मैंने क्या-क्या किया है, वह मैं सदन को बताना चाहता हूं। हमने 23, 24 जुलाई को श्रीनगर और अनंतनाग, दोनों का दौरा किया था और वहां पर हमने लगभग तीस से अधिक डेलीगेशंस से बातचीत की थी। उनमें सब्जी उत्पादक थे, नौका चलाने वाले थे, विभिन्न समुदायों के संगठन थे, विकास मंचों के प्रतिनिधि थे, चेंबर ऑफ कॉमर्स से थे, कार्यरत, सेवा-निवृत्त थे और साथ ही साथ मुख्य मंत्री जी भी अपने पूरे मंत्रिमंडल के साथ मिली थी, सभी राजनीतिक दलों के लोग भी मुझसे मिले थे। उन्होंने कश्मीर की सिचुएशन पर भी गंभीरतापूर्वक चर्चा की थी। कश्मीर में लगातार 9 जुलाई से ही जो वहां सो-कॉल्ड लीडर्स हैं, उनके द्वारा आह्वान किया जा रहा है, जिन्हें हम अलगाववादी नेता कहते हैं, उनके द्वारा भी आह्वान किया जा रहा है। कश्मीर में 9 तारीख से लगातार हड़ताल रहेगी, यह आह्वान बराबर उनके द्वारा चल रहा है। जिन शहरों में, जिन स्थानों में कर्फ्यू नहीं भी होता है, वहां भय से बाजार नहीं खुल पाते हैं। एक धारणा बनी हुई है कि पूरी कश्मीर वैली में कर्फ्यू ही कर्फ्यू है, ऐसा नहीं है। लगातार कर्फ्यू लगा हुआ है, ऐसा नहीं है। कभी कुछ समय के लिए कर्फ्यू लगता है, उसके बाद कर्फ्यू को रिमूव भी करते हैं, लेकिन भय से भी बाजार बंद रहते हैं। यह मैंने वहां देखा था और आज भी, जब मैं जानकारी प्राप्त करता हूँ, तो कमोबेश वही स्थिति है। मैं यह बात कह सकता हूँ कि जो कुछ भी वहां हो रहा है, वह केवल कश्मीर के

6.00 P.M.

लोगों के द्वारा ही हो रहा है, ऐसा नहीं है, बल्कि मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि जो कुछ भी कश्मीर में हो रहा है, वह पाकिस्तान sponsored है। यह कहने में मुझे संकोच नहीं है। वहां जो भी कुछ नेताओं के so-called leaders के द्वारा एक प्रकार की strategy अपनाई गई है, उसके बावजूद मैं राज्य सरकार को भी बधाई देना चाहता हूं। इन कठिन परिस्थितियों में जिस तरीके से मेहबूबा मुफ़्ती जी के नेतृत्व में वहां की राज्य सरकार काम कर रही है, उसकी भी निश्चित रूप से सराहना करनी चाहिए, क्योंकि जनता की सुविधाओं का वहां की मुख्य मंत्री ने पूरा ध्यान रखा है। मैं एक नज़ीर पेश करना चाहता हूँ कि उन्होंने क्या-क्या ध्यान रखा है। वहां पर लंबे समय से कर्फ्यू लगे होने के बावजूद भी 'नेशनल फूड सिक्युरिटी स्कीम' के तहत 95 परसेंट फूड ग्रेन के distribution का काम पूरा हुआ है। औसत बांटी जाने वाली करीब 48 हजार क्विंटल चीनी की तुलना में 34 हजार क्विंटल चीनी का वितरण हुआ है। जब normal situation होती है, तब प्रायः औसत 48 हजार क्विंटल चीनी का distribution होता है, लेकिन इन वितरीत परिस्थितियों में भी लगभग 34 हजार क्विंटल चीनी का वितरण हुआ है। इसी अवधि में वहां पर लगभग 3,10,000 एलपीजी गैस सिलिंडर्स की बिक्री भी हुई है।

डिप्टी चेयरमैन सर, घाटी में सभी प्रकार की वस्तुओं का स्टॉक उपलब्ध है। जैसे यह कहा जाता है कि वहां वस्तुओं का स्टॉक उपलब्ध नहीं है। जैसे यह कहा जाता है कि वहां वस्तुओं का स्टॉक उपलब्ध नहीं है, ऐसे में लोग कहां से सामान खरीदें, क्या करें? लेकिन ऐसा नहीं है, वहां पर स्टॉक उपलब्ध है। मैं उदाहरण के लिए बताना चाहूंगा कि श्रीनगर में करीब 2,300 क्विंटल चीनी आज भी उपलब्ध है और वहां पर कई पेट्रोलियम कपनीज़ हैं, उनके पास 18 दिन का एलपीजी स्टॉक, 19 दिनों के लिए पेट्रोल और 32 दिनों के लिए मिट्टी का तेल भी इस समय श्रीनगर में उपलब्ध है। इसी प्रकार घाटी में आम रूप से उपलब्ध फल, सब्जी का भी क्रय-विक्रय राज्य सरकार समय-समय पर कर्फ्यू में ढील देकर insure करती है, सुनिश्चित करती है। इसी प्रकार सुबह होने से पूर्व बच्चों के लिए दूध का जो वितरण करना होता है और लोगों के व्यक्तिगत प्रयोग में जो दूध आता है, उसका भी वितरण होता है।

सर, सदन को मैं यह भी जानकारी देना चाहूंगा कि इतनी वितरीत परिस्थितियों में भी 14 जुलाई से लेकर आज तक आवश्यक वस्तुओं को लेकर यानी फल, सब्जी आदि को लेकर 5,600 ट्रक घाटी में पहुंच रहे हें। मैं यह नहीं कहना चाहता हूं कि इस समय कश्मीर घाटी में रहने वाले लोग पूरी तरह से सामान्य जीवन जी रहे हैं। मैं यह दावा नहीं करना चाहता हूं, लेकिन सारी विपरीत परिस्थितियों के बावजूद वहां की राज्य सरकार के द्वारा भरपूर कोशिश हो रही है कि वहां के रहने वाले लोगों को कम से कम कठिनाइयों का सामना करना पड़े, लेकिन जो स्थिति घाटी में कुछ vested interest और misguided elements ने पैदा की है, उस स्थिति में आम जनता को जो भी सुविधाएं उपलब्ध कराई जा सकती हैं, उन्हें राज्य सरकार ने अपनी तरफ से उपलब्ध कराने की पूरी कोशिश की है।

[श्री राजनाथ सिंह]

जहां तक medical facilities का सवाल है, कश्मीर में जो भी हिंसा हुई है, आज तक लगभग 2,656 मरीज विभिन्न अस्पतालों में पहुंचे, जिनमें से 2,564 को इलाज के बाद डिस्चार्ज किया जा चुका है। अब करीब 100 मरीज भर्ती हैं, जिनमें से 51 मरीज ऐसे हैं, जिनकी आंखों में चोट आई है। दुर्भाग्यवश tone pelting से करीब 100 एम्बुलेंसेज़ पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई हैं, वे पूरी तरह से damage हो गई हैं, उसके बावजूद इस अवधि में 400 से अधिक एम्बुलेंसेज़ इस समय काम कर रही हैं। इसी अवधि में लगभग 5 लाख सामान्य मरीजों का भी ओपीडी में इलाज किया गया, जिनमें से करीब 33 हजार इन्डोर पेशेंट्स थे। लगभग 8 हजार छोटी-बड़ी सर्जरी भी इसी अवधि में की गई है और जहां आवश्यक हुआ है, मरीजों को दिल्ली में भी इलाज हेतु लाया गया है।

दिल्ली के एम्स तथा मुम्बई के आदित्य ज्योति अस्पताल में आई सर्जरी करने वाले दल श्रीनगर होकर आए और उन्होंने वहां चल रहे इलाज पर संतोष व्यक्त किया है। उन्होंने कहा है कि श्रीनगर में pellet guns के कारण जिनकी आंखों में चोट पहुंची है, उनका इलाज ठीक तरीके से चल रहा है। इस पर उन्होंने संतोष व्यक्त किया है। जहां तक non-lethal weapons का प्रश्न है, इसकी चर्चा चूंकि आज के डिस्कशन में आई है, इसका प्रयोग हम लोगों ने पहली बार नहीं किया है, इसके पहले भी इसका प्रयोग हुआ है। लेकिन यह कह कर कि पहले भी इसका प्रयोग हुआ है, हमने भी प्रयोग किया है, इसको मैं जस्टिफाई नहीं करना चाहता हूं। लेकिन हमारा कहना है कि मैंने वहां जाकर सिचुएशन को रिव्यू किया है, उसमें मैंने देखा है और मैंने कहा है कि non-lethal weapons के दूसरे ऑप्शंस क्या हो सकते हैं, इस पर भी विचार होना चाहिए। मैंने आते ही तुरन्त एक्सपर्ट्स की एक कमेटी बना दी थी और मैंने कहा था कि दो महीने के अंदर वह अपनी रिपोर्ट दे। कोई यह सवाल मुझसे पूछ सकता था कि क्या दो तक लगातार ये pellet guns चलती रहेंगी। मेरी तरफ से या सरकार की तरफ से सिक्योरिटी फोर्सेज को इंस्ट्रक्शंस मिले हुए हैं कि जितना मैक्सिमम रेस्ट्रेंट होल्ड कर सकते हैं, उतना करें, यह हम लोगों की तरफ से निर्देश मिला हुआ है।

उपसभापति महोदय, 18 जुलाई को जब इस सम्मानित सदन में इस मुद्दे पर पहले चर्चा हुई, तब उस समय agitations की लगभग 567 घटनाएं हो चुकी थीं। मैं 18 जुलाई के पहले की बात बतला रहा हूं, उन घटनाओं में 33 सिविलियंस और एक सिक्योरिटी फोर्स का जवान मारा गया। उस समय 1,948 सिविलियंस तथा 1,739 सिक्योरिटी फोर्स के जवान घायल हुए थे। लेकिन उसके बाद 18 जुलाई से लेकर 8 अगस्त तक 451 घटनाएं हो चुकी हैं, जिनमें से 10 सिविलियंस और सिक्योरिटी फोर्स के जितने जवान घायल हुए हैं, उनका नम्बर 4,515 है और जो सिविलियंस घायल हुए हैं, उनका नम्बर 3,356 है। यह जो निर्देश सिक्योरिटी फोर्सेज के जवानों को मिला कि जितना संयम बरत सकते हों, उतना संयम बरतें, जल्दी pellet guns का भी प्रयोग न करें। यही परिणाम है कि जो सिक्योरिटी फोर्सेज के जवान घायल हुए हैं, वे 4,500 से अधिक है।

डिप्टी चेयरमैन सर, हम सभी जानते हैं कि सर्वधर्म समभाव और equality for all के आधार पर हम लोगों को आज़ादी हासिल हुई है। इन्हीं को हमारे संविधान की प्रस्तावना का केन्द्र बिन्दु भी बनाया गया है। इस हकीकत को भी समझना चाहिए और कश्मीर में रहने वाले लोगों को भी हर हकीकत को समझना चाहिए। जितना बिहार और बंगाल के लिए हम लोगों का दिल धड़कता है, जितना गुजरात और राजस्थान के लिए दिल धड़कता है, जितना ओडिशा और असम के लिए दिल धड़कता है, उतना ही, डिप्टी चेयरमैन सर, सारे हिन्दुस्तानियों का दिल जम्मू-कश्मीर, लद्दाख के लिए भी धड़कता है, इस हकीकत को समझना चाहिए। इसमें कहीं किसी को संदेह नहीं होना चाहिए।

डिप्टी चेयरमैन सर, चर्चा के दौरान यह भी बात आई कि प्रधान मंत्री जी बाहर क्यों बोले, लोक सभा, राज्य सभा में बोलना चाहिए। मैं भी गृह मंत्री हूं और कल मेरी भी संवेदनशीलता देखिए। प्रधान मंत्री जी ने मंत्री बनाया, कुछ अधिकार मुझे भी प्रदत्त हैं, उन्हें भरोसा है। ऐसा नहीं है कि जो मैं बोलता हूं, वह प्रधान मंत्री जी की मंशा के खिलाफ बोलता हूं। ऐसा नहीं है। उनके भी भाव उसी में सम्मिलित हैं। हमारी उनसे चर्चा होती है। कश्मीर की स्थिति ऐसी है, जिस पर वे भी चिंता व्यक्त करते हैं कि इसमें क्या करना चाहिए, क्या कदम उठाने चाहिए। यह सारी बातचीत लगातार चलती ही है। उन्होंने कल जिन वाक्यों का प्रयोग किया है, उससे सहज रूप से ही कोई अंदाज लगा सकता है कि उनके दिल में कश्मीर को लेकर किस प्रकार के भाव हैं। उन्होंने सीधी-सीधी बात कही है - "अटल जी ने कश्मीर की समस्या के समाधान के लिए जो मार्ग प्रशस्त किया है - इंसानियत, जम्हूरियत और कश्मीरियत, हम उसी मार्ग पर आगे बढ़ेंगे।" उन्होंने कहा, "जम्हूरियत का रास्ता बातचीत का रास्ता है, संवाद का रास्ता है, लोकतंत्र के उसूलों का रास्ता है। देश की आज़ादी के दीवानों ने जो ताकत हिन्दुस्तान को दी, वही ताकत कश्मीर को भी दी है। जो आज़ादी हिन्दुस्तान अनुभव करता है, वही आज़ादी कश्मीर को भी है। जिन नौजवानों-बच्चों के हाथों में क्रिकेट का बल्ला, वॉलीबॉल, किताब या लैपटॉप होना चाहिए, उन्हें पत्थर पकड़ा दिए गए हैं। मासूम युवाओं के हाथों में पत्थर देखकर बड़ी पीड़ा होती है। इससे कुछ लोगों की राजनीति जरूर चमक सकती है, लेकिन उन निर्दोष और भोले बच्चों का क्या होगा? कश्मीर के नौजवानों से मैं आग्रह करता हूँ कि आइए, मिल-जुलकर एक बार फिर कश्मीर को स्वर्ग बनाएँ।" इस प्रकार प्रधान मंत्री जी ने अपने भाव व्यक्त किए हैं।

डिप्टी चेयरमैन सर, बातें बहुत सारी हैं। यहाँ पर यह प्रश्न भी आया है कि इस संबंध में एक ऑल पार्टी मीटिंग होनी चाहिए। मैं सदन को यह जानकारी देना चाहता हूं कि हम लोगों ने यह तय किया है कि जब 12 तारीख को सदन का सत्र समाप्त होगा, तो 12 बजे के आस-पास ऑल पार्टी मीटिंग होगी, जिसमें प्रधान मंत्री जी स्वयं मौजूद रहेंगे। सर, मैं एक जानकारी यह भी देना चाहता हूं कि वहाँ पर लश्कर-ए-तैयबा के कुछ मिलिटैंट्स आकर, हमारे सरकारी अधिकारियों, हमारे सुरक्षाकर्मियों के परिवारों को भी इस समय धमकी देने का काम कर रहे हैं। जम्मू-कश्मीर की स्थिति इस समय यह भी है।

[श्री राजनाथ सिंह]

सर, चर्चा के दौरान unemployment को लेकर भी बात आई। मैं ऐसा नहीं मानता कि कश्मीर की जो समस्या है, वह unemployment के कारण ही इतनी गंभीर हुई है, इतनी क्रिटिकल हुई है, ऐसा नहीं है। देश के कई राज्यों में unemployment की प्रॉब्लम है। West Pak refugees की भी बात आई। West Pak refugees को तो proper citizenship मिलनी चाहिए, उनको जमीन खरीदने का अधिकार मिलना चाहिए, उनको नौकरी का अधिकार मिलना चाहिए। उनको कुछ नहीं मिला है, लेकिन वे शांतिपूर्वक बैठे हुए हैं। इसलिए मैं ऐसा नहीं मानता कि उसके कारण जम्मू-कश्मीर में ये संकट पैदा हुआ है।

डिप्टी चेयरमैन सर, मैं यह भी कहना चाहूंगा कि दो हफ्ते पहले पाकिस्तान के प्रधान मंत्री नवाज़ शरीफ साहब ने एक स्टेटमेंट दी। उन्होंने कहा कि उनको उस दिन का इंतजार है जब कश्मीर उनका होगा। मैं जान-बूझकर उस स्टेटमेंट का उल्लेख यहाँ पर कर रहा हूं। अभी मैं यह देख रहा था कि यूनाइटेड नेशंस के सेक्रेटरी जनरल को भी उन्होंने इधर एक पत्र लिखा है और कहा है कि कश्मीर के मुद्दे पर plebiscite होना चाहिए, जनमत संग्रह होना चाहिए।

सर, सदन में जो भी विचार हमने सुने हैं और उनकी feelings को हमने जो समझा है, उनकी भावनाओं को हमने जो समझा है और सभी के द्वारा जो ताकत मिली है, उस आधार पर मैं कह सकता हूं कि दुनिया की कोई ताकत हमसे जम्मू-कश्मीर को नहीं ले सकती है। जहाँ तक बातचीत का सवाल है, पाकिस्तान से बात होनी चाहिए। अब जब बात होगी तो कश्मीर पर बात नहीं होगी; डिप्टी चेयरमैन सर, पाक अधिकृत कश्मीर पर बात होगी। कश्मीर पर बात नहीं होगी, बात करने का कोई सवाल ही नहीं है। मैं कश्मीर के नौजवानों और वहां की जनता से भी एक अपील करना चाहता हूं। वहाँ पर कभी-कभी आईएसआईएस के झण्डे भी फहराए जाते हैं। वे कभी-कभी दिखाई देते हैं। सर, आईएसआईएस ने क्या किया है? उसने इस्लाम में यक़ीन करने वाले लोगों का ही सरेआम कत्ल किया है। इस हकीकत को भी हिन्दुस्तान को समझना चाहिए। हिन्दुस्तान दुनिया का इकलौता देश है, जहां पर चाहे हिन्दू हो, मुसलमान हो, सिख हो, ईसाई हो, पारसी हो, कोई हो, सबके जज्बात की, सबकी भावनाओं की इज्जत और कद्र करने वाली धरती यदि दुनिया में कोई है, तो उसका नाम है भारत।

मैं अपने कश्मीर के नौजवानों से कहना चाहता हूँ कि वे इस्लाम की हिस्ट्री को उठाकर देखें। इस्लाम कभी भी इस बात की इजाजत नहीं देता है कि किसी की गर्दन उतार दो, किसी की जिंदगी ले लो, किसी के दिल को चोट पहुंचाओ। ऐसे लोग जो झंडा फहराते हैं, मैं समझता हूं कि वे इस्लाम को बदनाम करने की कोशिश कर रहे हैं। नारा, "पाकिस्तान जिंदाबाद", डिप्टी चेयरमैन सर, मैं नहीं बोलना चाहता हूं, लेकिन मैं बोल रहा हूं कि भारत की धरती पर यह नहीं चलेगा।

डिप्टी चेयरमैन सर, कोई बोले कि हमारा हिन्दू धर्म बहुत अच्छा है, बेहतरीन है, इस्लाम धर्म बहुत अच्छा है, ईसाई धर्म बहुत अच्छा है, बेहतरीन है, बौद्ध धर्म बहुत अच्छा है, ये सारी चीज़ें हो सकती हैं, लेकिन कम से कम देश की धरती पर खड़े होकर देश के विरुद्ध नारेबाज़ी नहीं करनी चाहिए। इसलिए मैं कश्मीर के लोगों से भी विनम्रतापूर्वक अपील करना चाहता हूं कि जो ऐसा करने वाले हों, उन्हें ऐसी हरकत करने से रोकें। यह केवल हमारी भावना नहीं है। जो बातें संसद के सम्मानीय सदस्यों द्वारा कही गई हैं, उन्हीं की भावना के आधार पर मैं कश्मीर की जनता से यह अपील कर रहा हूं। मुझे और अधिक कुछ नहीं कहना है।

जहां तक ऑल पार्टी डेलिगेशन भेजने की बात है। मैं समझता हूं कि इसके बारे में हमारे आदरणीय डा. कर्ण सिंह जी ने भी सुझाव दिया है और सीताराम येचुरी जी भी कह रहे थे कि एक बार वहां पर ग्राउंड वर्क हो जाना चाहिए। हम देखते हैं, हम वहां के सी.एम. से भी बात करेंगे कि यदि कभी डेलिगेशन जाता है, तो वह किन-किन लोगों से मिलेगा, किन-किन के साथ उनकी बातचीत होगी। ग्राउंड वर्क के बारे मे हम उनके साथ बातचीत करेंगे।

डिप्टी चेयरमैन सर, वहां की सरकार ने भी काफी प्रभावी कदम उठाए हैं। वहां पर कुछ नौजवानों की नियुक्तियों का भी सिलसिला प्रारम्भ किया है। उन्होंने एसपीओज़ की भी 10,000 पोस्टें निकाली हैं। सेंट्रल गवर्नमेंट से भी हम लोगों ने जम्मू-कश्मीर में एक बटालियन सेंट्रल आर्म्स फोर्स की रिक्रूटमेंट के लिए आदेश पहले ही कर दिया है। नेशनल हाईवे डेवलपमेंट के प्रोजेक्ट भी काफी तेजी के साथ चल रहे हैं। वहां पर दो "एम्स" भी खोले गए हैं, आईआईएम खोला गया है और वहां के बच्चों को पहले जितनी स्कॉलरशिप मिलती थी, उससे ज्यादा स्कॉलरशिप मिल रही है। कश्मीर के बच्चों के संबंध में यह था कि देश के दूसरे भागों में जिन भी शिक्षा संस्थाओं में वे पढ़ रहे हैं, उनकी सिक्योरिटी का जहां तक सवाल है, उसके संबंध में, मैं सभी राज्यों के मुख्य मंत्रियों का स्वयं अपनी तरफ से पत्र लिखूंगा। जहां-जहां पर अधिक संख्या में कश्मीरी बच्चे पढ़ते हैं, वहां के लिए मैं कहूंगा कि कोई ऐसा सिस्टम बनाइए, ताकि कश्मीर से जाने वाले बच्चे और वहां के रहने वाले बच्चों के आपस में रिश्ते बेहतर हों और उनके अंदर भाईचारे का भाव पैदा हो। किसी माननीय सदस्य ने पूछा था कि कितने बच्चों को स्कॉलरशिप मिल रही है, तो उनकी संख्या 14,500 के आसपास है। घाटी के लगभग 1,400 स्टूडेंट्स को इंजीनियरिंग, नर्सिंग, मेडिकल, और होटल मैनेजमेंट में एडमिशन्स मिले हुए हैं। हर अच्छे कॉलेज में दो की जगह पर दस एडमिशन्स दिए गए हैं। पहले इंजीनियरिंग में केवल 250 एडमिशन्स हुए थे, अब वह संख्या बढ़कर 1,400 हो गई है। डिप्टी चेयरमैन सर, इतनी जानकारी देने के बाद मैं यही कहना चाहूंगा कि...

श्री गुलाम नबी आज़ाद: हमने भी दो सवाल पूछे थे, एक तो moderates के साथ talks के बारे में था और दूसरा कश्मीर में आर्मी के बारे में था।

[श्री गुलाम नबी आज़ाद]

† قائد حزب اختلاف (جناب غلام نبی آزاد) : ہم نے بھی دو سوال پوچھے تھے، ایک تو moderates کے ساتھ talks کے بارے میں تھا اور دوسرا کشمیر میں آرمی کے بارے میں تھا۔

श्री राजनाथ सिंहः जहां तक यह है कि valley में अमरनाथ यात्रा समाप्त होने के बाद कश्मीर आर्मी के हवाले कर दिया जाएगा, तो ऐसा कभी सोचा भी नहीं जा सकता। मैं समझता हूं कि जानबूझकर इस प्रकार की अफवाह फैलाई जा रही है। यह कभी सोचा ही नहीं जा सकता। ...(**व्यवधान**)... आज कल तो सोशल मीडिया है, उसमें क्या हो जाए, कहा नहीं जा सकता।

जहां तक बातचीत का सवाल है, तो आपने कहा है कि जो mainstream political parties हैं, moderates हैं और दूसरे organizations हैं, वे बातचीत करने के लिए तैयार हैं। मैं वहां की मुख्य मंत्री जी से भी कहूंगा। मैं उनसे कहूंगा कि किन-किन लोगों से बात करनी है, आप भी बात शुरू करिए। हम लोग भी बात करने के लिए तैयार हैं और हम सारे लोग मिलकर बात करने के लिए तैयार हैं, इसीलिए मैंने ऑल पार्टी डेलिगेशन की बात कही है। हम सबसे बातचीत करेंगे, इसमें कहीं कोई समस्या नहीं है।

डिप्टी चेयरमैन सर, आप से भी बात हुई थी, कुछ सम्मानित सदस्यों से भी बात हुई थी तथा जो हमारे different political parties के leaders हैं, उनसे भी बातचीत हुई थी। यह तय हुआ कि जम्मू और कश्मीर की जनता से अपील करते हुए यहां से एक प्रस्ताव भी होना चाहिए।

संकल्प

यह सभाः-

(i) कश्मीर घाटी में लम्बे समय से चली आ रही अशांति, हिंसा और कर्फ्यू की स्थिति के प्रति अपनी गंभीर चिंता व्यक्त करती है;

(ii) बिगड़ती हुई स्थिति के कारण होने वाली मौतों तथा घायल लोगों के प्रति गहरी संवेदना और चिंता व्यक्त करती है;

---

†Transliteration in Urdu script.

(iii) का दृढ़ और सुविचारित मत है कि जहां एक ओर राष्ट्रीय सुरक्षा से कोई समझौता नहीं किया जा सकता, वहीं दूसरी ओर यह भी अनिवार्य है कि सामान्य स्थिति और शांति बहाल करने के लिए तत्काल कदम उठाए जाएं, ताकि लोगों की वेदनाएं दूर की जा सकें;

(iv) जम्मू एवं कश्मीर में समाज के सभी वर्गों से पुरजोर अपील करती है कि वे तत्काल सामान्य स्थिति की बहाली और सौहार्द कायम करने के लिए कार्य करें; और

(v) सर्वसम्मति से लोगों, विशेषकर युवाओं में विश्वास पैदा करने का संकल्प लेती है।

यदि आप सभी सहमत हैं, तो।

SHRI SITARAM YECHURY: Just one thing. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The Resolution is already read. So, let me complete that process.

SHRI SITARAM YECHURY: No, no, before that process, I want to add to the Resolution.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Yes, yes. Okay. You can speak.

श्री सीताराम येचुरीः सर, मेरा आपसे एक ही आग्रह है कि हमने जो आपका Resolution पढ़ा है, हमें इसमें कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन हम चाहते हैं कि इसके अंत में एक बात जोड़ी जाए। मेरे पास अंग्रेज़ी की copy है, इसलिए मैं अंग्रेज़ी में ही पढ़ रहा हूं, "Unanimously resolves to restore the confidence among the people in general and youth in particular through a political process या dialogue" आप जो भी मानेंगे, 'through a dialogue or through a political process." जो आप इसके लिए मानेंगे। आपने अपनी बात कहते हुए यह स्पष्ट किया है ...(**व्यवधान**)... ताकि उसके अंदर स्पष्टता हो। बस यही बात कहनी है।

श्री राजनाथ सिंहः डिप्टी चेयरमैन साहब, सीताराम येचुरी जी सदन के सम्मानित और वरिष्ठ सदस्य हैं। मैं इतना आश्वस्त करना चाहता हूं कि जो मैंने बोला है, उसे भी आप Resolution का ही पार्ट मान लीजिए। मैंने जो बोला है, बहुत सोच-समझकर बोला है।

श्री सीताराम येचुरीः यानी जो मैं समझ रहा हूं, उसका मतलब यह है कि यह बातचीत की प्रोसेस वहां पर भी होगी और यहां पर भी होगा। हम यह प्रोसेस बातचीत में सबके साथ करेंगे।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: That is the assurance of the Minister. *...(Interruptions)...*

SHRI SITARAM YECHURY: He says that 'we will do this through the process of a dialogue.'

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Yes, yes. Therefore, may I take that this Resolution is unanimously adopted?

SOME HON. MEMBERS: Yes.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay. The Resolution is adopted unanimously.

RECOMMENDATIONS OF THE BUSINESS ADVISORY COMMITTEE

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I have to inform the House that the Business Advisory Committee at its meeting held on the 10th of August, 2016, has allocated time as follows for Government Legislative and other Business:-

	BUSINESS	TIME ALLOTTED
1.	Consideration and passing of the Maternity Benefit (Amendment Bill), 2016.	One-and-a-half hours
2.	Consideration and passing of the Following Bills, after they are passed by Lok Sabha:-	
	(a) The Factories (Amendment) Bill, 2016	Two hours
	(b) The Taxation Laws (Amendment) Bill, 2016	Two hours